'बुलबुल सीरीज़'—सख्या १२

पखवारा

लेखक—

श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा बी० ए०

प्रकाशक—

भीष्म एण्ड ब्रादर्स

पटकापुर, कानपुर

प्रथम सस्करण] अगस्त १६४५ [मूल्य—एक रुपए

दो शब्द

मैं कोई कहानी-लेखक नहीं हूँ। किन्तु कहानियाँ पढ़ता रहा हूँ। मुझे उपन्यासों की अपेक्षा छोटी कहानियों में अधिक मजा आता है, क्योंकि कहानियों में उपन्यासों की सी ठूसठास और भरमार नहीं रहती। वे केवल एक घटना विशेष को लक्ष्य करके लिखी जाती हैं। लेखक को जो कुछ कहना होता है वह उसी घटना के वर्णन में अपनी सारी योग्यता उड़ेल देता है। यदि उसे कोई चरित्र-चित्रण ही करना है, तो थोड़े शब्दों में वह सब कुछ कह डालता है और पात्र का चित्र सामने आ जाता है। कहानी लेखक के अनुभव-समूह में जो बात सबसे अधिक उसके हृदय पर प्रभाव डालती है, जिससे उसकी संवेदना पर सब से अधिक आघात होता है, वही उसकी कहानी का लक्ष्य बन जाता है।

पाश्चात्य साहित्य का हमारे ऊपर अधिक प्रभाव पड़ने के कारण हमारा अधिकांश गद्य साहित्य रूप, आकार, भाव आदि में पश्चिमी ढंग का हो गया है। सिद्ध-हस्त और साधारण कहानी लेखक—दोनों ही पर पाश्चात्य कलाकारों की छाप है। मैं दोनों में से एक भी नहीं। अतः मैंने गाई डी मोपासा, आस्कर वाइल्ड, आद्रे साशो और टैगोर की कहानियाँ पढ़कर यही निर्णय किया कि इन कलाकारों की कुछ कहानियाँ अनुवाद कर डालूँ। वे मुझ सरीखे अनेक लेखकों की मौलिक कृतियों से हजार गुना अच्छी होंगी। इन पन्द्रह कहानियों के सग्रह में से अधिकांश अनुवाद हैं। अनुवाद के लिए चुनाव करने का यश और अपयश मेरा है। कहानी की श्रेष्ठता का यश मूल लेखक का है। जो कुछ अच्छा-बुरा है आपकी भेंट है।

—नारायण

मुद्रकः—
श्री सत्यभक्त सतयुग प्रेस, बहादुरगंज इलाहाबाद।

कहानी लिखने और पढ़ने की शौक़ीन

अपनी कनिष्ठ पुत्री

सावित्री खन्ना

को

स्नेह-भेंट

—नारायण प्रसाद अरोड़ा

विषय-सूची

परखवारा

—:o:—

सेमोरिस

"वही है वही। वह अपनी उस पुत्री का शोक कर रही है जिसे स्वयं उसने ही मार डाला है।"

"क्या? जरा मुझे यह हाल तो बतलाओ।"

"अरे यार! वह तो एक सीधी-सादी कहानी है। उसमे कोई न गुल-गपाड़ा है और न कोई मार-धाड़। मेडम सेमोरिस—"

"क्या वह औरत जो सामने काले कपड़े पहने खड़ी है? अच्छा! उसके बारे मे क्या मामला है?"

"अजी कुछ भी मामला नहीं है। कुछ स्त्रियाँ भली पैदा होती है और कुछ बुरी। क्यों है न यह बात ठीक? हाँ, मैडम सेमोरिस दूसरी श्रेणी मे उत्पन्न हुई है। इसके एक पुत्री थी, जो पहली श्रेणी में पैदा हुई थी। बस, यही बात है।"

"मित्र! मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हारी बात को अच्छी तरह नहीं समझा।"

"मै अपना अभिप्राय साफ-साफ प्रकट करने का प्रयत्न करूँगा। अच्छा, सेमोरिस उन धूमधामी विदेशियों मे से एक है, जो सैकड़ों की सख्या मे पेरिस मे हर साल टपका करते है। वह या तो हंगरी की या और कहीं की है। शरद्-ऋतु मे एक दिन 'चेम्प इलीसिस' नामक स्थान पर एक कमरे मे वह दिखाई दी। यह स्थान जान पर खेलनेवाले साहसी लोगों का अड्डा था। उसका दरबार सबके लिए खुला था। जिसकी इच्छा हो चला जाय।

"मैं वहाँ गया ! तुम पूछोगे, क्यों ? न मालूम क्यों ? मै वहाँ वैसे ही चला गया जैसे हम सब जाया करते हैं, क्योंकि वहाँ जुआ होता था। वहाँ की औरते हँसमुख और खुशदिल होती है और पुरुष सभ्यता से परे। इस प्रकार के ठाठ-बाटवाले सामाजिक ससार को तुम जानते हो। सबसे सब नवाब होते है और सभी कोई न कोई उपाधि अवश्य रखते है। विदेशी दूतावास के लोगों को इनका पता नहीं होता। हाँ खुफिया के जासूस इन्हें अवश्य जानते है। सब अपनी इज्ज़त और बुजुर्गों का घमण्ड करते हैं। सब डींगियल, झूठे, चपट, भयङ्कर और साहसी होते हैं। जिस प्रकार उनके नाम बनावटी होते हैं, उसी प्रकार वे धोखेबाज भी होते है। साराश यह कि वे लोग फॉसीवर के रईस होते है।

"इस प्रकार के लोगों को मै पसन्द करता हूँ। उन्हें देखने मे और उनका हाल जानने मे आनन्द आता है। उनकी बातचीत सुनकर प्रसन्नता होती है। वे बहुधा बड़े हँसोड होते हैं और सरकारी अफसरों की तरह वे मामूली आदमी तो होते ही नहीं। उनकी स्त्रियाँ सदा सुन्दर होती है। हाँ यह बात जरूर है कि उनमें विदेशियों की सी बदमाशी का थोड़ा सा पुट अवश्य होता है, जिससे मालूम होता है कि उनका जीवन रहस्यमय है। और शायद उनमे से कुछ के जीवन का आधा भाग किसी सुधार-गृह अर्थात् जेल मे बीता होगा। साधारणतया उनकी आँखे बड़ी सुन्दर और बाल बड़े बढिया होते हैं। मै तो उन्हें प्यार भी करता हूँ।

"मैडम सेमोरिस इस प्रकार की साहसी स्त्रियों का नमूना है। शौकीन, प्रौढ़, तो भी सुन्दर और आकर्षक। परन्तु बिल्ली की तरह सिर से पाँव तक शरारत से भरी हुई। उसके घर पर हर तरह के भोग-विलास की सामग्री मिलती है, जैसे, जुआ, नाच, भोजन, शराब आदि। अर्थात् जिन वस्तुओं से भोग-विलास के जीवन मे आनन्द आता है वे सब वहाँ मौजूद रहती हैं।

"उसके एक लड़की थी। वह कद में ऊँची और शानदार थी। सदा प्रसन्न रहती थी। खेलकूद के लिए हर वक्त तैयार और हर समय दिल खोल कर हँसनेवाली थी। नाचने मे तो वह कमाल ही करती थी। एक साहसी स्त्री

की आदर्श पुत्री थी। तो भी वह बिलकुल भोली-भाली, अज्ञ और सीधी-सादी थी। वह न तो कोई चीज देखती थी और न कुछ जानती थी। जो कुछ उसके घर में होता था उसे न तो समझने की कोशिश ही करती थी और न उसके समझने के लिए अन्दाज ही लगाती थी—"

"तुम इन सब बातों को कैसे जानते हो?"

"मैं यह सब कैसे जानता हूँ? यही तो इस मामले की विचित्र बात है। एक रोज सवेरे मेरे यहाँ आकर किसी ने घंटी बजाई और मेरे नौकर ने आकर मुझे सूचना दी कि 'मोशिये जोजफ बोनेन्ट' मिलना चाहते हैं।

"मैंने पूछा कि ये भलेमानस कौन हैं?"

"मेरे आदमी ने उत्तर दिया कि 'जनाब, मैं नहीं जानता, शायद कोई नौकर है।"

"वास्तव में बात यही थी कि वह एक नौकर था, जो मेरे घर में नौकरी के लिए भर्ती होना चाहता था। मैंने पूछा कि तुम कहाँ से नौकरी छोड़कर आ रहे हो? उसने कहा मैडम सेमोरिस के यहाँ से। मैंने कहा, किन्तु मेरा घर उसके घर से बिलकुल नहीं मिलता। उसने कहा, जनाब! मैं यह जानता हूँ और यही कारण है कि मैं आपके घर में नौकरी करके प्रवेश करना चाहता हूँ। उस प्रकार के लोग थोड़े समय के लिए तो बड़े अच्छे होते हैं, परन्तु बहुत समय के लिए नहीं। मुझे एक आदमी की जरूरत भी थी, इसलिए मैंने उसे नौकर रख लिया।

"एक महीने के पश्चात् छोटी 'सेमोरिस' एकाएक मर गई। इस रहस्य-पूर्ण मृत्यु का ब्योरेवार हाल नीचे लिखे अनुसार है जैसा कि मुझसे 'जोज़फ' ने बयान किया है। और इस वृत्तान्त को जोजफ ने मैडम सेमोरिस की नोकरानी से जो उसकी मित्र थी, प्राप्त किया था।

"एक रात्रि को नाच में दरवाजे के पीछे खड़े हुए दो नये आये हुए आदमी बातें कर रहे थे। कुमारी वेलाइन जो अभी नाचकर आई थी, दरवाजे की टेक लगाये हुए इसलिए खडी थी कि थोडी सी ताजी हवा मिल जाय।

उन दोनों आगन्तुकों ने उसे नहीं देखा था। किन्तु उसने उनकी बातें सुन लीं। वे कह रहे थे—

"'"किन्तु इस युवती का पिता कौन है?"

"'"कोई रूसी है, जिसका नाम 'काउन्ट रोबल्फ' है। अब वह इसकी माँ के पास कभी नहीं आता।"

"'"आज-कल वह किस पर मुग्ध है?"

"'"उस अंगरेज राजकुमार पर जो सामने खिड़की के पास खड़ा हुआ है। मैडम 'सेमोरिस' उस पर मरती है। किन्तु उसका मुग्ध होना महीना, डेढ़ महीना से ज्यादा नहीं चलता। तुम देख सकते हो कि उसके मित्रों की संख्या अगणित है। सब बुलाये जाते है—और करीब-करीब सब चुन लिये जाते है। शायद कुछ खर्च ज्यादा पड़े, किन्तु—छिः"

" 'उसे यह 'सेमोरिस' नाम कहाँ से मिला?"

' "शायद उसे यह नाम उस एकमात्र पुरुष से मिला है जिसे वह वास्तव मे प्यार करती थी। वह बर्लिन का एक यहूदी महाजन था और उसका नाम 'सेम्युअल मोरिस' था।"

' "बहुत अच्छे! धन्यवाद। अब मुझे सूचना मिल गई। मुझे अपना मार्ग भी मालूम हो गया। मैं सीधा जाऊँगा।"

"इस युवती के मन मे न जाने कैसा एक तूफान-सा उठा, क्योंकि उसमे एक साधु की स्त्री की सी प्रवृत्तियाँ मौजूद थीं। उस बेचारी की सीधी-सादी आत्मा मे निराशा की कैसी ठेस लगी होगी। उसके प्रफुल्लित रहने वाले जीवन, उसके आकर्षक हास्य और सदा आनन्दित रहने वाले मन को इन शोकजनक बातों ने एक प्रकार से बुझा सा दिया होगा। जब तक सब मेहमान चले न गये होंगे तब तक उसके कोमल हृदय मे एक प्रकार का युद्ध सा होता रहा होगा।

"उस रात को वेलाइन बड़ी तेजी से अपनी माता के कमरे मे गई। और दरवाजे के पीछे जो नौकरानी खड़ी थी उसे बाहर भेज दिया। उसका

रंग बिलकुल पीला पड़ गया था, वह कॉप भी रही थी और उसकी आँखों से ज्योति निकल रही थी। उसने कहा—

' "मा ! मैने ये सब बातें बरामदे में सुनी है।

"इतना कहकर उसने वह सब बात-चीत अक्षरशः बयान कर दी, जो मैने अभी तुमसे कही है।

"पहले तो मैडम बौखला गई और उसकी समझ मे ही न आया कि क्या जवाब दे। किन्तु फिर उसने बड़े जोश से कहा कि सब बात झूठ है। यह कहानी निरी गढन्त है। मैं यह सब शपथ पूर्वक कह रही हूँ।

"युवती निराश होकर चली गई, किन्तु उसे विश्वास नहीं हुआ। इसके पश्चात् वह अपनी माता से कार्यों की ताक झॉक रखने लगी।

"मुझे अच्छी तरह से याद है कि उसके ऊपर क्या बीती। वह सदा गम्भीर और कुम्हलाई हुई सी रहने लगी। वह हम लोगों पर अपनी बड़ी-बड़ी आँखे गड़ाकर देखा करती थी, मानो जो कुछ हमारी अन्तरात्मा मे था उसे वह जानना चाहती थी। हमारी समझ मे कोई विचार ही नहीं आता था। और यह कहा जाता था कि वह एक पति की खोज मे है, चाहे पति थोड़े दिन के लिये मिले या सदा के लिए।

"एक रात्रि को उसने अपनी माता को अचानक घेर लिया और अब उसे किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं रहा। बड़ी शुष्कता के साथ, एक व्यापारी की तरह उसने अपनी माता के सामने ये शर्तें पेश कीं—

' "मा, मैंने यह निश्चय किया है कि हम दोनों या तो किसी गॉव में जाकर बसें या किसी छोटे कस्बे में। वहाँ हम लोग यथाशक्ति चुपचाप जीवन व्यतीत करेंगे। अगर आपको विवाह करने के लिए कोई भला आदमी मिल जाय तो बड़ी अच्छी बात है। यह और भी अच्छा होगा, अगर मैं भी विवाह कर लूँ। अगर आप इन बातों को स्वीकार नही करेंगी तो मै अपनी हत्या कर लूँगी।'

' इस बार मैडम ने अपनी पुत्री से कहा कि जाओ, सो रहो, और अब फिर कभी इस विषय की चर्चा मत करना।

उन दोनों आगन्तुकों ने उसे नहीं देखा था। किन्तु उसने उनकी बातें सुन लीं। वे कह रहे थे—

"'किन्तु इस युवती का पिता कौन है?"

"'कोई रूसी है, जिसका नाम 'काउन्ट रोबल्फ' है। अब वह इसकी माँ के पास कभी नहीं आता।"

"'आज-कल वह किस पर मुग्ध है?"

"'उस अगरेज राजकुमार पर जो सामने खिड़की के पास खड़ा हुआ है। मैडम 'सेमोरिस' उस पर मरती है। किन्तु उसका मुग्ध होना महीना, डेढ़ महीना से ज़्यादा नहीं चलता। तुम देख सकते हो कि उसके मित्रों की सख्या अगणित है। सब बुलाये जाते हैं—और करीब-करीब सब चुन लिये जाते है। शायद कुछ खर्च ज्यादा पड़े, किन्तु—छि."

" 'उसे यह 'सेमोरिस' नाम कहाँ से मिला?"

' "शायद उसे यह नाम उस एकमात्र पुरुष से मिला है जिसे वह वास्तव मे प्यार करती थी। वह बर्लिन का एक यहूदी महाजन था और उसका नाम 'सेम्युअल मोरिस' था।"

' "बहुत अच्छे! धन्यवाद। अब मुझे सूचना मिल गई। मुझे अपना मार्ग भी मालूम हो गया। मैं सीधा जाऊँगा।"

"इस युवती के मन मे न जाने कैसा एक तूफान-सा उठा, क्योंकि उसमे एक साधु की स्त्री की सी प्रवृत्तियाँ मौजूद थीं। उस बेचारी की सीधी-सादी आत्मा मे निराशा की कैसी ठेस लगी होगी। उसके प्रफुल्लित रहने वाले जीवन, उसके आकर्षक हास्य और सदा आनन्दित रहने वाले मन को इन शोकजनक बातों ने एक प्रकार से बुझा सा दिया होगा। जब तक सब मेहमान चले न गये होंगे तब तक उसके कोमल हृदय मे एक प्रकार का युद्ध सा होता रहा होगा।

"उस रात को वेलाइन बड़ी तेजी से अपनी माता के कमरे मे गई। और दरवाजे के पीछे जो नौकरानी खड़ी थी उसे बाहर भेज दिया। उसका

रंग बिलकुल पीला पड़ गया था, वह काँप भी रही थी और उसकी आँखों से ज्योति निकल रही थी। उसने कहा—

'"मा! मैंने ये सब बातें बरामदे में सुनी है।

"इतना कहकर उसने वह सब बात-चीत अक्षरशः बयान कर दी, जो मैंने अभी तुमसे कही हैं।

"पहले तो मैडम बौखला गई और उसकी समझ मे ही न आया कि क्या जवाब दे। किन्तु फिर उसने बड़े जोश से कहा कि सब बात झूठ है। यह कहानी निरी गढन्त है। मैं यह सब शपथ पूर्वक कह रही हूँ।

"युवती निराश होकर चली गई, किन्तु उसे विश्वास नहीं हुआ। इसके पश्चात् वह अपनी माता से कार्यों की ताक-झाँक रखने लगी।

"मुझे अच्छी तरह से याद है कि उसके ऊपर क्या बीती। वह सदा गम्भीर और कुम्हलाई हुई सी रहने लगी। वह हम लोगों पर अपनी बड़ी-बड़ी आँखें गड़ाकर देखा करती थी, मानो जो कुछ हमारी अन्तरात्मा में था उसे वह जानना चाहती थी। हमारी समझ मे कोई विचार ही नहीं आता था। और यह कहा जाता था कि वह एक पति की खोज मे है, चाहे पति थोड़े दिन के लिये मिले या सदा के लिए।

"एक रात्रि को उसने अपनी माता को अचानक घेर लिया और अब उसे किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं रहा। बड़ी शुष्कता के साथ, एक व्यापारी की तरह उसने अपनी माता के सामने ये शर्तें पेश कीं—

'"मा, मैंने यह निश्चय किया है कि हम दोनों या तो किसी गाँव में जाकर बसें या किसी छोटे कस्बे में। वहाँ हम लोग यथाशक्ति चुपचाप जीवन व्यतीत करेंगे। अगर आपको विवाह करने के लिए कोई भला आदमी मिल जाय तो बड़ी अच्छी बात है। यह और भी अच्छा होगा, अगर मैं भी विवाह कर लूँ। अगर आप इन बातों को स्वीकार नहीं करेंगी तो मै अपनी हत्या कर लूँगी।'

'इस बार मैडम ने अपनी पुत्री से कहा कि जाओ, सो रहो, और अब फिर कभी इस विषय की चर्चा मत करना।

"वेलाइन ने जवाब दिया कि मै आपको एक मास का अवसर देती हूँ, जिसमे आप अच्छी तरह से सोच लीजिए। यदि इस बीच में आप अपना रहन-सहन नहीं बदलतीं तो मैं आत्म-हत्या कर लूँगी, क्योंकि इसके सिवा मेरे जीवन के लिए कोई सम्मानपूर्वक मार्ग ही नहीं है।' इतना कह कर वह कमरे से चली गई।

'एक मास के पश्चात् भी लोग सेमोरिस-भवन मे जुआ खेलते थे, नाचते थे और शराब पीते थे।

"वेलाइन ने बहाना किया कि उसके दाँत मे दर्द है, और डाक्टर के यहा से 'क्लोरोफार्म' मँगाया। दूसरे दिन भी उसने ऐसा ही किया। रोज जब वह बाहर जाती तब एक-दो खुराक क्लारोफार्म ले आती। इस प्रकार उसने एक बोतल भर ली।

"एक दिन प्रातःकाल वह अपने बिछौने पर मुँह ढँके हुए मरी हुई पायी गई

उसके शव पर फूल चढाये गये। गिरजे मे प्रार्थना हुई और अर्थी के साथ काफी भीड गई।"

"ओफ! अगर मै जानता होता—किन्तु कोई कह नही सकता तो शायद मै स्वय उस युवती से विवाह कर लेता। वह सचमुच सुन्दर थी।'

"और उसकी मा का क्या हुआ?"

"ओह! वह रोई तो खूब। परन्तु एक सप्ताह के पश्चात् वह फिर अपने इष्ट-मित्रों से मिलने-जुलने लगी।"

'अच्छा, उसकी मृत्यु का क्या भेद प्रकट किया गया?"

"प्रत्यक्ष रूप से कहा तो यह गया कि एक 'स्टोव' था, वह फट गया और उसी मे मृत्यु हो गई। इन वस्तुओं से बहुधा ऐसी घटनाये हो जाती है। और इसमे कोई असम्भव बात भी न थी?"

एक विचित्र बिक्री

'ब्रूमेंट' और 'कानूं' प्रतिवादी के रूप मे अदालत के सामने हाजिर हुए। इन पर जुर्म यह लगाया गया था कि इन्होंने श्रीमती ब्रूमेट को पानी में डुबोकर मार डालने का प्रयत्न किया था। श्रीमती जी प्रतिवादी नम्बर एक की विवाहिता और कानूनी स्त्री थीं।

दोनों कैदी अदालत में पास-पास बैठे थे। दोनों किसान थे। पहला नाटा और बलिष्ठ था उसके हाथ पैर छोटे छोटे थे, सिर गोल था, चेहरा भरा हुआ और लाल-लाल था। मालूम देता था कि धड़ के ऊपर सिर सीधा चिपका दिया गया है। धड़ भी गोल-मोल और छोटा-सा था। गर्दन तो बिलकुल दिखाई ही नही देती थी। वह सुअर पालता था और श्रीकेटार्ट जिले के मोमिल नामक गॉव में रहता था।

कानूं दुबला पतला और ऊँचाई मे मध्यम श्रेणी का था। किन्तु उसके हाथ बहुत लम्बे थे। उसका सिर कुछ तिरछा-सा, मुँह कुछ बिगडा हुआ, और आँखें टेढी-मेढी थी। नीले रग का एक झबला उसके घुटनो तक लटक रहा था। उसके बाल कुछ कुछ नीले और छिरें थे, और मालूम देता था, मानो सिर पर चिपके हुये है। देखने मे वह कुछ थका हुआ, मैला-कुचैला और परेशान सा मालूम देता था। इन सब बातों ने उसकी आकृति एक प्रकार से डरावनी बनाई थी। गॉववाले उसे नकलू के नाम से पुकारा करते थे, क्योंकि वह गिरजाघर की प्रार्थना की नकल बड़ी अच्छी तरह करता था और सॉप की बोली भी बोल लेता था। उसने एक छोटा-सा होटल खोल रक्खा था। प्रार्थना की नकल और सॉप की बोली सुनकर ग्राहक अक्सर उसके होटल मे चले आया करते थे। उसके कुछ ग्राहक तो गिरजाघर की असली प्रार्थना से कानू की प्रार्थना को अधिक पसन्द करते थे।

श्रीमती ब्रूमेट गवाहों के बेंच पर बैठी हुई थीं। वे एक दुबली-पतली किसान महिला थी। मालूम देता था कि सदा कुछ न कुछ सोचा ही करती है। वे ऐसे बैठी हुई थीं कि इधर-उधर जरा भी हिलती डुलती न थीं। वे सामने की तरफ एकटक देख रही थीं और उनके मुँह के भाव से मूर्खता प्रकट होती थी।

जज साहब प्रश्न पूछ रहे थे।

"अच्छा, श्रीमती जी! ये लोग आपके मकान में आये और इन्होंने आपको पानी से भरे हुए एक पीपे मे डाल दिया। आप खड़ी हो जायँ और सब हाल साफ-साफ बतलावें।"

वे खड़ी हो गईं और बाँस की तरह लम्बी मालूम देने लगीं। उनकी टोपी भी बड़ी ही विचित्र थी। उन्होंने भर्राती हुई आवाज से कहना आरम्भ किया :—

"मै घर का काम-काज कर रही थी कि ये लोग भीतर आये। मैंने अपने मन में कहा कि इन लोगों की क्या इच्छा है। इनका रंग-ढंग स्वाभाविक नहीं था। मालूम देता था कि ये कुछ शरारत करना चाहते है। इन्होंने मुझे तिर्छी निगाह से देखा, (इस भाव को मिसेज ब्रूमेट ने अपनी आँखें मटका कर प्रकट किया) इस तरह, खास कर कार्नू ने, क्योंकि वह ऐंचा ताना है। मुझे उन दोनों का एक साथ इकट्ठा रहना नहीं सुहाता। जब ये दोनो एक साथ हो जाते हैं तब बिलकुल निकम्मे आदमी बन जाते है। मैंने इनसे पूछा कि तुम मुझसे क्या चाहते हो? इन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया। मुझे एक प्रकार का अविश्वास होने लगा—"

ब्रूमेट नामक मुद्दाअलेह बीच मे तेजी से बोल उठा—मैं उस समय मजे में था।

इतनी बात सुन कर 'कार्नू' अपने साथी की ओर देख कर भोंपू की-सी आवाज से कहने लगा—हम दोनों ही मजे मे थे। देखो भाई, झूठ न बोलना।

जज ने गुस्सा होकर पूछा—क्यों जी क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुम दोनों नशे में थे ?

ब्रूमेंट—इसमें तो शका करने की कोई बात ही नही है।

कार्नू—हर एक की ऐसी अवस्था हो सकती है।

जज ने श्रीमती ब्रूमेट से कहा—तुम अपना बयान जारी रक्खो।

वह बोली—"फिर 'ब्रूमेंट' ने मुझसे कहा कि क्या तुम सौ रुपये कमाना चाहती हो ? मैने कहा, 'हॉ', क्योंकि मै जानती थी कि सौ रुपये राह में पड़े हुए नही मिल जाते। तब उसने मुझसे कहा कि अपनी आँखें खोलो और जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो। वह गया, और कोने मे जो खाली पीपा मेंह के पानी के लिये रक्खा रहता था, उसे उठा लाया। उसने उसे उलट दिया और मेरे रसोईघर मे गया और बीचोबीच मे उसे जमा दिया। और मुझसे कहने लगा कि 'जाओ, पानी लाकर इसे पूरा-पूरा भर दो।'

"मैं दो घड़े लेकर पास के तालाब में गई और वहाँ से पानी लाकर उस पीपे को भरने लगी। हुजूर, पीपा बहुत बड़ा था इस लिए उसको पूरा भरने में मुझे एक घटा लग गया।

"इस सारे समय मे ब्रूमेट और कार्नू गिलास पर गिलास जमाते गये। ये लोग अपनी बोतल करीब-करीब खाली कर चुके थे, उस समय मैंने इनसे कहा कि तुम लोग तो मेरे पीपे से भी ज्यादा भरे हुए मालूम देते हो। ब्रूमेंट ने मुझसे जवाब मे कहा कि 'तुम इस बात की परवा मत करो, तुम अपना काम किये जाओ। तुम्हारा भी वक्त आवेगा, हर एक काम बॅटा हुआ है।' वह पिये हुए था इसलिए मैंने उसकी बात पर अधिक ध्यान नही दिया। जब पीपा लबालब भर गया तब मैने उनसे कहा, 'यह लो, काम हो गया।'

"और तब कार्नू—ब्रूमेंट नहीं, कार्नू ने मुझे सौ रुपये दिये और ब्रूमेट ने कहा, 'क्या तुम और सौ रुपये कमाना चाहती हो ?' मैने कहा, 'हॉ,' क्योंकि मैं इस तरह मुफ्त में रुपया पाने की अभ्यस्त न थी। तब उसने मुझसे कहा, 'अपने कपड़े उतार डालो।'

मैंने कहा, 'अपने कपड़े उतार डालूँ ?' उसने कहा 'हाँ।' मैंने फिर कहा, 'मै कितने कपडे उतार डालूँ ।' उसने कहा, 'अगर तुम्हें अधिक परेशानी हो तो अपनी चोली पहने रहो, उससे हमारा कोई हर्ज न होगा।'

"सौ रुपये एक अच्छी रकम थी और मुझे सिर्फ कपडे उतारना था। फिर इन दो बेवकूफों के सामने कपडे उतारने मे मुझे कोई हर्ज़ भी नही मालूम हुआ। बस, मैंने पहले अपनी टोपी उतारी, फिर अपना जाकेट उतारा, और फिर अपना लँहगा आदि। इतने मे ब्रूमेट ने कहा 'अपने मोजे भी पहने रहो, हम लोग भले आदमी हैं।' और कार्नू ने भी कहा कि हम भले आदमी हैं।'

"बस मै करीब करीब 'हौआ' माता की तरह हो गई और ये लोग अपनी कुर्सियों पर से उठे, किन्तु वे सीधे खड़े न हो सके, क्योंकि वे .खूब पिये हुए थे।

"मैने अपने मन मे कहा कि इन लोगो की इच्छा क्या है? इतने मे ब्रूमेट ने कहा, 'क्या तुम तैयार हो?' और कार्नू ने कहा, 'मै तैयार हूँ।' फिर इन दोनों ने मुझे उठा लिया, ब्रूमेट ने मेरा सिर पकडा और कार्नू ने पैर। इन्होंने मुझे ऐसे उठाया जैसे कोई लकड़ी के एक तख्ते को उठाता हो। इस पर मै चिल्लाने लगी। तब ब्रूमेट ने कहा 'अरी कम्बख्त! सीधी रह।' और इन्होने मुझे ऊपर हवा मे उठा लिया और जो पीपा पानी से भरा था उस मुझे रख दिया। इससे मेरे .खून का दौरा बन्द हो गया और मैं ठड के मा ऐंठ गई। और ब्रूमेट ने कहा 'क्यों, बस हो गया न?' कार्नू ने कहा, 'बस ठीक है।' ब्रूमेट ने कहा, 'सिर भीतर नहीं गया है, इससे नाप मे कुछ अन्तर होगा।' कार्नू ने कहा, 'उसका सिर भीतर कर दो।' और तब ब्रूमेट ने मेरा सिर भीतर घुसेड़ दिया, मानो मुझे डुबो देगा। इससे मेरी नाक में पानी घुस गया और मुझे स्वर्ग दिखाई देने लगा। वह मेरा सिर जरा और भीतर को दबाकर गायब हो गया।

"और तब वह जरूर घबराया होगा। उसने मुझे बाहर निकाल लिया और कहा, 'ऐ मुर्दा! जा, अपने आपको सुखा ले।' बस मेरा हाल न पूछो। मैं तो अपनी जान लेकर भागी और 'मिलीकूटी' के पास पहुँची। उसने मुझे

अपनी नौकरानी का एक लहँगा दिया, क्योंकि मैं उस समय क़रीब-क़रीब प्राकृतिक अवस्था में थी और वह जाकर गाँव के चौकीदार, 'मैतरीत्रिकोट' को बुला लाया। चौकीदार जाकर 'क्रकेटाट' से मेरे घर पर पुलिस को ले आया।

"इतनी ही देर में हमने ब्रूमेट और कानूं को दो मेढों की तरह लड़ते हुए पाया। ब्रूमेट ने गुर्रा कर कहा—यह बात सच नहीं है। मैं तुमसे कहता हूँ कि उसमें कम से कम एक 'घनमीटर' (एक मीटर ३९½ इञ्च के बराबर होता है) अवश्य है। यह तरीक़ा ही बिलकुल रद्दी था। कानूं ने गुर्रा कर जवाब दिया—चार घड़े और सही, यह तो करीब-करीब आधे 'घनमीटर' के बराबर हो गया। अब जवाब मत दो। बस, मामला ख़त्म हो गया।

"पुलिस कप्तान ने दोनों को पकड़ लिया"

इतना कह कर श्रीमती ब्रूमेंट ने कहा कि अब मुझे और कुछ नहीं कहना है। वह बैठ गई। अदालत मे जितने लोग उपस्थित थे, ख़ूब हँसे। जूरी के सदस्यों ने एक दूसरे को बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखा। जज ने कहा—ऐ कानूं मुद्दाअलेह, मालूम देता है, तुम्हीं इस भयकर षड्यन्त्र के कर्त्ता-धर्त्ता हो। तुम्हे क्या कहना है ?

अब कानूं की बारी आई। वह खड़ा हुआ और बोला—"जज साहब, मैं तो बिलकुल मस्त था।" जज साहब ने गम्भीरता से कहा—'मैं इस बात को जानता हूँ। आगे बढो।"

कानूं ने उत्तर दिया—"मैं आगे बढता हूँ। अच्छा, ब्रूमेंट करीब नौ बजे के मेरे स्थान पर आया और दो प्याले शराब के मँगाये और कहने लगा कि 'कानूं! यह लो एक तुम्हारे लिये है।' मैं उसके सामने बैठ गया और पी गया। सभ्यता का विचार करके मैंने भी उसे एक प्याला भेंट किया। तब उसने मेरी सभ्यता के बदले मे मुझे एक प्याला और भेंट किया। मैंने भी फिर बदला चुकाया। इस प्रकार दोपहर तक दौर पर दौर चलता रहा यहाँ तक कि हम लोग ख़ूब मस्त हो गये।

"तब ब्रूमेंट चिल्लाने लगा। इससे मेरे दिल पर असर हुआ। मैंने उससे पूछा कि क्या मामला है ? उसने कहा कि 'बृहस्पति तक मुझे एक

हज़ार रुपयें मिल जाना चाहिये।' इससे मेरा नशा काफूर हो चला। आप समझे? तब उसने मुझसे एकदम कहा कि 'मैं अपनी स्त्री तुम्हारे हाथ बेच दूँगा।'

"मैं बिलकुल नशे में था और साथ ही साथ एक रँडुआ भी था। इससे मेरे मन में कुछ उमग भी पैदा हुई। आप समझे? मैंने उसकी स्त्री को देखा नहीं था, किन्तु वह थी तो एक स्त्री ही। क्यों, क्या वह स्त्री नहीं थी? मैंने उससे पूछा, 'तुम अपनी स्त्री को कितने मे बेचोगे?'

"वह सोचने लगा अथवा सोचने का बहाना करने लगा। जब कोई आदमी नशे मे होता है तब उसका दिमाग सुलझा हुआ नहीं रहता। उसने जवाब दिया कि मैं अपनी स्त्री को "घनमीटर" के हिसाब से बेचूँगा।

"इससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि मैं भी उतना ही नशे में चूर था जितना कि वह; और अपने रोजगार के कारण मैं जानता था कि 'घनमीटर' का क्या मतलब है। यानी वह एक हजार लिटर'* का होता है। यह मेरे मन के मुआफिक था।

"किन्तु दाम तय होना बाकी रह गया। सब कुछ माल की विशेषता पर निर्भर था। मैंने कहा कि 'एक 'घनमीटर' के लिये तुम क्या माँगते हो?' उसने जवाब दिया कि 'दो हजार रुपया।'

"मैं राजी तो हो गया। परन्तु मैंने सोचा कि एक स्त्री को ३०० लिटर से ज्यादा न होना चाहिए। इसलिए मैंने कहा कि, सौदा बहुत महँगा है। उसने जवाब दिया कि, मैं इसे कम नही स्वीकार कर सकता। कम मे मुझे नुकसान होगा।

"आप समझते हैं कि जो सुअर का रोजगार करता है वह निरा मूर्ख ही नहीं होता। जो आदमी रोजगार करता है वह अपने व्यवसाय को समझता है। अगर कोई सुअर का गोश्त बेचने वाला होशियार हो सकता है तो मैं उससे ज्यादा होशियार हूँ, क्योंकि मैं सुअरों को भी बेचता हूँ। हहहहहा!

* 'लिटर' फ्रांस की एक माप है जो तरल और ठोस दोनों प्रकार के पदार्थों के नापने मे काम आती है। लगभग साढ़े चार 'लिटर' का एक 'गैलन' होता है।

इसलिए मैने उसी से कहा कि अगर वह नई होती तो मै कुछ न कहता, किन्तु तुम्हारे साथ उसका विवाह हुए बहुत दिन हो गये इसीलिये वह इतनी नई नहीं है जितनी कि वह किसी समय थी। मै तुम्हें पन्द्रह सौ रुपया एक घन-मीटर का दूँगा और एक पाई भी अधिक न दूँगा। क्या तुम इस पर राजी हो? उसने कहा, 'इससे काम चल जायगा। चलो सौदा पक्का हो गया।'

"मै राजी होगया और हम लोग हाथ मे हाथ डाल कर रवाना हुए। इस ससार में हमें एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। किन्तु मुझे एक डर मालूम हुआ। मैने कहा कि जब तक तुम उसे पानी मे न रक्खो तब तक तुम उसे नाप कैसे सकते हो? तब उसने अपना विचार प्रकट किया, किन्तु बड़ी मुश्किल से, क्योंकि वह नशे मे चूर था। उसने मुझसे कहा कि मै एक पीपा ले लूँगा और उस पीपे को ऊपर तक पानी से भर दूँगा और उसमे स्त्री को रख दूँगा। जितना पानी उसमे से निकल आयेगा उसे हम नाप लेगे। बस इस प्रकार मामला तय हो जायगा। मैंने कहा, ठीक है, मै समझ गया। किन्तु जो पानी उसमें से निकलेगा वह तो बह जायगा। उसे तुम इकट्ठा कैसे करोगे? इस पर वह मेरे दिमाग मे भरने लगा और समझाने लगा कि ज्योंही मेरी स्त्री चली जायगी, त्योंही हम उस पीपे में उतना पानी फिर भर देंगे जितना मेरी स्त्री के उसमे बैठने से फैल गया होगा। जितना पानी हम उसमे डालेंगे वह नाप लिया जायगा। मै समझता हूँ कि लगभग इस घड़े के होगा और एक घन मीटर जरूर होगा। चाहे जो कुछ हो परन्तु वह पुराना खुर्राट बेवकूफ नहीं था, यद्यपि वह नशे मे ही क्यों न हो।

"साराश यह कि हम लोग उसके घर पहुँचे और मैंने उसकी बीबी को जरा गौर से देखा। वास्तव मे वह सुन्दर स्त्री तो थी नहीं। कोई भी उसे देख सकता है, क्योकि वह सामने बैठी है। मैने अपने मन मे कहा, मेरी आशाओं पर पानी पड़ गया, परन्तु कुछ परवा नहीं, वह किसी न किसी मूल्य की तो अवश्य होगी चाहे सुन्दर हो या कुरूप, बात एक ही है, क्यो न जनाब? और मैने तब यह भी देख लिया कि वह रेल की पटरी की तरह दुबली पतली

है। मैंने अपने मन मे कहा, वह चार सौ लिटर भी न होगी। मैं नाप जोख के मामले को खूब समझता हूँ।

"जो कुछ वहाँ हुआ था वह उसने आपसे बता दिया है। यद्यपि मुझे इससे नुकसान था, तो भी मैंने उसे चोली और मोज़े पहने रहने दिया।

"जब सब कुछ हो गया तब वह भागी। मैंने कहा 'देखो ब्रूमेंट वह भागी जाती है।' उसने जवाब दिया, 'घबराओ नहीं। मैं उसे पकड़ लाऊँगा। वह सोने के लिए जरूर वापस आयेगी। मैं कमी को नापूँगा।'

'हमने नापा। चार घड़े भी नहीं हुए। हहहह।"

गवाह इतनी जोर ठहाका मार कर हँसने लगा कि मजबूरन एक सिपाही ने उसकी पीठ पर एक थप्पड़ आ जमाया। शान्त होने पर उसने फिर कहना आरम्भ किया।

"साराश यह है कि ब्रूमेट चिल्लाने लगा कि यह कुछ नहीं है, इससे काम नहीं चलेगा। मै गुर्राया और बड़े जोर से गुर्राया। उसने मुझे घूँसा मारा और मैंने भी घूँसे का जवाब घूँसे से दिया। यह सिलसिला प्रलय तक चला जाता, क्योंकि हम दोनों पिये हुए थे। इतने मे सिपाही आ गये। उन्होंने हमें गाली दी और पकड़कर जेलखाने को ले गये। मैं हर्जाना चाहता हूँ।"

इतना कहकर वह बैठ गया।

ब्रूमेट ने अपने साथी के बयान की हर बात का समर्थन किया। जूरी अचम्भित होकर विचार करने भीतर चली गई।

एक घटे के पश्चात् जूरी ने यह फ़ैसला किया कि प्रतिवादी छोड़ दिये जायें, किन्तु उन्हे वैवाहिक मान-मर्यादा के सम्बन्ध मे कुछ कड़ी सूचना दे दी जाय और व्यवसाय करने की परिमित अवस्था बतला दी जाय।

ब्रूमेट अपनी स्त्री को लेकर अपने घर गया।

कानूं अपना कारबार करने चला गया।

कुमारी फीफी

मेजर कौन्टफान फाल्सबर्ग नामक जर्मन फौजी अफसर एक बड़ी आरामकुर्सी पर लेटा हुआ समाचार-पत्र पढ़ रहा था। उसके पैर संगमरमर की एक मेज पर रक्खे हुये थे। मेजर को इस 'भुवाली' स्थान पर आये हुये तीन मास हो चुके थे।

पास ही एक छोटी सी मेज पर काफी का एक प्याला रक्खा हुआ था, जिसमे से धुआँ निकल रहा था। मेज पर चाय और काफी के धब्बे पड़े थे। कहीं-कहीं वह सिगार के टुकड़ों से काली भी हो गई थी। उस विजयी अफसर ने इस मेज को अपने चाकू से खुरच डाला था, क्योंकि पेन्सिल बनाते हुये वह कभी-कभी रुक जाता था और उस मेज पर कोई अंक या चित्र अपनी इच्छानुसार बनाने लगता था।

उसका अर्दली उसकी चिट्ठियाँ और जर्मन समाचार-पत्र लाकर उसके पास रख गया था। इन चिट्ठियों और समाचार-पत्रों को पढ़कर वह उठ खड़ा हुआ। उसने हरी लकड़ी के दो-चार भारी-भारी कुन्दे आग मे डाल दिये। इन भलेमानसों के तापने के लिये पार्क के सारे पेड़ धीरे-धीरे काट डाले गये थे। इसके पश्चात् वह खिड़की के पास गया। पानी मूसलाधार बरस रहा था। वह वर्षा 'नार्मेन्डी' की खास वर्षा थी। मालूम देता था कि ऊपर से कोई आदमी क्रोध में आकर पानी उडेल रहा है। चारों ओर जल ही जल था। ऐसी वर्षा रोवन' के आस-पास बहुधा हुआ करती थी। रोवन की प्रसिद्धि इसके लिये सारे फ्रांस मे है।

बहुत देर तक वह अफसर पानी से ढकी हुई घास को और उड़ती हुई 'अडेल' नदी को देखता रहा। खिड़की के शीशे के ऊपर वह अपनी उँगलियों से तान सी तोड़ रहा था कि एका-एक उसे किसी के आने की आहट

मिली, जिससे उसका ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया। उसका मातहत अफसर कप्तान 'बेरन फान केलवेन्सटेन' कमरे मे आया।

मेजर शरीर से दैत्य-सा मालूम देता था। उसके कधे काफी चौड़े थे और उसकी लम्बी दाढी सीने पर लटक रही थी। उसकी आँखें ठण्डी, नरम और नीली थीं। उसके चेहरे पर तलवार के घाव का एक चिह्न था। आस्ट्रिया के युद्ध मे उसे यह चोट लगी थी। लोग कहते थे कि जैसा वह बहादुर अफसर है, वैसा ही भला भी है।

कप्तान छोटे कद का आदमी था। उसका चेहरा सुर्ख था। उसकी पेटी खूब कसी हुई थी। उसके बाल लाल थे और इतने महीन कटे हुये थे कि कभी-कभी प्रकाश मे ऐसा मालूम होता था कि उसके सिर पर फासफोरस मल दिया गया है। उसे याद नहीं था कि किस प्रकार उसके अगले दो दाँत एक रात को जाते रहे थे। इन दो दाँतों की कमी के कारण कभी-कभी उसकी बोली समझ मे नहीं आती थी।

कमान्डेन्ट ने उससे हाथ मिलाया और अपना काफी का प्याला पीने लगा। (प्रात.काल से यह छटा प्याला था)। काफी पीकर उसने अपने मातहत अफसर से सारी घटनाओं की रिपोर्ट सुनी। फिर दोनों खिड़की के पास गये और कहने लगे कि दृश्य बहुत ही मनोहर है। मेजर शान्त मनुष्य था, उसके घर पर उसकी धर्मपत्नी थी और वह अपने को हर अवस्था के अनुकूल बना लिया करता था। किन्तु कप्तान को नीच स्थानों मे जाने की आदत थी। उसे स्त्रियों की सगत मे आनन्द आता था। इसलिए तीन मास तक ऐसे बुरे स्थान मे बन्द रहने के कारण वह क्रोधित था।

द्वार पर किसी ने खटखटाया। कमान्डेन्ट ने कहा—अन्दर चले आओ। अर्दली आया और इस प्रकार अपनी उपस्थिति से प्रकट कर गया कि भोजन तैयार है। भोजनालय मे सब इकट्ठे हुये। छोटे दर्जे के तीन अफसर और थे। एक तो 'ओटो फान ग्रोस्लिग' नामक लेफ्टिनेन्ट था और दो सब-लेफ्टिनेन्ट थे, जिनमे एक का नाम 'फ्रिट्ज शूनबर्ग' था और दूसरे का 'मार्क्युस फान एरिक'। एरिक का कद बहुत नाटा था, और बाल बड़े सुन्दर

थे। वह बड़ा घमण्डी था। मनुष्यों के साथ सदा पशुता का व्यवहार करता था। कैदियों के साथ उसका बर्ताव बड़ा कठोर रहता था। वह बारूद की तरह जरा सी बात पर भड़क उठता था।

एरिक फ्रास मे रहा था, इसलिये उसके साथी उसे सदा 'कुमारी फीफी' कहते थे। उसके साथियों ने उसका यह नाम इस कारण रखा था कि एक तो वह बड़े ठाठ से रहता था और दूसरे उसकी कमर बहुत पतली थी, जिससे मालूम देता था कि वह ज़नानी पेटी लगाये हुए है। उसके पीले मुँह पर रेख आ गई थी। फ्रास में रहने के कारण उसने वहाँ के लहजे की नकल कर ली थी। जब किसी मनुष्य या वस्तु के प्रति उसे घृणा प्रकट करनी होती थी, तो वह एक हलकी सी सीटी बजाकर फ्रेंच भाषा का शब्द "फीफी डॉक" कह दिया करता था।

इस देहाती महल का भोजन-गृह लम्बा और शानदार था। उसमे मुँह देखने के सुन्दर किन्तु पुराने शीशे लगे हुए थे, जो बन्दूक की गोलियों से दरक गये थे। उसमें फ्लेन्डर्स के पर्दे लगे हुए थे, परन्तु थे बिलकुल चिथड़े, क्योंकि वे कई स्थानों पर तलवार से कटे हुए दिखाई देते थे। इन सब बातों को देखकर यह स्पष्ट मालूम होता था कि फ़ुर्सत के समय 'कुमारी फीफी' वहाँ क्या करता रहता था।

कमरे की दीवारों पर उस महल के प्राचीन अधिकारियों की तीन बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगी हुई थी। एक तो कवच पहने हुए सरदार की, दूसरी पादरी की और तीसरी जज की थी। सब मिट्टी के बने हुए लम्बे-लम्बे 'पाइप' (हुक्के) पी रहे थे। ये पाइप 'केनवास' मे छेद करके तीनों के मुँह मे लगा दिये गये थे। एक ओर एक स्त्री की तसवीर कोयले से खिंची हुई थी, जो कसी हुई अँगिया पहने थी और जिसके मुँह पर बड़ी-बड़ी मूँछे भी बना दी गई थीं। इस टूटे-फूटे कमरे में बैठकर अफसरों ने करीब-करीब चुपचाप ही अपना भोजन किया। कमरा अपनी जीर्ण अवस्था और बरसात के कारण बिलकुल सुनसान और डरावना मालूम देता था।

भोजन समाप्त होने के बाद उन लोगो ने तम्बाकू का पीना शुरू किया। शराब के दौर भी जारी हो गये। ये लोग चुपचाप खा-पी रहे थे। अपनी आदत के अनुसार ये कभी-कभी अपने रहन-सहन पर असन्तोष भी प्रकट करते जा रहे थे। ब्रान्डी तथा अन्य प्रकार की शराबों की बोतलें हाथों हाथ चलने लगीं।

जब उनके गिलास खाली हो जाते थे तब वे उन्हें फिर भर लेते थे। सबके चेहरों से मजबूरी और थकावट प्रकट होती थी। कुमारी फीफी तो अपना गिलास हर मिनिट मे खाली कर देता था, किन्तु फौरन ही एक सिपाही उसे दूसरा गिलास दे देता था। वे सबके सब कड़ी तम्बाकू के धुएँ के बादलों मे घिरे हुए थे और नशे मे बदमस्त थे और झूम रहे थे। उनकी अवस्था बिलकुल ऐसी थी जैसी उन मूर्खो की होती है जिन्हें नशे मे कुछ काम नहीं करना होता। एकाएक 'बैरन' उठकर बैठ गया और कहने लगा—हे भगवान! अब ऐसे काम नहीं चल सकता। हमे कुछ न कुछ करने का उपाय सोचना ही चाहिए। यह सुनकर लेफ्टिनेंट ओटो और सब लेफ्टिनेंट 'फिट्ज' बोले—क्या आज्ञा है कप्तान?

उसने थोड़ी देर सोचा और फिर जवाब दिया—'क्या? अरे भाई अगर कमान्डेट आज्ञा दे तो कुछ आनन्द मनाना चाहिए।' मेजर ने अपने मुँह से पाइप निकाल कर पूछा—'क्यों कप्तान! कैसा आनन्द चाहते हो?' बैरन ने जवाब दिया—कमान्डेट, मैं इसका सब बन्दोबस्त कर लूँगा। मै 'ली डेवायर' को 'रोवन' भेज दूँगा और वह वहाँ से कुछ स्त्रियाँ लिवा लायेगा। मै जानता हूँ कि वे कहाँ मिलती हैं। यहीं शाम को दावत होगी, क्योंकि सब सामान मौजूद है और कम से कम एक सन्ध्या तो आनन्द के कटेगी।

काउन्ट फान कार्ल्सबर्ग ने अपने कन्धे मटकाये और मुस्करा कर कहा—'ऐ मेरे दोस्त, तुम जरूर पागल हो गये हो।' किन्तु सब अफसर खड़े हो गये थे। उन्होंने अपने सरदार को घेर लिया और कहने लगे—'कमान्डेट साहब! कप्तान को अपनी इच्छा पूरी कर लेने दीजिए। यहाँ तो बड़ा सन्नाटा है।' अन्त को 'मेजर' राजी हो गया और बोला—'अच्छी बात है।' तुरन्त ही बैरन ने ली

डेवायर को बुलाया। वह एक पुराना नानकमीशंड अफसर था। किसी ने उसे कभी हँसते नहीं देखा था। किन्तु वह अपने अफसरों की आज्ञाओं का पालन अक्षरशः करता था, वे आज्ञायें कैसी भी क्यो न हों। वह आकर गम्भीरता-पूर्वक खड़ा हो गया और बैरन की आज्ञा को सुन और समझ कर बाहर चला गया। पाँच मिनट के बाद एक फौजी गाड़ी इतनी तेजी से सरपट दौड़ती दिखाई दी जितनी तेजी से चार घोड़े बरसात मे उसे घसीट सकते थे। सब अफसर अपनी सुस्ती से जाग पड़े, उनके चेहरे चमकने लगे और वे आपस मे बातचीत करने लगे।

यद्यपि पानी सदा की भाँति ख़ूब जोर से बरस रहा था, तो भी मेजर ने यही कहा कि कुछ बहुत अँधेरा नहीं है। लेफ्टिनेंट फान गोसलिंग ने विश्वास के साथ कहा—बादल साफ हो रहा है और कुमारी फीफी तो अपने को निश्चल रख ही न सका। वह उठा और फिर बैठ गया। उसकी चमकती हुई आँखें किसी चीज को नष्ट करने के लिए ढूँढ रही थी। एकाएक मूँछों वाली स्त्री की तसवीर को देखकर उस युवक ने अपना रिवालवर निकाल लिया और कहने लगा—तुम उसे नहीं देखोगी। इतना कह कर उसने अपने स्थान पर बैठे ही बैठे निशाना लगाया और लगातार दो गोलियों से तसवीर की दोनों आँखे फोड़ दीं।

वह एकदम से चिल्ला उठा बोला— आओ, एक 'खान' बना दे। बातचीत तुरन्त बदल गई, मानों उन्होंने कोई नया और बड़ा आकर्षक विषय प्राप्त कर लिया है। यह 'खान' बनाना उसी का आविष्कार था, अर्थात् वस्तुओं को नष्ट करने का एक तरीका था। इसमे उसे बड़ा मजा आता था।

इस स्थान के असली मालिक 'काम्टी फरनेन्ड डी० ए० मोयस डी युवाइल' ने जब यह देहाती महल छोड़ा था तब उन्हें कोई चीज ले जाने का या वहीं छिपा देने का समय नहीं मिला था। हाँ, एक प्लेट तो अवश्य एक दीवार के छेद मे छिपा दी गई थी। वह बहुत धनाढ्य था और उसकी रुचि भी अमीरो की सी थी। उसके गोल कमरे का द्वार भोजनगृह में खुलता था। देखने मे यह कमरा किसी अजायब-घर की 'गेलरी' के अनुसार मालूम देता था। लेकिन यह सब ठाठ उनके शीघ्रता से भागने के पहले का था।

मूल्यवान् तैल-चित्र और पानी के रंग से बनी हुई तसवीरें दीवारों पर लटका करती थी। मेजों पर तथा लटकती हुई दीवालगिरियों पर शीशे की सुन्दर अलमारियों मे हजारों आभूषण रक्खे रहते थे। छोटे-छोटे बर्तन और मूर्तियाँ ड्रेसडन के बने हुए चीनी के बर्तन तथा चीनी के विचित्र खिलौने, हाथीदाँत की चीजे, और वेनिस के बने हुए गिलास उनके बड़े कमरे में अधिकता के साथ एक अनोखे ढग से सजे रहते थे।

किन्तु अब तो कोई चीज़ मुश्किल से ही बची होगी। इसका कारण यह नहीं था कि चीजे चोरी चली गई थीं, क्योंकि मेजर चोरी का मौका हरगिज नहीं दे सकता था। किन्तु कुमारी फीफी बहुधा 'खाने' बनाया करता था। और ऐसे अवसरों पर सब अफ़सरों को पाँच मिनिट के लिए बड़ा ही आनन्द आता था। जब उन्हे ऐसे आनन्द की आवश्यकता होती थी तब छोटे नवाब गोल कमरे मे चले जाते थे और एक आधी चीनी की चायदानी लेकर लौट आते थे। वे उसमें बारूद भर देते थे और टोंटी मे होशियारी के साथ 'फ्यूज' लगा देते थे। फिर अपनी इस मशीन को जलाकर दूसरे कमरे मे ले जाते थे और वहाँ रखकर बाहर से दरवाज़ा बन्द कर तुरन्त लौट आते थे। दूसरे जर्मन आशा से उत्साह-पूर्वक खड़े रहते थे। ज्यों ही धड़ाके से महल हिल जाता था, सबके सब एकदम भीतर दौड़ पड़ते थे।

इस बार कुमारी फीफी सबसे पहले कमरे मे घुसा और वहाँ का दृश्य देखकर मारे खुशी के ताली बजाने लगा। दृश्य यह था कि एक बड़े भारी खिलौने का सिर उड़ गया था। हर एक ने उसका एक-एक टुकड़ा उठा लिया और उसकी विचित्र आकृति पर आश्चर्य प्रकट करने लगा। मेजर बुजुर्ग की निगाह से बड़े गोल कमरे की ओर देख रहा था। वह कमरा ऐसा प्रतीत होता था, मानों उसे 'नीरो' ने नष्ट कर दिया है। उसमे कारीगरी की बड़ी-बड़ी चीजों के टुकड़े पड़े हुये थे। सबसे पहले वही कमरे से बाहर निकला, मुसकुराते हुए उसने कहा—अबकी बार पूरी सफलता हुई है।

किन्तु भोजन-गृह मे इतना धुआँ भर गया था जिसके साथ तम्बाकू का धुआँ भी मिल गया था कि वे लोग वहाँ साँस भी न ले सकें। इसलिए

कमान्डेट ने खिड़की खोल दी और दूसरे अफसर जो शराब के अन्तिम गिलास पीने आये थे वे भी वहीं चले गये ॥

जब से ये लोग आये थे तब से इस स्थान पर घंटे नहीं बजाये गये थे। यहाँ के लोगों ने इन आक्रमणकारियों के प्रति केवल इतना ही विरोध प्रदर्शित किया था। मोहल्ले के पादरी ने 'प्रूशियन' सिपाहियों को ठहरने का स्थान और भोजन देने से इनकार नहीं किया था। उसने विरोधी 'कमान्डेट' के साथ बैठ कर कई बार शराब भी पी थी। 'कमान्डेंट' उससे बहुधा मध्यस्थ का काम लेता था। किन्तु उससे गिरजे के घंटे बजाने के लिए कहना बिलकुल व्यर्थ था। वह गोली से मारा जाना पसन्द करता, परन्तु घंटे न बजाता। आक्रमण-कारियों के प्रति अपना असन्तोष प्रकट करने का उसका यही तरीका था। यह असन्तोष-प्रदर्शन शान्तिमय और आडम्बर-शून्य था। वह कहता था कि एक पादरी के योग्य केवल यही एक मार्ग है, क्योंकि पादरी को रक्त की नहीं, किन्तु नम्रता की मूर्ति होना चाहिए। आसपास के लोग 'ए० बी चन्टावाइन' की दृढता और वीरता की प्रशंसा करते थे।

उसके विरोध के साथ सारा गाँव था। दूसरे पादरी भी सहायता करने और उसके लिए जोखिम उठाने को तैयार थे, क्योंकि सब समझते थे कि इस प्रकार का शान्तिमय असन्तोष प्रदर्शन राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए आवश्यक है। किसान लोग यह अनुभव करते थे कि बेलफोर्ट या स्ट्रेसबर्ग की अपेक्षा उन्होंने अपने देश के लिए एक अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। इसमें अतिरिक्त वे विजयी प्रूशियन सैनिकों की और किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते थे।

कमान्डेट और उसके अन्य साथी अफसर आपस में लोगों के इस प्रकार के सरल साहस पर हँसते थे। इर्द-गिर्द के लोग उनसे नम्रतापूर्वक व्यवहार करते थे और दबते भी थे, इसलिए उन्होंने जनता के इस शान्तिपूर्ण विरोध को उपेक्षा से देखा। केवल छोटा विलहम ही यह चाहता था कि वह गिर्जा का घंटा बजाने को मजबूर किया जाय। पादरी के भावों के प्रति उसका अफ़सर नरमी का जो व्यवहार कर रहा था उस पर उसे क्रोध आता था।

वह प्रतिदिन कमान्डेट से प्रार्थना करता था कि केवल एक बार ही के लिए वह उसे 'डगडाग बजाने की आज्ञा दे दे। अगर और किसी कारण से न सही तो केवल मनोरञ्जन के ही लिए आज्ञा मिल जानी चाहिए। वह कमान्डेट से इस प्रकार प्रार्थना करता था, मानो कोई प्रेमिका अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिए बड़ी प्रेममयी और मधुर वाणी से विनय कर रही हो। किन्तु कमान्डेट नही मानता था, इसलिए अपने मन को प्रसन्न करने के लिए कुमारी फीफी' 'युवाइल' महल मे 'खान' बनाया करता था।

पाँचों आदमी पाँच मिनट तक एक साथ खड़े रहे और तर हवा की बहार लेते रहे। अन्त मे लेफ्टिनेट फिट्ज ने हँस कर कहा—'सचमुच (आनेवाली) औरतों को वर्षा के कारण गाड़ी की सैर का मजा न मिलेगा।' इसके बाद वे सब अलग-अलग हो गये। हर एक अपने-अपने काम पर चला गया। किन्तु कप्तान को भोजन का बन्दोबस्त करने के लिए काफी दौड़-धूप करनी थी।

जब वे सन्ध्या के समय आपस मे फिर मिले तब एक दूसरे को देखकर खूब हँसे, क्योकि सब ऐसे लक-दक और चुस्त चालाक थे जैसे वे किसी बड़ी परेड के दिन होते है। कमान्डेट के बाल जितनी सफेदी लिये हुए प्रातःकाल मालूम देते थे उतने सफेद इस समय नहीं दिखलाई देते थे। कप्तान ने अपनी मूँछे छोड़कर दाढी बना ली थी। इससे उसकी नाक के नीचे आग की एक रेखा सी दिखलाई देती थी।

यद्यपि पानी बरस रहा था, तो भी उन्होंने खिड़की खुली रहने दी। उनमे से एक बार-बार खिड़की के पास जाकर कान लगाकर आहट लेता था। सवा छः बजे बैरन ने कहा—मुझे कुछ दूर पर खड़खड़ाहट सुनाई देती है। सब के सब नीचे दौड़ गये। उसी समय सरपट दौड़ती हुई एक गाड़ी आकर खड़ी हो गई। उसके चारो घोड़े पसीने से तर थे तथा बड़े जोर से हाँफ रहे थे, उनके पुट्ठो तक कीचड़ भरा हुआ था। पाँच स्त्रियाँ उतरी। पाँचों सुन्दर थीं। इनको कप्तान के एक मित्र ने बड़ी होशियारी से चुन कर भेजा था, क्योंकि ली डेवायर उनके पास कप्तान का पत्र लेकर गया था।

इन स्त्रियों पर बहुत दबाव डालने की आवश्कयता नहीं पड़ी थी, क्योंकि पिछले तीन महीनों मे इन्हे 'प्रूशियन' लोगों से काफी वास्ता पड़ चुका था और वे उन्हें अच्छी तरह जान गई थीं। इसलिए उन्होंने आकर अपने आपको पुरुषों के समर्पण कर दिया, मानों कोई बात ही न थी। वे स्थिति के अनुकूल बन गईं। वे तुरन्त भोजन-गृह मे गईं। मेज पर स्वादिष्ट खाद्य पदार्थो की तश्तरियाँ रक्खी हुई थीं। सुन्दर चीनी के गिलास, बर्तन और रकाबियाँ सजी हुई थीं। वह रकाबी भी जिसे मालिक ने छेद मे छिपा दिया था, मिल गई थी और मेज पर लगी हुई थी। सारा दृश्य देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि यह स्थान डाकुओं की एक सराय है, जहाँ वे लोग डाका डालने के बाद भोजन करने बैठे हैं। कप्तान बहुत प्रसन्न था। उसने औरतों के गले मे बाहे डाल दीं, मानो वह उनसे खूब परिचित था और जब उसके के साथ के तीनों युवकों ने एक-एक को अपने-अपने कब्जे मे करना चाहा तब उसने इस बात का विरोध किया और सबको डॉट दिया। सबको उचित रीति से बॉटने का अधिकार उसने अपने ही ऊपर रक्खा, जिससे प्रत्येक को उसके पद के अनुसार ही मिले और उच्च अधिकारी अप्रसन्न न हों। अतएव वाद-विवाद, असन्तोष और पक्षपात का सन्देह बचाने के लिए उसने उन सबको ऊँचाई के अनुसार एक कतार मे खड़ा कर दिया और सबके ऊँची से बातें करते हुये आज्ञा देनेवाली आवाज से कहा—तुम्हारा क्या नाम है? उसने भी भड़ककर जवाब दिया—पामेला। तब वह बोला—नम्बर एक जिसका नाम पामेला है, कमान्डेंट के सुपुर्द की जाती है। फिर ब्लोनडीना नामक दूसरी को उसने अपने लिए चुना और प्रमाणित कर दिया कि इस पर उसका अधिकार है। उसने मोटी अमन्डा को लेफ्टिनेंट 'ओटो' के हवाले किया और 'ईवा' को जो टमाटर की सी थी, सब-लेफ्टिनेंट फिट्ज को दिया और 'राचल' जो सबसे छोटी, कम उम्र, काले रग और स्याही का-सी काली आखोंवाली यहूदिन थी, सबसे छोटे अफ़सर मार्किस विलहम फान एरिक के हिस्से मे आई।

वे सब की सब सुन्दर थीं। किसी की आकृति मे कोई विशेषता न थी।

तीनों युवक अपने अपने इनाम को इस बहाने से तुरन्त ले जाना

चाहते थे कि शायद इन्हें फिर से शृंगार करना होगा। किन्तु कप्तान ने बुद्धिमानी के साथ इस बात का विरोध किया और कहा कि हम सब भोजन करने के लिए तैयार बैठे हैं, अब किसी के जाने की जरूरत नहीं है। इन बातों में उसका अनुभव अधिक था। बस उसकी बात मान ली गई।

चुम्बन करने के बहाने से मार्किस ने एकाएक एक कश तम्बाकू राचल के मुँह मे फूँक दी, जिससे उसका गला रुँधने लगा, वह इतने जोर से खाँसने लगी कि उसकी आँखों से आँसू निकल आये। परन्तु राचल न तो क्रोध से उतावली हुई और न उसने अपने मुँह से कोई कटुवाक्य ही निकाला, हाँ, उसने घृणा-युक्त आँखो से अपने सतानेवाले को घूरकर जरूर देखा।

सबके सब भोजन करने बैठे। कमान्डेंट बहुत प्रसन्न था। उसने पामेला को अपनी दाहिनी ओर ब्लोनडीना को बाईं ओर बैटा लिया। अपने टेबुल पर रूमाल फैलाते हुए उसने कहा—कप्तान, तुम्हारा यह विचार बड़ा ही सुन्दर था।

लेफ्टिनेंट ओटो और लेफ्टिनेंट फिट्ज यद्यपि इतने नम्र थे कि मालूम देता था कि वे फैशनवाली स्त्रियों के साथ रहे हैं, तो भी उन्होने अपने मेहमानों को भयभीत कर दिया। परन्तु बैरन फान केलवेन्स्टन की प्रसन्नता तो उबली पड़ती थी। राइन-प्रान्त की फ्रेञ्च भाषा मे उसने स्त्रियों के प्रति कुछ मधुर वाक्य कहे, जो केवल निम्नश्रेणी के शराबखाने के योग्य थे। किन्तु वे स्त्रियाँ उसकी बातें नहीं समझीं और उनकी बुद्धि उस समय तक न जाग्रत हुई जब तक उसने बहुत गन्दे और भद्दे शब्द अपने विशेष लहज़े के साथ न कहे। इस पर वे सब की सब पगली औरतों की तरह हँसने लगीं तथा एक दूसरे से लड़ने लगीं। और वे उन शब्दों को दोहराने लगीं जिनका उच्चारण बैरन जान-बूझ कर अशुद्ध करता था ताकि उसे उन रमणियों के द्वारा उच्चारित गन्दे शब्द सुनने का आनन्द प्राप्त हो। जितना आनन्द वह चाहता था उसके देने में उन स्त्रियों ने भी कोई कसर नहीं रक्खी, क्योंकि शराब की पहली बोतल के बाद ही वे नशे मे चूर हो गई थीं। अपने साधारण स्वभाव और रोज के व्यवहार के अनुसार वे अपने दाहने और बाँयें बैठे हुए अफसरों का चुम्बन

करने लगीं, उनके चुटकियाँ काटने लगी, भयकर रीति से चिल्लाने लगीं, हर गिलास से शराब पीने लगीं, फ्रासीसी दोहे गाने लगीं और उन जर्मन गीतों के भी एक आध टुकड़े अलापने लगीं जिन्हें शत्रु के प्रतिदिन के समागम के कारण वे सीख गई थीं।

शीघ्र ही पुरुष भी काबू से बाहर हो गये। वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे और रकाबियाँ तथा तश्तरियाँ तोड़ने लगे। पीछे जो सिपाही खड़े थे वे चुपचाप देखते रहे। केवल कमान्डेन्ट ही ऐसा एक पुरुष था जिसने अपने आपको काबू मे रक्खा।

कुमारी फीफी ने राचल को अपनी गोद मे बिठा लिया था। उन्मत्त होकर एक बार उसने उसकी गर्दन पर पड़े हुए काले घुँघराले बालों को चूमा और दूसरी बार उसके ऐसे जोर से बकोटा भरा कि वह चिल्ला उठी। इस सब का कारण यह था कि फीफी मे भयङ्करता ने प्रवेश कर लिया था और उसे राचल को कष्ट पहुँचाने में आनन्द आता था। आखिर को उसने उसके काट खाया। उस बेचारी के ठुड्डी से खून बहने लगा और उसके सारे कपड़े भर गये।

उसने दुबारा फीफी को घूर कर देखा और खून पोंछते हुए कहा—तुम्हे इसका मूल्य देना पड़ेगा। उसने केवल हँस दिया, बोला—मै मूल्य दे दूँगा।

फल खाते समय शैमपेन का दौरा चला। कमान्डेन्ट खड़ा हो गया और जिस प्रकार वह महारानी आगस्टा के स्वास्थ्य लाभ का प्रस्ताव करके शराब का प्याला उठाता, ठीक उसी तरह उसने—हमारी स्त्रियों के स्वास्थ्य-लाभ के, नाम पर कहकर शराब पी ली। अब तो यह सिलसिला आरम्भ हुआ कि हर एक अपना गिलास उठाता और कुछ बकने लगता। उनका बकना भी बिलकुल नीचे दर्जे के सिपाहियों और शराबियों का सा था। साथ ही साथ वहाँ बड़े गन्दे मजाक भी होते जाते थे। औरते शराब के नशे मे इतनी चूर थीं कि वे अपनी कुर्सियों पर से करीब-करीब गिरी पड़ती थीं। परन्तु हर बार मजाक की तारीफ जरूर करती थीं।

कप्तान जो वास्तव में अपनी बहादुरी के ठाट का रङ्ग जमाना चाहता था, फिर अपना गिलास उठाकर बोला-'दिलों पर हमारी विजय के नाम पर।' इस पर लेफ्टिनेंट ओटो उचक पड़ा और नशे के ताव में आकर एकाएक बोला - फ्रांस पर हमारी विजय के नाम पर।

राचल के अतिरिक्त औरतें नशे मे होने के कारण चुप थीं। वह घूम पड़ी और लड़खड़ाती हुई बोली—मैं कुछ फ्रांसीसियों को जानती हूँ जिनके सामने तुम्हें उपर्युक्त वाक्य कहने का साहस न होगा। किन्तु छोटा मार्किस जो उसे अपनी गोद में लिये हुए था, हँसने लगा। वह बोला—हा! हा! हा! मुझे तो आज तक कोई मिला ही नहीं। जब हम लोग सामने आते हैं तब वे भाग जाते है। उस युवती ने मारे क्रोध के उग्ररूप धारण कर लिया और उसके मुँह के ठीक सामने चिल्लाकर उसने कहा—ऐ कुत्ते! तू झूठ बोलता है।

एक मिनिट तक वह अपनी विकराल दृष्टि से उस स्त्री की ओर आँखे गड़ाये देखता रहा, जैसे अपने रिवाल्वर की गोलियों से नष्ट करने के पहले वह तसवीर को देखता रहा था। फिर वह हँसने लगा। उसने कहा—हाँ, तुम उनके विषय मे बातें बनाती रहो। यदि वे लोग बहादुर होते तो क्या हम इस समय यहाँ होते? फिर उन्मत्त होकर वह चिल्ला उठा—'हम मालिक हैं। फ्रांस पर हमारा अधिकार है।' राचल एक छलाँग मार कर उससे अलग होगई और अपनी कुर्सी पर जाकर गिर पड़ी। वह उठा और टेबुल के ऊपर अपना गिलास ऊँचा करके बोला —'फ्रांस और फ्रांसीसी, जङ्गल और मैदान, फ्रांस के घर और खेत हमारे है?' दूसरे लोगों ने अपने-अपने गिलास उठाये और चिल्लाने लगे—'प्रूशिया चिरजीवी हो!' यह कहकर उन्होंने अपने-अपने गिलास एक ही घूँट मे खाली कर दिये।

युवतियों ने कोई असन्तोष नहीं प्रकट किया, क्योंकि वे चुप कर दी गई थी और डरती भी थीं। राचल भी एक शब्द न बोली, क्योंकि उसे कुछ कहना ही न था। तब छोटे मार्किस ने शेमपेन का अपना गिलास जो फिर से भर दिया गया था, यहूदिन के सिर पर रख दिया और चिल्लाकर कहने लगा—फ्रांस की सारी औरतें भी हमारी है।

इस पर वह ऐसी तेजी से उठ खड़ी हुई कि गिलास उलट गया, जिससे कस्तूरी के रङ्ग की शराब उसके काले बालों पर फैल गई, मानों उसका बप्तिस्मा हो गया। जैसे ही गिलास फर्श पर गिरा, उस के सैकड़ों टुकड़े हो गये। उसके ओंठ काँपने लगे। उसने अफसर की ओर बड़ी तीव्र दृष्टि से देखा। किन्तु वह अब भी हँस ही रहा था। वह लड़खड़ाते हुए शब्दों में बोली—यह—यह—यह—सत्य नहीं है। क्योंकि फ्रास की स्त्रियाँ तुमको मिल ही नहीं सकतीं!

वह फिर बैठ गया ताकि दिल खोल कर हँसे और पेरिसवालों का सा उच्चारण करके बोलने का प्रयत्न करने लगा—'यह अच्छी बात है, बड़ी अच्छी बात है। किन्तु ऐ मेरी जान! तुम यहाँ फिर क्यों आई?' यह सुन कर वह एक मिनिट तक कुछ न बोली, क्योंकि घबराहट मे पहले तो उसकी बात वह समझी ही नहीं, किन्तु ज्यों ही उसको बात का अर्थ उसको समझ मे आया वह अपने ऊपर क्रोधित हो कर बोली—मै! मै! मैं! स्त्री नहीं हूँ। मैं तो वेश्या हूँ, और यह एक प्रूशियन के लिए काफी है।

वह अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि अफसर ने उसके मुँह पर कसकर एक चाँटा जमा दिया। किन्तु जब दुबारा मारने के लिए वह अपना हाथ उठा रहा था तब राचल ने फल काटने वाला एक चाकू टेबुल पर से उठा लिया और क्रोध से पागल होकर ठीक उसकी गर्दन में घुसेड़ दिया। जो कुछ वह कहना चाहता था वह उसके गले मे ही रह गया, वह अपना आधा मुँह खोल कर बैठ गया। उसकी आँखों से भयकरता टपकने लगी।

सब लोग डर कर चिल्लाने लगे और घबराहट मे इधर-उधर कूदने लगे। किन्तु राचल ने अपने और लेफ्टिनेंट के बीच में एक कुर्सी फेंक दी, जिससे वह धड़ाम से गिर पड़ा। वह झट से खिड़की की तरफ लपकी और उसे खोलकर रात्रि के अधकार और मूसलाधार पानी मे कूद पड़ी। वे सब से सब ताकते ही रह गये, कोई उसे पकड़ न पाया।

दो मिनट में 'फीफी' का भी प्राणान्त हो गया। फिट्ज और ओटो ने अपनी तलवारें खींच लीं और चाहते थे कि स्त्रियों को मार डालें; यद्यपि वे

उनके पैरों में चिपटी हुई थीं। बड़ी कठिनाई से मेजर ने उस हत्याकांड को रोका और चारो भयभीत युवतियों को एक कमरे में ताले के अन्दर बन्द करवा कर दो सिपाही पहरे पर मुकर्रर कर दिये। इसके पश्चात् उसने भगोड़ी युवती को खोजकर लाने का ऐसा इन्तजाम किया मानो वह किसी लड़ाई का सङ्गठन कर रहा है। उसे पूर्ण विश्वास था कि वह अवश्य पकड़ी जायगी।

खाने की मेज फौरन साफ़ कर दी गई और उसी पर लेफ्टिनेंट की लाश रख दी गई। चारों अफसर गम्भीर और उदास मुख किये हुए खिड़कियों के पास खड़े थे। यद्यपि पानी बड़े जोर से बरस रहा था, तो भी वे रात्रि के अन्धकार में आँखें गड़ा-गड़ाकर देख रहे थे। एकाएक कुछ दूर पर गोली दगने की एक आवाज सुनाई दी, फिर दूसरी। चार घण्टे तक, कभी दूर और कभी पास से, रिपोर्ट और सिपाहियों के इकट्ठे होने की आवाजें और गले से बोले हुए ललकार के विचित्र शब्द सुनाई देते रहे।

प्रातःकाल सब लौट आये। रात के समय पीछा करने के गड़बड़ में अपने ही साथियों द्वारा दो सिपाही जान से मारे गये और तीन जख्मी हुए। किन्तु वे राचल को पकड़ न पाये।

फिर तो जिले के निवासियों पर खूब अत्याचार किया गया। उनके घर तोड़-फोड़ डाले गये। बार-बार गाँवों की तलाशियाँ ली गईं। किन्तु उस यहूदिन का पता न लगा।

जब जनरल को इस बात की सूचना दी गई तब उसने हुक्म दिया कि मामले को दबा दो, ताकि फौज में बुरा उदाहरण न स्थापित हो। किन्तु उसने कमान्डेन्ट को कड़ी फटकार बतलाई। कमान्डेन्ट ने अपने मातहत अफसरों को डाँटा। जनरल ने कहा था—हम लड़ाई में इसलिए नहीं आते हैं कि मौज उड़ावें और वेश्याओं से प्रेम प्रदर्शित करें। काउन्ट कार्ल्सबर्ग ने निराश होकर अपने मन में ठान लिया कि मैं जिले से बदला लूँगा। किन्तु सख्ती करने के लिए उसे एक बहाने की आवश्यकता थी। इसलिए उसने पादरी को बुला भेजा और उसे आज्ञा दी कि माक्विस फान एरिक की अर्थी के निकलने के समय गिर्जे के घंटे बजवाने होंगे।

सारी आशाओं के विरुद्ध पादरी ने बड़ी नम्रता दिखलाई। और जब कुमारी फीफी का मृत शरीर सिपाहियों के कन्धे पर आगे-पीछे तथा चारों ओर बन्दूक भरे हुए फौजी लोगों से घिरा हुआ युवाइल महल से कब्रिस्तान की ओर जाने लगा तब पहले-पहल गिर्जे का मुर्दनी घंटा इस प्रकार विधिवत् बजा कि मालूम देता था कि कोई मित्र उसे बजा रहा है। बाजा रात को फिर बजा, दूसरे रोज भी बजा, और प्रत्येक दिवस बजा। जितना बजाया जा सकता था उससे भी अधिक बजा। कभी-कभी रात को भी बजने लगता और धीमे-धीमे बजा करता। अगर किसी की आँख खुल जाती थी तो उसे बड़ा आनन्द आता था, परन्तु वह नहीं कह सकता था कि घंटा क्यों बज रहा है। आस-पास के सारे किसान यह कहा करते थे कि गिर्जे के घंटे पर कोई जादू हो गया है। अतएव अब गिर्जाघर के पास सिवा पादरी और उसके सहकारी के कोई नहीं जाता था। और वे लोग भी केवल इसलिए जाते थे कि वहाँ एक गरीब लड़की भय के मारे एकान्त-सेवन करती थी और ये लोग चुपके-चुपके उसकी देख-भाल किया करते थे।

जब तक जर्मन फौज चली न गई वह लड़की वहीं बनी रही। इसके बाद एक रोज सन्ध्या के समय पादरी ने एक महाजन की गाड़ी मँगवाई और अपने कैदी को बैठाकर स्वयं रोवन गाड़ी हाँक ले गया। रोवन पहुँचकर जब वे गाड़ी से उतरे तब पादरी ने उस लड़की को गले से लगाया। वह बड़ी तेजी से दौड़कर अपने पुराने घर में चली गई। वहाँ पर उसके घर की मालकिन समझती थी कि वह मर गई है। परन्तु उसे फिर से देखकर वह बड़ी प्रसन्न हुई।

कुछ समय के बाद एक देशभक्त ने जो किसी प्रकार के ढकोसलों को नहीं मानता था, उससे विवाह कर लिया, क्योंकि वह राचल को उसके साहसी-पूर्ण कार्य के कारण प्रेम करने लगा था। और अब तो वह उसे आपसे आप प्रेम करने लगा था। उस युवक ने उसे साधारण गृहणियों की तरह एक भली स्त्री बना दिया।

दो मित्र

फ्रांस की राजधानी पेरिस के चारों ओर घेरा पड़ा हुआ था और वहाँ अकाल की विकराल मूर्ति विराजमान थी। घरों की गौरैयाँ और नालियों के चूहे भी कम हो रहे थे। जो कुछ भी हाथ लग जाता था, लोग उसी से अपना निर्वाह कर लेते थे।

एक दिन जनवरी के महीने मे प्रातःकाल मासियर मारीसट सड़क पर घूम रहे थे। पेशा इनका घड़ीसाजी था, किन्तु थे पूरे टलुवे। जिस समय आप अपने पतलून की जेब मे हाथ डाले और खाली पेट टहल रहे थे, एकाएक उसी समय सामने से उनके मछली के शिकारी मित्र मासियर सावेज आ मिले।

लड़ाई आरम्भ होने के पहले मारीसट की यह आदत थी कि प्रत्येक इतवार को हाथ मे बाँस की लग्गी लेकर और पीठ पर टीन का एक सन्दूक रखकर प्रातःकाल ही घर से निकल पड़ते थे। 'अरजेन्टील' जानेवाली रेलगाड़ी पर सवार हो जाते थे और 'कोलम्बीस' पर उतर पड़ते थे। वहाँ से पैदल चलकर 'आइलमेरेन्टी' पहुँच जाते थे। यह स्थान उनको बहुत प्रिय था। इसका वे स्वप्न देखा करते थे। यहाँ पहुँचते ही वे मछली का शिकार आरम्भ कर देते थे और जब तक अँधेरा नहीं हो जाता था तब तक यहीं रहते थे।

प्रत्येक इतवार को मासियर सावेज से उनकी भेंट होती थी। सावेज महोदय मोटे, प्रसन्नचित्त और छोटे कद के थे। 'रूनाटर-डेम-डी-लोरेट' नामक स्थान मे वे दर्जी का काम करते थे और मछली के शिकार के बड़े प्रेमी थे। बहुधा ये दोनों सज्जन आधा-आधा दिन पास-पास बैठे हुए बिता देते थे। दोनों के हाथ मे लग्गी रहती थी और दोनों के पैर पानी के ऊपर नाचा करते थे। उन दोनों मे घनिष्ट मित्रता उत्पन्न हो गई थी।

किसी किसी दिन वे बिलकुल चुप रहते थे और तनिक भी बातचीत नहीं करते थे। और कभी कभी ख़ूब गपशप करते थे। परन्तु बोले, चाहे न बोले वे, बिना शब्दों के प्रयोग के ही एक दूसरे के मनोभावों को अच्छी तरह समझते थे। कारण यह था कि उनकी रुचि और भाव एकसा थे।

बसन्त-ऋतु के दिनों में सुबह १० बजे के करीब जब प्रातःकाल के सूर्य के कारण पानी पर एक हलका सा कोहरा उतराने लगता था और इन दोनों उत्साही लग्गीबाजो की पीठ कुछ कुछ गरम हो जाती थी तब मारीसट बार-बार अपने साथी से यह कहा करते थे—

"क्यों जी! यहाँ ख़ूब आनन्द है न?"

इस पर दूसरा यह जवाब देता था –

"इससे अच्छा स्थान तो मेरे ध्यान मे ही नहीं आ सकता!"

इन थोडे से ही शब्दों से वे दोनो एक दूसरे के मनोभावों को अच्छी तरह समझ जाते थे। एक दूसरे के विचारों की क़द्र करता था।

पतझड के मौसम मे दिन के अन्तिम भाग मे जिस समय सूर्य अस्त होने लगता था और रुधिर की सी रक्तवर्ण लालिमा पश्चिमी आकाश पर डालता था और लाल बादलो का प्रतिबिम्ब समस्त नदी पर अपना रंग जमा देता था, उस समय दोनों मित्रों के मुख पर एक प्रकार की ज्योति सी चमकने लगती थी। वही ज्योति उन वृक्षों को देदीप्यमान कर देती थी, जिनकी पत्तियाँ जाड़े की ठडक से सिकुड गई थीं। मॉसियर सावेज अपने मित्र की ओर देख हँस देते थे और कहते थे—

"क्या ही मनोहर दृश्य है!"

और मारीसट अपने तरौए पर से दृष्टि हटाये बिना यह कहा करते थे—

"सड़क की अपेक्षा तो यह स्थान बहुत ही अच्छा है। क्यों है न?"

आज ज्यों ही उन्होंने एक दूसरे को पहचाना, बडे प्रेम से हाथ मिलाये और ऐसी परिवर्तित स्थिति मे मिलने के कारण उन पर प्रभाव भी विशेष पड़ा।

एक ठण्डी साँस लेकर मॉसियर सावेज ने कहा—आज-कल समय बहुत बुरा है।

मारीसट ने शोकातुर होकर अपना सिर हिला दिया।

"और ऐसा मौसम ! आज तो साल का पहला सुन्दर दिन है।"

वास्तव में आकाश निर्मल और स्वच्छ था। दोनों साथ-साथ चल दिये, किन्तु दोनों कुछ सोच-विचार मे उदास थे।

मारीसट ने कहा—जरा मछली के शिकार की बात को सोचो ! किसी समय कैसे अच्छे दिन थे ?

मॉसियर सावेज़ ने पूछा—अब फिर कब हम शिकार कर सकेंगे ?

दोनों ने एक होटल मे प्रवेश किया। थोड़ी सी शराब ली और निकल कर फिर सड़क पर चल दिये।

मारीसट एक-दम रुक गये और बोले—क्या थोड़ी सी शराब और पी जाय ?

मॉसियर सावेज ने कहा—अगर तुम्हारी इच्छा है तो स्वीकार है।

इतनी बात-चीत कर दोनों ने शराब की एक दूकान मे प्रवेश किया। और जब वे वहाँ से निकले, नशे मे झूम रहे थे, उनके खाली पेट में शराब ने अपना विशेष प्रभाव पैदा कर दिया था, दिन बड़ा सुहावना और सुन्दर था, और ठण्डी-ठण्डी हवा उनके चेहरे पर लग रही थी। ताजी हवा ने मॉसियर सावेज पर शराब का पूरा रग जमा दिया। वे एकाएक रुक गये और बोले—

"मान लो हम वहाँ चलें" ?

"कहाँ ?"

"मछली के शिकार को।"

"किन्तु कहाँ ?"

"वहीं, पुरानी जगह। फरासीसी चौकी 'कोलम्ब्रोस' के पास ही है। मै कर्नल डुमोलिन को जानता हूँ। और हमे सुगमता से जाने की आज्ञा मिल जायगी।"

यह सुनकर मारीसट का भी जी ललचा गया। वे बोले—बिलकुल ठीक। मुझे स्वीकार है।

बस वे दोनों अपनी-अपनी लग्गी और डोरी लेने के लिए अपने-अपने घर चल पड़े।

एक घंटे के पश्चात् दोनों साथ-साथ सड़क पर चले जा रहे थे। तुरन्त ही वे उस बँगले में पहुँच गये जहाँ कर्नल डुमोलिन रहते थे। वे उनकी प्रार्थना पर हँसे, किन्तु उनकी बात मान ली और उन्हें 'पासवर्ड' मिल गया, अर्थात् उन्हें वह शब्द बता दिया गया जिसे कह कर वे फौजी चौकी को पार कर सकते थे। 'पासवर्ड' मिलते ही वे अपने मार्ग की ओर चल दिये।

शीघ्र ही वे चौकी के उस पार पहुँच गये और कोलम्बीस नामक स्थान से होकर वे उन छोटे-छोटे अंगूर के बगीचों के किनारे पर पहुँचे जो चारों ओर से सीन-नदी को घेरे हुए थे। उस समय लगभग ग्यारह बजे थे।

उनके सामने ही 'अर्जेटील' ग्राम विराजमान था, जो बिलकुल निर्जन और निर्जीव सा मालूम देता था। 'ओर्गामेन्ट' और 'सेनोइस' नामक पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ सन्तरी की तरह खड़ी थीं। 'जेनटर' तक जो बीहड़ मैदान पड़ा था वह नितान्त जन-शून्य था—वह पीली मिट्टी का बंजर था और उसमें केवल 'चेरी' के ठूँठ खड़े थे।

उच्च शिखरों की ओर इशारा करके मॉसियर सावेज ने धीरे से कहा—उस ओर प्रूशियाई डटे हैं।

सुनसान ग्राम के दृश्य से दोनों मित्रों के मन में अनिश्चित शंका उत्पन्न होने लगी।

प्रूशियाई! उन लोगों ने अब तक उन्हें कभी नहीं देखा था। किन्तु पिछले कई मास से पेरिस के आसपास उन लोगों ने उनकी उपस्थिति का अनुभव कर लिया था। वे फ्रांस को नष्ट कर रहे थे, और लूट रहे थे। वहाँ के निवासियों को जान से मार रहे थे और उन्हें क्षुधा से भी पीडित कर रहे थे। इस अजेय और विजयी जाति से लोग घृणा तो पहले से ही करते थे, किन्तु अब तो वे उससे एक प्रकार से भयभीत भी रहने लगे थे।

मारीसट ने कहा—मान लो कि हमारी उन लोगों से भेंट हो जाय !

मॉसियर सावेज ने उत्तर दिया—हम उन्हें कुछ मछलियाँ भेंट कर देंगे। इस उत्तर में वह मानसिक निश्चिन्तता मौजूद थी जो प्रायः पेरिस के निवासियों में होती है और जो कभी पूर्णरूप से ठण्डी नहीं हो सकती।

तो भी वे मैदान से प्रकट रूप से निकलने से हिचके, क्योंकि चारों ओर का सन्नाटा देखकर उनके मन में भय का सञ्चार होने लग गया।

अन्त में मॉसियर सावेज ने वीरता से कहा—आओ, हम अपनी यात्रा अवश्य आरम्भ करेंगे, हमें सिर्फ थोड़ा सा होशियार रहने की जरूरत है।

वे अङ्गूर के एक बाग़ से होकर निकले और झुके-झुके अङ्गूर की बेलों की आड़ से जा रहे थे। किन्तु उनकी आँखें और कान बड़े चौकन्ने थे।

नदी के किनारे तक पहुँचने के लिए एक बीहड़ और निर्जन मैदान पार करना पड़ता था। इसको उन्होंने दौड़कर पार किया और ज्योंही वे पानी के किनारे पहुँचे वे सूखे नर्कुलों के पीछे छिप गये।

यदि सम्भव हो तो यह जानने के लिए कि किसी आनेवाले के पैरों की आहट तो नहीं सुनाई देती है, मारीसट ने जमीन पर अपने कान लगाये। किन्तु उसे कुछ भी नहीं सुनाई दिया। उन दोनों को यह प्रतीत हो गया कि वे बिलकुल अकेले हैं। जब उनकी दिलजमई हो गई तब उन्होंने मछली का शिकार करना आरम्भ कर दिया।

उनके सामने ऊजड़ 'आइल मारेन्टी' होने के कारण उस पार से भी उन्हें कोई नहीं देख सकता था। छोटा सा होटल बन्द था और ऐसा मालूम होता था, मानों वह वर्षों से त्याग दिया गया है।

मॉसियर सावेज ने पहली मछली पकड़ी, दूसरी मॉसियर मारीसट ने। और फिर तो फटीफट मच गई। कभी एक और कभी दूसरा अपनी लग्गी उठाता और उसके सिरे पर चाँदी की तरह चमकती हुई एक छोटी सी मछली चली आती। बहुत बढ़िया शिकार हो रहा था।

उनके पैरों के पास एक मुँहबन्द थैला रक्खा था। जो कुछ वे फॉस पाते थे उसे धीरे से अपने थैले में सरका देते थे। वे आनन्द से गद्गद थे।

आनन्द इस बात का था कि एक बार उन्हे फिर वह मनोरञ्जन प्राप्त हुआ जिससे वे बहुत दिनों से वञ्चित थे।

उनकी पीठ पर धूप की किरणे पड रही थी। उन्हे अब न तो कुछ सुनाई देता था और न उनके मन मे कोई विचार ही उठता था। वे सारे ससार से विरक्त थे। वे तो मछली के शिकार मे मस्त थे।

किन्तु एकाएक कुछ घडघडाहट सी सुनाई दी, मानो पृथ्वी के भीतर से आवाज आ रही है। इस घडघडाहट को सुन कर उनके नीचे की जमीन खिसक गई। तोपो ने अपना गर्जन फिर आरम्भ कर दिया था।

मारीसट ने अपना मुँह फेरा और नदी के किनारे से कुछ दूर बॉई ओर को देखा। उसे 'वेलेरियन' पहाड का दुर्भेद्य आकार दिखलाई दिया, जिसकी चोटी से सफेद धुँआ निकल रहा था।

तुरन्त ही पहले धुँए के पश्चात् दूसरा धुँआ भी दिखलाई दिया। और कुछ ही मिनिट के बाद एक नई घडघडाहट ने पृथ्वी को कम्पायमान कर दिया।

यह सिलसिला कुछ देर तक जारी रहा और हर घडी पहाड से भयङ्कर साँस और सफेद धुँआ निकलने लगा, जो धीरे-धीरे ऊपर उठ कर पहाड की चोटी पर शान्तिमय आकाश मे विचरने लगा।

मॉसियर सावेज ने अपने कधे मटकाये और बोले—उन लोगो ने फिर शुरू कर दिया!

मारीसट जो बडे ध्यान से अपने तैरुआ को ऊपर-नीचे आते-जाते हुए देख रहा था, एकाएक इस प्रकार क्रोधातुर हो गया जैसा एक शान्तिमय आदमी उन लोगो के प्रति हो सकता है जो इस प्रकार तोपे दाग रहे थे। उसने बडे गुस्से से कहा—ये लोग बडे मूर्ख हैं, जो इस प्रकार एक दूसरे की हत्या करते है!

मॉसियर सावेज ने उत्तर दिया—ये लोग पशुओ से भी ज़्यादा गये-गुजरे हैं।

मारीसट ने उसी समय एक मछली पकडी और बोले—अरे भाई, जरा यह तो सोचो कि जब तक कोई भी सरकार रहेगी, इसी प्रकार होता रहेगा!

मॉसियर सावेज बोल उठे—प्रजा-तन्त्र युद्ध-घोषणा न करता।

मारीसट बीच मे ही कहने लगे—राजा के अधीन होकर हमे विदेशियों से लड़ना पड़ता है और प्रजातन्त्र मे घरेलू युद्ध होता है।

जिस प्रकार शान्ति-मय और कार्यकुशल नागरिक समझ के साथ बहस करते है, उसी प्रकार वे दोनों गम्भीरता से राजनैतिक प्रश्नों पर वादविवाद करने लगे, और इस एक बात पर दोनों सहमत हो गये कि वे कभी पूर्ण स्वतन्त्र न होंगे। दूसरी ओर मान्ट वेलेरियन लगातार गरजता रहा और अपनी तोपो के गोलों से फ्रासवालो के घरों को नष्ट-भ्रष्ट करता रहा, तथा मनुष्यों के जीवन को पीसकर धूल मे मिलाता रहा। इससे बहुत से सुख-स्वप्नों का अन्त हो गया, अनेक आशायें विलीन हो गईं और आगामी आनन्द की कितनी ही परिस्थितियाँ लुप्त हो गईं। इसी से कई स्थानों की माताओं, पुत्रियों तथा पत्नियो को निरन्तर कष्ट और दुख झेलने पड़े।

मॉसियर सावेज ने कहा—यह जीवन ही कुछ ऐसा है! मारीसट ने हँसकर जवाब दिया—यह क्यों नही कहते कि मौत ही ऐसी है।

किन्तु अपने पीछे पैरो की आहट सुनकर वे एकाएक डर के मारे कॉपने लगे। उन्होंने मुड़कर ज्यो ही देखा, उन्हें पास ही चार लम्बे-चौड़े दाढीवाले आदमी दिखाई दिये, जो अपने सिर पर चपटी टोपियाँ पहने हुए थे। उन्होंने दोनो शिकारियों के सामने अपनी बन्दूके कर दीं।

दोनों के हाथो से लग्गियाँ गिर गईं और बहकर नदी मे चली गईं।

दो-एक मिनट मे दोनों पकड़ गये और बाँधकर नाव में डाल दिये गये। तुरन्त ही नाव उस पार 'आइल मारेन्टी' पहुँच गई।

और जिन घरो को ये दोनो उजड़े हुए समझ रहे थे उनके पीछे करीब-करीब बीस जर्मन सिपाही खड़े थे?

भद्दी शकलवाला एक दैत्य सा आदमी कुर्सी पर बैठा था और अपने चुरुट पीने वाले लम्बे पाइप से तम्बाकू के कश खींच रहा था। उसने इन दोनों से सुन्दर फ्रेंच भाषा मे कहा—ऐ भले आदमियों, तुम्हारा मछली का शिकार तो अच्छी तरह हो गया?

उसी समय एक सिपाही ने अफसर के चरणों के पास मछलियों से भरा हुआ थैला रख दिया, जिसे होशियारी से वह अपने साथ लेता आया था। प्रूशियाई हँसा। उसने कहा—मेरी समझ मे यह बुरा तो नहीं है। परन्तु हमे किसी अन्य विषय पर बात-चीत करनी है। जरा मेरी बात ध्यान से सुनिये और डरिये नही। इस बात को तुम समझ लो कि मेरी दृष्टि मे तुम दोनों जासूस हो। यह बात स्वाभाविक है कि मै तुम्हे गिरफ्तार करने पर गोली से मार दूँ। तुम मछली के शिकार का बहाना करते हो, ताकि तुम्हारा असली मशा छिप जाय। तुम मेरे हाथों मे पड गये हो और उसका तुम्हें परिणाम भोगना पडेगा। युद्ध मे यही होता है। किन्तु तुम फौजी चौकी पार करके आये हो। इसलिए लौट जाने के लिए तुम्हें कोई 'पासवर्ड' अवश्य बतलाया गया होगा। मुझे 'पासवर्ड' बतला दो और मै तुम्हे तुरन्त चला जाने दूँगा।

दोनों मित्र मौत की तरह पीले पड़ गये थे और एक दूसरे के पास चुपचाप खड़े थे। उनके हाथ कुछ कॉप रहे थे, बस इसी से उनके मन का भाव प्रकट होता था।

अफसर ने फिर कहा—कभी किसी को यह बात मालूम नहीं होने पायेगी। तुम शान्ति से अपने घर लौट जाओगे और तुम्हारे साथ ही तुम्हारा भेद भी छिपा रहेगा। अगर तुम इनकार करोगे तो मार डाले जाओगे और तुरन्त ही मार डाले जाओगे। जो चाहो, पसन्द कर लो।

दोनों बिना हिले-डुले खड़े रहे और उन्होंने अपने ओंठ तक नहीं खोले।

प्रूशियाई शान्ति के साथ नदी की ओर अपना हाथ फैलाये हुये कहता गया—

"जरा सोच लो कि पॉच मिनट में तुम उस पानी की तह मे पहुँच जाओगे। ठीक पाँच मिनट मे! मै समझता हूँ कि तुम्हारे कुटुम्बी भी है।"

अब भी मॉट वेलेरियन गरज रहा था। दोनों शिकारी चुपचाप खड़े रहे। जर्मन घूमा और उसने अपनी निजी भाषा मे आज्ञा दी। फिर उसने अपनी कुर्सी थोड़ी अलग हटा ली ताकि वह बन्दियो के बहुत निकट न रहे।

इतने मे ही एक दर्जन सिपाही हाथ मे बन्दूके लेकर आगे बढ़े और बीस कदम हटकर एक स्थान पर खड़े हो गये।

अफसर ने कहा—मै तुम्हे एक मिनिट का समय देता हूँ। एक सेकेंड भी अधिक नहीं।

इसके पश्चात् वह शीघ्रता से उठा, दोनो फ्रासीसियों के पास गया, मारीसट का हाथ पकड़ा, उसे थोड़ी दूर अलग ले गया और धीरे से बोला—जल्दी! पासवर्ड। तुम्हारे मित्र को कोई पता न चलेगा। मै खेद प्रकट करने का बहाना करूँगा।

मारीसट ने उत्तर मे एक शब्द भी नहीं कहा। इसके पश्चात् वह मॉसियर सावेज को उसी प्रकार अलग ले गया और उसके सामने भी वही प्रस्ताव उपस्थित किया। सावेज ने भी कोई उत्तर नही दिया। वे फिर एक दूसरे के पास खडे हो गये। अफसर ने आज्ञा जारी कर दी। सिपाहियो ने अपनी बन्दूके उठा लीं।

उस समय अकस्मात् मारीसट की दृष्टि मछलियों से भरे हुए थैले पर जा पड़ी, जो उनसे कुछ गजों के फासले पर घास मे पड़ा था। सूर्य की किरणों की ज्योति के कारण उसमे की तड़फड़ाती हुई मछलियाँ चाँदी की तरह चमक रही थीं। और मारीसट का दिल टूट चला। आत्म-संयम का प्रयत्न करने पर भी उसकी आँखों मे आँसू भर आये। वह लड़खड़ाती हुई जबान से बोला—मॉसियर सावेज नमस्कार।

सावेज ने उत्तर दिया—मॉसियर मारीसट नमस्कार।

दोनों ने हाथ मिलाये। यद्यपि वे अपने ऊपर अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहे थे, तो भी वे मारे भय के सिर से पैर तक कॉप रहे थे।

अफसर ने कहा—गोली चलाओ। बारहों गोलियाँ एक साथ चलीं।

तुरन्त ही मॉसियर सावेज आगे की ओर गिर पड़े। अधिक ऊचा होने के कारण मॉरीसट कुछ जरा सा झूम गये और अपने मित्र के पास गिर पडे। उनका मुँह आकाश की ओर था और उनकी छाती मे छेद हो जाने के कारण उनके कोट से ख़ून निकल रहा था।

जर्मन ने नई आज्ञा दी।

उसके आदमी फौरन चल दिये और शीघ्र ही रस्सियाँ और पत्थर लेकर लौट आये। दोनों मित्रों के पैरो में रस्सियाँ बाध दी गई और फिर सिपाही उन्हें नदी के किनारे ले गये।

माएट वेलेरियन की चोटी इस समय धुँए से ढँकी हुई थी, किन्तु वह गरज अब भी रहा था।

दो सिपाहियो ने मारीसट का सिर और पैर पकड़े और दो ने उसी प्रकार सावेज को पकड़ा। मजबूत हाथों में मृत-शरीर जोर-जोर से झूलने लगे और दूर फेंक दिये गये। एक तिरछी रेखा बनाते हुये वे पैरों के बल नदी मे गिर पड़े।

छप्प से पानी ऊपर उठा, कुछ फेना सा दिखाई दिया, पानी ने चक्कर मारा और शान्त हो गया। छोटी-छोटी लहरे किनारे पर टकराने लगीं।

पानी की सतह पर खून की एक-दो रेखायें मालूम देती रहीं।

इस सारी कार्यवाही मे अफसर बिलकुल शात रहा। अब वह विकट हँसी हँसकर बोला—अब मछलियों की बारी है।

फिर वह अपने घर की ओर चल पड़ा। एकाएक उसकी नजर मछलियों से भरे हुए उस थैले पर पड़ी, जो घास पर पड़ा हुआ था और कोई उसकी सुध लेने वाला नहीं था। उसने उसे उठा लिया, ध्यान से देखा, मुस्कराया और बोला—विलहम!

सफेद कपड़े पहने हुये एक सिपाही उसके बुलाने पर हाजिर हो गया और उस प्रूशियाई ने दोनों मरे हुए आदमियों का पकड़ा हुआ माल उछाल कर उसे दे दिया और कहा—तुरन्त इन मछलियो को जीवित ही तलकर मेरे लिए बनाओ। ये खाने मे बड़ी स्वादिष्ट होंगी।

फिर उसने अपना चुरुट-पाइप दुबारा जलाया और पीने लगा।

आदर्श करोड़पति

जब तक मनुष्य धनवान न हो तब तक उसके सुन्दर होने से कोई लाभ नही। प्रेमालाप अमीरो का कार्य है—उस पर केवल उन्हीं का अधिकार है—बेकार लोगों का नही। ग़रीब को तो केवल व्यवहारिक और नीरस होना चाहिये। मनोमोहक होने की अपेक्षा एक स्थिर आय प्राप्त करना अधिक अच्छा है।

वर्तमान समय की ये बड़ी-बड़ी सत्य बाते हैं जिनको ह्विगी अर्सकिन ने कभी अनुभव नहीं किया था। वह अत्यन्त साधारण श्रेणी का व्यक्ति था। आर्थिक दृष्टि से उसकी दशा सतोषप्रद न थी। हाँ, वह देखने में बड़ा सुन्दर था। उसके बाल भूरे और घूँघरवाले थे। चेहरा सुडौल और भरा हुआ था। आँखे भूरी थी। जितना उससे स्त्रियाँ प्रेम करती थी उतना ही पुरुष भी चाहते थे। सिवाय रुपया कमाने के उसमें सब गुण थे। उसे अपने पिता से एक तलवार और १५ भाग 'हिस्ट्री आव् दि पेनुन्सुलर वार' नामक पुस्तक के मिले थे। तलवार को उसने अपने शीशे के ऊपर लटका रखा था और पुस्तकों को एक अलमारी मे रख छोड़ा था। उसकी चाची उसे दो सौ पौण्ड वार्षिक दिया करती थी और इसी से उसका निर्वाह होता था। उसने प्रत्येक व्यवसाय में चेष्टा की थी। छः महीने तक तो वह सट्टेबाजी करता रहा। परन्तु, बड़े-बड़े दिग्गजों के सामने वह एक भुनगा ही सिद्ध हुआ। कुछ दिन वह चाय का भी सौदागर रहा। किन्तु, ग्राहकों से तग आकर उसे छोड़ बैठा। फिर उसने मेवाफरोशी की। किन्तु, उससे भी काम न चला। अत मे उसने सब काम छोड़ दिया और निरुद्योग होकर जीवन बिताने लगा।

दुर्भाग्य से इसी बीच मे आप पर प्रेम का भूत सवार हो गया। जिस स्त्री से आप प्रेम करते थे उसका नाम लारा मर्टन था। वह एक ऐसे पेन्शन-

प्राप्त कर्नल की लडकी थी जिसने भारतवर्ष मे रह कर अपना स्वास्थ्य खो दिया था।

लारा ह्विगी पर मुग्ध थी और ह्विगी तो लारा का दासानुदास था। सारे लण्डन में यह जोडी बडी सुन्दर थी परन्तु उनके पास एक पाई नहीं थी। विवाह हो तो कैसे हो? यद्यपि कर्नल ह्विगी को बहुत चाहता था। परन्तु लारा के साथ उसके व्याह की बात भी सुनना नही पसन्द करता था।

वह कहा करता था कि, ऐ लडके! जब तुम्हारे पास दस हजार पौण्ड निज की सम्पत्ति हो जाय तब मेरे पास आना। फिर मै देखूँगा कि मै इस विवाह के सम्बन्ध मे क्या कर सकता हूँ। बेचारा ह्विगी यह सुनकर उदास हो जाता था और लारा के पास जाकर अपना दुखडा रोता था। किन्तु लारा उसे धीरज देती रहती थी।

एक दिन हालेण्ड पार्क की ओर जाते हुये, जहाँ कि मर्टन वश रहता था, वह एलन ट्रीवर नामक अपने एक मित्र के यहाँ जा पहुँचा। ट्रीवर एक चित्रकार था। उसमें असाधारण प्रतिभा थी। देखने मे तो वह अत्यन्त कुरूप था। उसकी दाढी भी बड़ी भद्दी थी। किन्तु जिस समय वह अपने हाथ मे ब्रुश उठा लेता था तो वह सच्चा मास्टर मालूम देता था। ट्रीवर को सर्वोत्तम तसवीरों की बहुत आवश्यकता थी। सम्भवत इसीलिये वह ह्विगी को पहले चाहने लगा था क्योंकि ह्विगी देखने मे बहुत सुन्दर था। ट्रीवर कहा करता था:—"एक चित्रकार को केवल उन्ही मनुष्यो के जानने की आवश्यकता है जिन्हें देखते ही मन लुभा जाय और जिनका नाम लेते ही आनन्द आने लगे। जो स्त्री पुरुप सुन्दर हो और जिन्हे लोग प्यार करते हो वे ही दुनिया पर शासन करते हैं या कम से कम उन्हीं को शासन करना चाहिये।"

ट्रीवर जब ह्विगी को अच्छी तरह जान गया तब तो वह उसके हँस-मुख स्वभाव, प्रफुल्लित और उदार तथा निःचेष्ट प्रकृति के कारण भी उसे वैसा ही चाहने लगा जैसा वह उसकी सुन्दरता पर मुग्ध था। उसने

उसे आज्ञा दे रक्खी थी कि जब उसका जी चाहे वह उसके चित्रागार मे आ सकता है।

जिस समय ह्विगी भीतर आया उसने ट्रीवर को एक भिखारी के आदम-कद चित्र को बनाते हुये पाया। स्वय भिखारी चित्रागार के कोने मे एक ऊँचे तख्त पर खडा हुआ था। वह बिलकुल बुड्ढा आदमी था। उसके मुख-मण्डल से दीनता टपकती थी। उसके कधे पर एक बडा पुराना खाकी लबादा पडा था जो चारों ओर फटा था। उसके भद्दे बूट कई जगह गठे हुये थे, उसका एक हाथ एक मोटी सी टेढी लकडी पर टिका हुआ था और दूसरे हाथ मे वह अपनी फटी हुई टोपी लिए हुये था जिसे उसने भीख के लिये आगे बढा रक्खा था।

ज्योंही ह्विगी ने अपने मित्र से हाथ मिलाया उसने उससे कहा—‘ क्या ही विचित्र नमूना है” !

ट्रीवर बडे जोर से चिल्ला उठा —“विचित्र नमूना ! हाँ है तो ऐसा ही, किन्तु ऐसे भिखारी प्रति दिन नहीं मिलते। मेरे बडे भाग्य थे जो वह मुझे मिल गया।”

ह्विगी ने कहा—“बेचारा बुड्ढा बडा दुखी मालूम देता है। मैं समझता हूँ कि तुम (चित्रकार) लोग तो उसके चेहरे ही को उसका भाग्य समझते हो।” ट्रीवर ने उत्तर दिया—“बिलकुल ठीक, क्या आप समझते हैं कि किसी भिखारी को बहुत प्रसन्न दिखाई पडना चाहिये ?”

ह्विगी एक आराम कुर्सी पर बैठ गया और पूछा—“एक मनुष्य को किसी आदर्श रूप मे एक बार बैठने के लिए क्या मिलता है ?”

“एक शिलिंग प्रति घण्टा।”

“और क्यों एलन ! तुम्हे एक चित्र का क्या मिलता है”

“मुझे तो एक चित्र के लिये दो हजार मिलते हैं।”.

“पौण्ड”

“गिन्नियाँ। क्योंकि चित्रकारों, कवियों और डाक्टरों को तो गिन्नियाँ ही मिलती हैं।”

ह्यिगी ने हँस कर कहा— ,तब तो आदर्श बनने वाले आदमी को प्रति सैकड़ा कुछ मिलना चाहिये। क्योंकि उन्हें भी उतना ही अधिक परिश्रम करना पड़ता है जितना तुम्हें।"

"मूर्ख! अरे जरा चित्र की जमीन बनाने ही के कष्ट को देखो, सारे दिन पञ्जों के बल खड़ा रहना पड़ता है। तुम्हारी तरह बात करना तो बड़ा सरल है परन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे कार्य मे शारीरिक परिश्रम की अत्यन्त आवश्यकता है। बस आप बकबक न कीजिये। मुझे बड़ा आवश्यक काम करना है। आप सिगरेट पीजिये और कृपया चुप रहिये।"

थोड़ी देर बाद नौकर ने आकर ट्रीवर से कहा कि चौखटा बनानेवाला आया है और आपसे कुछ बात करना चाहता है।

वह उठ कर चल दिया और ह्यिगी से कह गया कि देखो भाग न जाना। मे अभी एक मिनट मे आता हूँ।

ट्रीवर की अनुपस्थिति से उस भिखारी को अवसर मिल गया कि कुछ देर विश्राम करले। इस लिये वह अपने पीछे पड़ी हुई एक बेंच पर बैठ गया। उसको महान दुःखी और अनाथ देख कर ह्यिगी को उस पर बड़ी दया आई और उसने अपनी जेब टटोली। देखा तो कुछ पैसे और एक गिन्नी थी। उसने सोचा, यह बेचारा बड़ा गरीब है। उसे मेरी अपेक्षा इस गिन्नी की अधिक आवश्यकता है। वह उठा और उसके पास जाकर चुपके से उसके हाथ मे गिन्नी दे दी।

बुड्ढा देख कर चौंक पड़ा और उसके मुर्झाये हुये ओठों पर एक मन्द मुसक्यान की रेखा दौड़ गई।

बोला—"महाशय! आपको कोटिशः धन्यवाद।"

इतने ही मे ट्रीवर आ गया ह्यिगी अपने कृत्य पर कुछ झेंपा और तुरन्त विदा हो गया। वहा से चल कर वह लारा के पास गया और उससे सारा हाल कह सुनाया। लारा ने उसकी इस अमितव्ययिता पर उसे बहुत डॉटा। सारी डॉट-डपट सुन कर दिन भर के बाद शाम को वह अपने घर पहुँचा।

रात को लगभग ग्यारह बजे वह पैलेट क्लब मे गया और वहाँ देखा कि ट्रीवर अकेला बैठा एक कमरे मे कहवा पी रहा है।

अपना सिगरेट जला कर उसने पूछा—"क्यों भाई एलन, क्या तुमने वह चित्र बिलकुल तैयार कर लिया ?"

ट्रीवर ने उत्तर दिया—"हाँ, तैयार भी कर लिया और उसमे चौखटा भी जड़वा लिया। अरे यार ! तुमने आज एक बड़ी विजय प्राप्त कर ली। जिस बुड्ढे आदमी को आदर्श रूप मे भिखारी बने देखा था वह तो तुम्हारा बड़ा ही भक्त हो गया है। मुझे तुम्हारा सारा हाल उससे कहना पड़ा, अर्थात्, तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, तुम्हारी आय क्या है, और भविष्य मे तुम्हारा········"

"अरे भाई एलन ! तुमने यह क्या किया ? शायद घर पहुँचने पर मै उसे वहाँ बैठा हुआ प्रतीक्षा करते पाऊँ। बेचारा बुड्ढा दुखी था। मेरी इच्छा होती थी कि मै उसके साथ कुछ उपकार करूँ। यह बड़ी भयकर बात है कि लोग इतना दुखी रहते है। मेरे पास घर पर बहुत से पुराने कपड़े हैं। क्या तुम्हारी समझ मे वह उनमे से एक-आध लेना पसन्द करेगा ? उसके चिथड़े तो बिलकुल गूदड़ ही थे।"

ट्रीवर ने कहा—"किन्तु, उन्हीं कपड़ों ही से तो उसका रूप दिखाई देता था। यदि वह एक सुन्दर कोट पहिने होता तो मै किसी तरह उसका चित्र न बनाता। जो तुम्हारी दृष्टि मे चिथड़ा है वही मेरी दृष्टि मे चित्र है। जिसे तुम दरिद्रता समझते हो वह मेरे लिये द्रव्य है। ख़ैर, मै आपकी यह उदार इच्छा उस पर प्रकट कर दूँगा।"

ह्विगी ने गम्भीरता से कहा—"तुम चित्रकार लोग बड़े हृदयहीन होते हो।"

ट्रीवर ने उत्तर दिया कि "एक चित्रकार के लिये तो उसका मस्तिष्क ही उसका हृदय है। इसके अतिरिक्त हमारा काम तो यह है कि जिस प्रकार हम ससार को देखे उसी प्रकार उसका अनुभव करे, यह नही कि जैसा हम उसे समझते हैं उसी प्रकार उसे सुधारने का प्रयत्न करे। अब कृपया यह बतलाइये

कि आपकी लारा कैसी है, क्योंकि उस बुड्ढे को आपकी लारा के सम्बन्ध मे बातें जानने की बड़ी उत्सुकता थी ।"

ह्विगी ने कहा, "तुमने उससे लारा का हाल तो नही कह दिया ।"

"मैने तो सब कह दिया । अब वह कर्नेल, प्यारी लारा तथा दस हजार पौण्ड आदि समस्त बातों से भली भॉति परिचित हो गया है ।" ह्विगी ने क्रोध से लाल मुँह करके कहा कि "तुमने उस बुड्ढे भिखारी से मेरा निजी हाल क्यों कह दिया ?"

ट्रीवर ने मुसकरा कर उत्तर दिया कि "भाई ! जिसे आप बुड्ढा भिखारी कहते है वह योरूप का बड़ा भारी मालदार आदमी है। यदि वह चाहे तो कल ही सारे लण्डन को मोल ले सकता है और ऐसा करने मे उसे बैंक की भी सहायता न लेनी पड़ेगी। प्रत्येक राजधानी मे उसका एक घर है । सोने के बर्तनो मे वह भोजन करता है और जब चाहे तब रूस का लड़ाई आरम्भ करने से रोक सकता है ।"

ह्विगी बोल उठा कि "तुम्हारा मतलब क्या है ?"

ट्रीवर ने कहा कि "जो कुछ मै कहता हूँ वही मेरा मतलब है । जिस बुड्ढे को कल तुमने मेरे चित्रागार मे देखा था वह बैरन हासबर्ग है। वह मेरा बड़ा मित्र है । वह मेरे सारे चित्र खरीद लेता है । उसी की आज्ञा से मैने भिखारी के रूप मे उसका वह चित्र खींचा था । मै तो यह कहूँगा कि वह अपने चिथड़े पहिने हुए—नहीं, नहीं, मेरे चिथड़े पहिने हुए—बड़ा ही सुन्दर मालूम होता था ।"

ह्विगी चिल्ला उठा—"बैरन हासबर्ग ! हे भगवान, मैने तो उसे एक गिन्नी दी थी ।" इतना कह कर वह एक कुरसी पर बैठ गया और ऐसा मालूम होता था कि मानो दुःख की साक्षात मूर्ति था ।

ट्रीवर बड़े जोर से खिलखिलाकर हँसा और कहने लगा कि "तुमने उसे एक गिन्नी दी ! खूब !!"

ह्विगी ने उदास होकर कहा—"एलन ! यदि तुम मुझसे प्रथम ही कह देते तो मै ऐसी मूर्खता कभी न करता ।"

ट्रीवर ने कहा—"ह्विगी, पहिली बात तो यह है कि मेरे ध्यान मे यह बात कभी आई ही नहीं कि आप इस तरह से दान करते फिरते हैं। यह तो मै समझ सकता हूँ कि आप किसी सुन्दर नमूने को इतना पसंद करें कि उसे चूम तक लें। परन्तु किसी बदशकल नमूने को आपका एक गिन्नी देना तो एक विचित्र बात है। नारायण ! नारायण !! दूसरी बात यह है कि सचमुच मैं आज किसी से मिलना ही नही चाहता था। और जब आप आये तो मेरी समझ मे यही न आया कि आपको हासबर्ग का नाम बताना उचित है या नहीं। शायद वह अपना नाम बताया जाना पसन्द न करता, क्योंकि वह अपनी उचित और पूरी पोशाक मे न था।"

ह्विगी ने कहा—"वह मुझे क्या ही बेवकूफ समझता होगा।"

"बिलकुल नहीं। तुम्हारे चले जाने के पश्चात् वह बड़ा ही प्रसन्नचित्त दिखाई देता था। वह खूब हँसता रहा। यह बात मैं समझ ही न सका कि वह तुम्हारा पूरा-पूरा हाल जानने के लिये क्यों इतना उत्सुक था, किन्तु अब मै समझ गया। प्रिय ह्विगी ! वह तुम्हारी गिन्नी को तुम्हारे ही लाभ के लिए अपने किसी व्यवसाय मे लगा देगा और प्रति छमाही मे तुमको उसका व्याज दे दिया करेगा एवं भोजन करने के उपरान्त उसका एक अच्छा वृत्तान्त सुनायेगा।"

ह्विगी ने कहा—"मैं बड़ा अभागा हूँ। बड़ी झेंप हुई। अब यही उचित है कि मैं जाकर सो रहूँ। देखो एलन, किसी से इसकी चर्चा मत करना। मुझे तो आज गली मे निकलते झेंप लगती है।"

"पागल कहीं का ! इसीसे तो तुम्हारी उदारता और परोपकारिता मालूम पड़ती है। देखो, जाओ नहीं। बैठो, एक सिगरेट पियो और खूब मन भर लारा की बातें करो।"

परन्तु ह्विगी नहीं ठहरा और सीधा अपने घर को चल दिया। वह बड़ा उदास था। परन्तु, एलन ट्रीवर खूब हँसता रहा।

दूसरे दिन जिस समय ह्विगी बैठा जलपान कर रहा था उसके नौकर ने

आकर एक कार्ड दिया । उस पर लिखा था—"मानसियर गस्टे वनाडिन, बैरनहासवर्ग"

ह्निगी ने अपने मन मे कहा कि शायद वह क्षमा प्रार्थना करने आया है । उसने नौकर से कहा कि उसे भीतर ले आओ । एक बुड्ढा भला आदमी जिसके बाल सफेद थे और जो सोने की ऐनक लगाये था, कमरे मे प्रविष्ट हुआ, फरासीसी भाषा मे कहने लगा—"क्या मुझे मानसियर असंकिन से वार्त्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।"

ह्निगी ने झुक कर उसे प्रणाम किया । उस आदमी ने कहा—मै बैरन हासवर्ग के पास से आया हूँ और बैरन—"

ह्निगी बीच ही मे बोल उठा—'उनसे आप मेरी बहुत-बहुत क्षमा प्रार्थना कीजियेगा ।" उस बुड्ढे आदमी ने मुसकरा कर कहा - बैरन ने मुझे आपके पास यह पत्र लेकर भेजा है"—इतना कह कर उसने एक मोहर लगा हुआ लिफाफा उसके सामने रख दिया ।

उसके ऊपर लिखा था—"एक बुड्ढे भिखारी की ओर से ह्निगी असंकिन और लारा मर्टन को विवाह-संस्कार की भेंट ।" लिफाफे के भीतर दस हजार पौण्ड का एक चेक था ।

उनके विवाह के समय एलन ट्रीवर उनका साक्षी बना और विवाह की जेवनार मे एक व्याख्यान दिया ।

एलन ट्रीवर ने कहा—"करोड़पति तो योंही कम होते है परन्तु आदर्श करोड़पति तो बहुत ही कम होते है ।"

———

अमीरों के लिए क़ानून

रूबन और इसहाक़ दो सहोदर भ्राता थे। वे दोनों एक दिन अपने किसी सम्बन्धी की मुर्दनी मे गए। लौटते समय दोनो को भीगी घास पर चलना पड़ा, क्योंकि मूसलाधार पानी बरस रहा था। दैवयोग से रूबन को बड़े जोर से एक छींक आई। उसके पश्चात् कुछ खाँसी भी आ गई।

वह चिल्ला उठा—यह देखो, 'रेबिका' ने इससे सचेत रहने के लिए मुझसे पहले ही कह दिया था। ये मुर्दनियाँ बड़ी खराब होती है ?

मानो अपने भाई से सहानुभूति प्रकट करने हो के लिए अकस्मात् इसहाक़ ने भी छींका और उसे भी खाँसी आई। उसने कहा—हत्तेरे की।

कब्रिस्तान के द्वार तक पहुँचने पर उन्हे प्रकट हो गया कि दोनों भाइयों को ठण्ड लग गई है और जुकाम हो गया है। दोनो बराबर छींकते और खाँसते रहे। कब्रिस्तान के दरवाजे पर एक बड़ी बढ़िया मोटरकार खड़ी थी। वह रूबन की थी। यहाँ पर यह कह देना अनुचित न होगा कि सूरत-शक्ल में दोनो भाई बहुत-कुछ मिलते-जुलते थे।

दोनों एक ही प्रकार के शोक-वस्त्र पहने हुए थे। अतएव ऐसा कोई सङ्केत न था, जिससे यह प्रकट होता हो कि इसहाक़ निर्धन था और रूबन बड़ा धनवान। 'नाटिङ्ग हिल' पर इसहाक़ की बिसातखाने की दूकान थी। दूकान के ऊपर ही वह अपनी स्त्री और पाँच बच्चों समेत रहता था। इस दूकान से इतनी आमदनी हो जाती थी कि उनका खर्च चल जाता था। अतएव कुटुम्ब सन्तुष्ट था और आनन्द से रहता था।

रूबन ने लोहे की अँगिया (Corsets) से अपना व्यापार आरम्भ किया था। किन्तु अब तो वह अनेक प्रकार के व्यापार करने लगा था, और इतना धनवान हो गया था कि यदि कोई व्यापार से धन प्राप्त करने की इच्छा

करता था तो उसके सामने रूबन की उपमा दी जाती थी। यहाँ तक कि उसके धन की महानता को स्वीकार करके एक राजनीतिक दल की ओर से उसे 'सर' की उपाधि प्रदान की गई थी। अब वह 'सर रूबन' था।

कब्रिस्तान के दरवाजे पर सर रूबन ने कहा—आओ मैं तुम्हें रास्ते में उतार दूँगा।

ऐ धनी लोगो, जिनके पास मोटर गाड़ियाँ हैं, तुम लोग दूसरों को 'रास्ते मे उतारने' का नाम न लिया करो। या तो तुम उन्हें बिल्कुल अकेला छोड़ दो, या उन्हे उनके घर के द्वार तक पहुँचा दो। यदि तुम्हे दो-चार मिनिट अधिक लगेगे, तो इसमे तुम्हारी कोई हानि न होगी। परन्तु तुम यह नहीं अनुभव करते कि तुम्हारे थोड़ी देर के अतिथि के लिए इससे कितना फर्क पड़ जाता है। तुम्हारे साथ इतनी देर मोटर पर चढने के पश्चात् थोड़ी दूर भी पैदल चल कर घर पहुँचने मे सारा आनन्द फीका पड़ जाता है। सर रूबन स्वभाव से ही 'रास्ते मे उतारने' वाला था। वह नम्र-हृदय और सद्भावना रखने वाला था। जब तक स्वय उसके सुख और स्वतत्रता मे अन्तर न पड़े, तब तक वह उदारता के पक्ष मे था। अतएव उसने अपने भाई इसहाक को 'मार्बल आर्च' के निकट उतार दिया और जैसे बने वैसे अपने घर जाने के लिए छोड़ दिया और स्वय केंसिङ्गटन में अपने प्रासाद तक आनन्द से लुढकता चला गया।

इससे यह न समझना चाहिये कि रूबन अपने भ्राता इसहाक से प्रेम नहीं करता था। वह उससे प्रेम करता था। परन्तु इस समय उसका सारा ध्यान अपनी खाँसी और छींकों की ओर लगा हुआ था। वह बीमारी और कष्ट से बहुत घबड़ाता था और मरने के विचार से भी उसे भय और घृणा थी। अतएव जब उसने अपने भाई को 'मार्बल आर्च' पर उतार दिया, तो समझ लेना चाहिए कि उसने कुछ समय के लिए अपने हृदय से भी उतार या भुला दिया। अपने भवन मे पहुँचते ही उसने अपनी स्त्री को पुकारा। किन्तु तुरन्त उसका प्रत्युत्तर न पाकर उसने ताली बजाई। उसका बावर्ची आया। किन्तु इतने ही मे 'रेबिका' भी आ गई। वह सुघड़ पत्नी थी। उसने

उसे उठा कर लिटा दिया और गर्म पानी की दो बोतलें उसके पास रख दीं। और अपने पारिवारिक डॉक्टर 'सर एङ्गस मेकहीथ' को तुरन्त टेलीफोन से सूचित किया। डॉक्टर मेकहीथ दो घण्टे पश्चात् आए और अपने साथ स्टेथेस्कोप, ट्यूब और अन्य प्रकार के अस्त्र लेते आए। उन्होंने रोगी की नाडी, पसीना, तापमान, रङ्ग-वङ्ग और अन्य बातें देखीं। कई बार उन्होंने "हॉं" और "हूँ" कहा। फिर उन्होंने रेबिका को बुलाया और बोले—"मेरे ध्यान में आता है कि रात को रोगी की सेवा करने के लिए किसी सेविका (नर्स) को बुला लेना चाहिए। रोग का आक्रमण भयङ्कर है।" रूबन को रात भर बेचैनी और बीमारी की चिन्ता रही। और जब उसे नींद लगभग आने को होती थी, तभी सेविका उसे दवा की पुड़िया देने को आ जाती थी। दूसरे दिन सर एङ्गस बड़े तड़के ही आ गए और दिन के लिए एक दूसरी सेविका रक्खी गई। सर एङ्गस ने काफी देर तक रोगी को देखा-भाला। वह कुछ अधिक चिन्तित और असाधारण रूप से गम्भीर दिखलाई दिए अन्त मे उन्होंने सर रूबन से कहा कि, "मुझे आपके 'कौए' (Uvula) के लक्षण अच्छे नहीं दिखलाई देते। यदि आपको कई आपत्ति न हो तो मेरी राय है कि मै इसे अपने मित्र 'सर एलन ब्लेकी' को भी दिखला लूँ।"

सर रूबन ने, जो कि बहुत घबड़ाया हुआ था, तुरन्त इस बात को स्वीकार कर लिया और कहा - "हॉं-हॉं, ठीक है।" तीसरे पहर सर एलन आए। उन्होंने भी अच्छी तरह से परीक्षा की और सर एङ्गस से राय मिला कर इस परिणाम पर पहुँचे कि तकलीफ का मूल कारण 'कौआ' नहीं है, किन्तु 'तालू' (Larynx) है। उस समय सारे लण्डन में 'तालू' को अच्छी तरह समझने वाला केवल एक मनुष्य था और वह थे डॉक्टर 'सर जेम्स वेयर्ड मेकदोइक।' सौभाग्य से सर जेम्स मिल गए और दूसरे रोज प्रातःकाल रोगी को देखने आए। अच्छी तरह देख-भाल कर उन्होंने सर एङ्गस और सर एलन से एक घण्टे तक राय मिलाई। अन्त में सर एङ्गस ने रूबन से कहा कि, "हम लोगों की राय है कि गले मे एक बहुत ही छोटा सा 'चीरा' या 'शिगाफ' लगाया जाय, ताकि आयन्दा कोई खतरा न रहे।" रोगी ने उत्तर

दिया—"हो, ठीक है। ऐसा काम करो कि जिसमें कोई डर न रहे।" सर एङ्गस ने एक बात और कही कि "मुझे किञ्चित शङ्का है कि कहीं आपके फेफड़े पर तो कुछ असर नहीं हो गया। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं अपने मित्र 'सर ब्रायन बगेसली' को एक बार आपका फेफड़ा दिखला लूँ, ताकि शङ्का दूर हो जाए।" सर रूबन ने कहा—"हाँ, ठीक है।" फेफड़ा देखा गया और बिलकुल ठीक निकला। दूसरे दिन सर जेम्स बेयर्ड मेश्दोइक आए और उनके साथ सर एङ्गस तथा डॉक्टर हेक्टर ब्राउन मेकिटाका भी थे जो लण्डन के चीर-फाड करने वाले सबसे उत्तम डॉक्टर समझे जाते थे। वह छोटा सा 'चीरा' सफलता के साथ लगाया गया। जब सर रूबन अच्छे होकर बैठने योग्य हो गए, तब फिर एक दिन सर एङ्गस बुलाये गये और उन्होंने सलाह दी कि "आप एक मास के लिये पहाड़ पर चले जाइये तो आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो जावेगा।" अतएव सर रूबन अपनी प्रियतमा रेबिका के साथ एक मास के लिए पहाड़ पर गये। वहाँ एक दिन धूप में बैठे वह सोचते रहे कि यदि मैं इङ्गलैण्ड में होता, तो न जाने इतने दिनों में कितने रुपये पैदा करता।

लौट कर आते ही सर रूबन नियमानुसार अपने काम पर जाने लगे। परन्तु डाक्टर की सलाह से शाम को शीघ्र ही लौट आते थे। लौटते समय एक दिन अकस्मात् उन्हें अपने भाई इसहाक की याद आई और कहने लगे कि—"हे भगवान, मै इसहाक को तो बिलकुल भूल ही गया।", मुर्दनी के दिन की सारी घटना उन्हें स्मरण हो आई। उनका और इसहाक का गीली घास पर चलना, दोनों को छींके और खाँसी का आना और दोनो का प्रायः एक सी दशा मे होना, यह सब उन्हे याद आ गया। सोचने लगे कि इसहाक की क्या दशा हुई होगी। कहीं वह बीमारी से मर तो नहीं गया? उसके पास तो इतना धन नही था कि बड़े-बड़े डाक्टरों को बुलाता या पहाड़ों की यात्रा करता। हे भगवान, इसहाक पर क्या बीती होगी? यह सोच कर तुरन्त टेलीफोन से उन्होंने अपनी 'कार' मँगवाई और ड्राइवर से बोले कि "नाटिङ्ग हिल पर इसहाक के मकान पर चलो।' वहाँ पहुँच कर द्वार पर घण्टी के सुनते ही इसहाक का सहकारी 'मेयर्स' निकला। उसने सर रूबन

को पहचान लिया और मुस्करा कर उन्हे भीतर ले गया। इसहाक और उसकी धर्मपत्नी 'ईमा' ने रूबन से भेंट की। दोनों बड़े प्रसन्न दिखलाई देते थे। "कहो भाई रूबन, अच्छे हो ?" "कहो भाई इसहाक मजे में हो ?" दोनो मे थोड़ी देर तक इधर-उधर की गपशप होती रही। फिर रूबन बोला—"क्यों इसहाक ! तुम्हे मुर्दनी का वह दिन स्मरण है, जब हम दोनो को एक साथ छींके और खाँसी आई थी ?" इसहाक ने जवाब दिया कि "हाँ, याद तो है। उस दिन जब मैं घर लौटा तब बड़ा परेशान था। ईमा ने मेरे गले मे एक चम्मच डाल कर देखा और बोली—"इसहाक तुम्हारा गला तो बहुत खराब हैं। मालूम होता है कि 'कौआ' लटक आया है।"

रूबन ने पूछा—हाँ, तो फिर तुमने क्या किया ?

"फिर क्या ? ईमा ने मुझे बिस्तर पर लिटा दिया और ठण्डे पानी का एक पलस्तर चढा दिया। फिर उसने मुझे थोडी सी ह्विस्की पिलाई और दूसरे दिन मै बिलकुल चगा हो गया।"

"हे भगवान ! हे ईश्वर !"—कह कर रूबन उसकी ओर बड़े ध्यान से देखने लगा। ठण्डे पानी का पलस्तर ! हे नाथ ! और दूसरे दिन चगा ! जब उसने अपनी बीमारी का विचार किया, तब उसके मन मे सब बातें दौड़ने लगीं। विशेषज्ञ, डाक्टर, सेविकायें, चीरा, पहाड़ो की यात्रा। इन सब मे लगभग बारह सौ पौण्ड खर्च हुये होंगे और अपने काम को छोड़ने से जो हानि हुई वह अलग रही। अन्याय और पक्षपात ! मुझसे भी किसी ने ठडे पानी के पलस्तर का जिक्र अवश्य किया था। यह सब सोच कर वह ईमा के प्रसन्न मुख की ओर देखने लगा। ईमा ने पूछा कि क्यों रूबन ! तुम अभी ठहरोगे और चाय पियोगे ?

रूबन ने बड़े जोर से कई बार अपना सिर हिला कर अपनी स्वीकृति दी। इसलिये नहीं कि वह चाय पीना चाहता था, चाय तो वह पीता ही न था। कमरे मे रसोई का धुआँ आरहा था और कुछ दुर्गन्धि भी आ रही थी। ऊपर छत पर लडके बेतहाशा शोर मचा रहे थे, किन्तु वह जाना नहीं चाहता था। उस समय, उसे यह अनुभव हुआ कि इन लोगों से कुछ शिक्षा मिल सकती है। वास्तव मे वह उनसे कुछ प्राप्त कर सकता है।

सचमुच ठण्डे पानी का पलस्तर ! हे नाथ ! हे भगवान !

———

हीरों की रानी

कर्नल किंगस्टन मर रहे है। उन्हें इस बात का ज्ञान है कि मेरा अन्त समय आ पहुँचा। इसलिए उन्होंने अपनी पुत्री ग्रेस को बुलवा भेजा। जब वह आ गई तब उन्होंने उससे कहा कि बेटी ग्रेस, तुम मेरी पुत्री नहीं हो। बहुत दिन हुए तब तुम्हारे पिता, जो बड़े शिकारी थे, जङ्गली लोगों से लड़ते-लड़ते मर गये। मरते समय वे तुमको मेरे सिपुर्द कर गये।

इतना कह चुकने पर कर्नल ने ग्रेस से कहा कि बेटी जाओ और मेरी डेस्क से चाँदी का एक डिब्बा उठा लाओ। ग्रेस गई और लौट कर उसने देखा कि उतनी ही देर में उसके पिता से भी ज्यादह प्यारे पालक का दम निकल गया। इससे उसे बड़ा दु ख हुआ। किन्तु उसका दुःख बटानेवाला, गिलबर्ट नामक, कर्नल का एक स्वामिभक्त नौकर था। कर्नल के मरने की गड़बड़ी मे ग्रेस डिब्बे को भूल गई। उसे जेम्स हेरिच ने उठा लिया। कर्नल के वंश मे यही एक पुरुष था। परन्तु उसके दुराचरण के कारण कर्नल ने उसे त्याज्य-पुत्र बना रक्खा था। जब उसने डिब्बा खोला तब उसे उसमे एक बड़ा कीमती हीरा दिखाई दिया। उसने उसे तुरन्त अपने पाकेट मे रख लिया और कहने लगा कि अब तो तक़दीर खुल गई। यह विचार कर वह चम्पत हो गया।

जब ग्रेस का शोक कुछ कम हुआ तब उसने जाकर डिब्बे को देखा। वह खाली था, परन्तु उसमें एक पत्र था जिसमें लिखा था कि यह पत्र और इसके साथ का हीरा केवल उनके एक वकील को दिखलाया जाय। वह वकील उस हीरे की खान का ठीक-ठीक पता बतलायेगा जिसको ग्रेस के पिता ने ढूँढा था। हीरे को उस डिब्बे मे न पाकर ग्रेस को शक पैदा हो गया। उसने दास-

दासियों से पूँछताछ की। तब उसे यह पता चला कि हेरिच अभी-अभी किसी अनिश्चित स्थान को चला गया है। अपने स्वामिभक्त नौकर गिलबर्ट को साथ लेकर वह हेरिच की खोज में चल दी। विधाता उनके कार्य्य मे बाधक हुआ। उनके जहाज मे आग लग गई। सब मल्लाह और मुसाफिर अपनी-अपनी जान बचाने के लिए नावो की ओर झपटे। परन्तु इस दौड़ धूप मे प्रायः सभी डूब गये। किन्तु गिलबर्ट बड़ी कठिनाई और परिश्रम से कुछ दूर सहारा देकर और कुछ दूर घसीट कर अपनी मालकिन को किनारे पर लाया। इस कार्य्य में वह स्वय अधमरा हो गया था।

जब वे किनारे पर पहुँचे तब उन्हें एक मछुए की झोंपड़ी ने शरण मिली। लेकिन उनका सारा माल-असबाब समुद्र में डूब गया था। अतएव अब वे हेरिच का पीछा न कर सके। सबसे पहले उन्हे यह चिन्ता हुई कि अपनी जीविका का कोई उपाय निकाले। सौभाग्य की बात यह थी कि ग्रेस ने अपनी फुरसत का समय नृत्यकला सीखने में लगाया था। इस समय यह विद्या उसके काम आई। उसने एक समाचारपत्र मे विज्ञापन पढ़ा कि किसी थियेटर मे एक उत्तम नर्तकी—नटी—की आवश्यकता है। वह उसके मैनेजर के पास गई और उसे तुरन्त नौकरी मिल गई। उसने अपने काम मे बड़ी सफलता प्राप्त की। इससे उस शहर मे हर जगह उसी की चर्चा होने लगी।

उसने अपनी योग्यता और सुन्दरता से काउन्ट आरमण्ड नामक एक युवा और धनी पुरुष के हृदय पर बड़ा प्रभाव पैदा किया। काउन्ट ने उससे जान-पहचान करने की कोशिश की। परन्तु, गिलबर्ट के कारण, पहले उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। क्योंकि गिलबर्ट सदा उसकी रक्षा में तत्पर रहता था। परन्तु अन्त मे उसे सफलता प्राप्त हुई और वह ग्रेस का प्यार दिलोजान से करने लगा। उसे प्रेम का बदला भी मिला अर्थात् ग्रेस भी उस पर प्रेम करने लगी। तब उसने अपना और अपने प्रेम का परिचय दिया। ग्रेस ने उसे स्वीकार कर लिया। जब उसे अपनी प्रियतमा की आश्चर्य्यजनक और विलक्षण कहानी मालूम हुई तब उसने हेरिच का पीछा करने मे ग्रेस और गिलबर्ट की सहायता की। हर प्रकार से वे लोग हेरिच की खोज मे जुट गये और अन्त में

गुप्तचरों के द्वारा उन्हें ऐसी सुगसुग तो लगी, जिससे वे कुछ कार्य्य कर सके। परन्तु विशेष बातें बहुत कम मालूम हुई। हेरिच की जिन्दगी बिलकुल आवारह तौर पर व्यतीत होती थी। उसके साथी बदमाश लोग थे। यह भी पता चला कि उसने बहुत सा रुपया लेकर एक मशहूर अमरीकावासी के हाथ एक हीरा बेचा है।

पहले पहल गिलबर्ट ही को हेरिच का सुराग लगा। किन्तु उसकी कार्रवाई इतनी सीधी-सादी थी कि हेरिच ताड़ गया और चौकन्ना हो गया। वह समझ गया कि गिलबर्ट यहाँ क्यों आया है? उसने कहा—यदि इसे, पकड़वा दूँ तो अच्छा है। क्योंकि जहाँ गिलबर्ट है वहाँ ग्रेस भी अवश्य होगी और ग्रेस का होना मेरे लिए ठीक नहीं। इसलिए उसने गिलबर्ट के नाम से ग्रेस को एक चिट्ठी लिखी कि तुम मुझे अमुक होटल मे मिलो। ग्रेस को तनिक भी सन्देह न था। इसलिए उसने तुरन्त उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उससे मिलने को चल दी। परन्तु चलते समय आरमण्ड के नाम एक पत्र छोड़ गई कि तुम मुझे अमुक होटल में मिलना। होटल तो एक पूरा जाल था, क्योंकि वह हेरिच के साथियों का अड्डा था। ग्रेस पकड़ गई और वह हेरिच की टोली में जिसका नाम "मौत की खोपड़ीवाला फ़ुण्ड" था, पेश की गई। उसने वीरता से अपने पकड़नेवालों का सामना किया।

आरमण्ड को ज्योंही ही ग्रेस का पत्र मिला त्योंही वह उस होटल की ओर चल दिया। दैवयोग से उसे होटल का असली हाल मालूम हो गया और उसने जाकर पुलिस को सूचना दे दी। परन्तु उन बदमाशों को भी इस बात का पता चल गया कि उनका हाल पुलिस को मालूम हो गया है। वे डरे कि कहीं पकड़ न जायँ। ग्रेस उनके पास थी। उसे दूर करना चाहिए। हेरिच ने उसे बेहोशी की दवा सुँघाई और उसे उठा ले गया। इतने मे पुलिस आ गई। ग्रेस का वहाँ पता न था। वहाँ पर केवल उसका एक रूमाल पड़ा मिला।

हेरिच भाग गया और ग्रेस को अपने समुद्र के किनारेवाले मकान मे ले गया। वहाँ उसने ग्रेस के गले के हार में वह काग़ज पाया जो हीरे के साथ डिब्बे मे बन्द था। उस काग़ज को पढ़कर उसे यह मालूम हुआ कि

मैंने एक हीरे के लालच मे आकर एक बड़ी भारी सम्पत्ति खो दी। उसने सोचा कि उस हीरे को फिर प्राप्त करना चाहिए, चाहे इस काम मे सारी सम्पत्ति लग जाय। कुछ दम दिलासा देकर और कुछ भय दिखला कर उसने ग्रेस को अपने साथ अमेरिका चलने को मजबूर किया। जब आरमण्ड और गिलबर्ट बड़ी कठिनाई और दौड़-धूप के बाद समुद्र किनारेवाले मकान पर आये तब उन्होंने देखा कि हेरिच और ग्रेस वहाँ से चले गये थे। ग्रेस जाते समय एक खिड़की पर अपनी अँगूठी से लिख गई थी कि मै कहाँ जाती हूँ। इसी लेख के सहारे उन्होंने फिर पीछा करना आरम्भ किया। उनके मार्ग में अनेक बाधाये उपस्थित हुईं। वे निराश से होते जाते थे। भाग्यवश उन्होंने डाकखाने मे पूछपाँछ की तो आरमण्ड के नाम ग्रेस का एक पत्र मिला। उससे उन्हें सारा हाल मालूम हो गया। हेरिच उस हीरे को फिर से खरीदने का मौका ढूँढ रहा था। तब तक उसने ग्रेस को एक सुनसान मकान मे क़ैद कर रक्खा था। हेरिच की अनुपस्थिति मे आरमण्ड और गिलबर्ट आ गये और उन्होंने अपने घोड़े उस मकान की खिड़की के नीचे लगा दिये। अपनी जान खतरे मे डाल कर वह बहादुर लड़की खिड़की से उतरी और अपने प्रियतम की गोद मे आ गई। वह उसी के घोड़े पर आगे बैठ गई और स्वतन्त्रता, प्रेम और सम्पत्ति की रक्षा के लिए भागना आरम्भ किया। हेरिच ने आकर देखा कि ग्रेस गायब है। उसने तुरन्त अपने सवारों को आज्ञा दी कि सारा मैदान छान डालो। जिस ओर से ग्रेस आई थी उस ओर एक नदी थी। उसमे एक किश्ती भी पड़ी हुई थी। आरमण्ड और ग्रेस नाव पर बैठ कर चल दिये। हेरिच घोड़ा भगाता हुआ आया, परन्तु उसे बहुत देर हो गई थी। वे लोग दूर निकल गये थे, अब उनके पकड़े जाने की कोई आशा न थी। उसने खेल खेला तो था, परन्तु बाजी हार गया। फिर भी वह निराश न हुआ। उसने नदी में अपना घोड़ा छोड़ दिया। परन्तु घोड़ा नदी मे लड़खड़ाया और गिर गया। मालिक घोड़े पर से पानी मे गिर गया। थोड़ी देर मे एक मुर्दे की तरह पानी पर उतराता हुआ दिखाई दिया। ईश्वर के इजलास से न्याय हो गया। आरमण्ड और ग्रेस स्वतन्त्रता और शान्ति के साथ अपना जीवन आनन्द से व्यतीत करने लगे।

जन्म की राजकन्या

महाराज रुपर्ट मेरेनिया देश के राजा थे। उन्हें ताश खेलने का बड़ा शौक था। यही शौक उनके एक बड़े दरबारी को भी था, जिसका नाम था ड्यूक जोरिस। दोनों रोज ताश खेला करते थे। परन्तु ड्यूक इस काम में बड़े निपुण थे। इस कारण राजा उनसे रोज हारा करते थे। अन्त मे वे अपनी प्रजा, अर्थात् ड्यूक, के ऋणी हो गये। इस खिलाड़ी राजा के एक सुन्दर कन्या थी। उसका नाम था स्टेफ्नी। जोरिस उस कन्या के साथ विवाह करना चाहता था। जब उसने देखा कि राजा के ऊपर मेरा इतना ऋण चढ गया है कि वह उसे अदा नहीं कर सकता तब उसने चालाकी से यह बात राजा से कही कि यदि आप स्टेफ्नी को मुझे दे दें तो सब ऋण चुक जाय। राजा ने सोचा कि शायद स्टेफ्नी ऐसे पुरुष से विवाह करने के लिये राजी न होगी। परन्तु ऋण अधिक था और राजा ड्यूक का साथ भी न छोड़ना चाहता था। इसलिये राजा ने इस मतलब से एक दावत की कि कदाचित् उस दावत मे बिचवालो के द्वारा ड्यूक और स्टेफ्नी मे प्रेम हो जाय और उनके विवाह मे कोई बाधा न उपस्थित हो।

लुरेनिया देश के युवराज का नाम पाल था। वह बड़ा वीर था। उसकी सूरत बेरोनी नामक एक प्रसिद्ध गायक से बहुत मिलती थी। इन्हीं दिनों बेरोनी मेरेनिया देश मे राजा की दावत मे गाने के लिए जाने वाला था। परन्तु जिस दिन वह चलने को था उसी दिन उसकी टाँग में चोट लग गई और वह जाने से रुक गया। उसके मित्रों को यह सोच कर बड़ा दुख हुआ कि यदि वह राजा की दावत मे न जायगा तो उसकी बड़ी बदनामी होगी। युवराज भी बेरोनी के मित्रों मे से था। तब युवराज पाल ने एक नई

प्रेमाग्नि से जले जाते थे, उधर स्टेन्नी और पाल के दिन आनन्द से कटते थे। क्योंकि अब वे दोनों नित्य-प्रति गुप्त रीति से मिला और बाग़ बागीचों में घूमा करते थे। दोनों एक दूसरे को खूब प्यार करते थे। अर्थात् "दोनों तरफ से आग बराबर लगी हुई" थी। परन्तु अब तक राजकन्या को अपने प्रेमी की असली अवस्था का ज्ञान न था।

जोरिस को कुछ शक होने लगा। वह गुप्त रीति से राजकन्या की देख-भाल करने लगा। एक दिन उसने राजकन्या को वेरोनी के साथ देख भी लिया। ड्यूक यह न जानता था कि वेरोनी वास्तव मे राजकुमार है। इस लिये जब उसने देखा कि एक साधारण आदमी राजकन्या का प्रेमी बन रहा है, तब उसे बड़ा अचम्भा हुआ। उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उस आदमी को पकड़ लाओ, जो एक साधारण मनुष्य होकर भी, जन्म की राजकन्या से प्रेम करता है। पाल पकड़ लिया गया।

उसके छुटकारे के विषय में जोरिस ने राजकुमारी से कहा कि यदि तुम मेरे साथ विवाह कर लो तो मै उसे छोड़ दूँ। कन्या ड्यूक के दुष्ट स्वभाव से परिचित थी। वह अपने प्रेमी की मुक्ति के लिये बलि-प्रदान होने के लिये राजी हो गई। बड़ी वीरता के साथ उसने ड्यूक से कहा कि यदि आप मेरे प्रेमिक को छोड़ देंगे तो मै आपसे विवाह कर लूँगी।

जिस समय, इधर, ये शर्तें हो रही थीं उसी समय उधर पाल ने, अपने एक रक्षक की तलवार छीन कर और दूसरे रक्षकों को मार कर, अपनी स्वतन्त्रता आप ही प्राप्त कर ली थी। वह वीर पुरुष अपने रक्षकों से बच कर एक गढे के पार कूदने वाला ही था कि अन्य सिपाहियों ने आकर उसकी रस्सी काट दी और वह धड़ाम से गढ़े में जा गिरा। ऊपर से उस सिपाही ने उसके एक गोली भी मार दी। परन्तु इतनी चोट लगने पर भी वह किसी तरह बच कर मेरेनिया में अपने स्थान पर पहुँच गया।

जब जोरिस, राजकुमारी और उसके दास-दासियो ने जेलखाने में जाकर देखा कि बन्दीगृह खुला पड़ा है तब जोरिस बहुत घबराया। उसने चौकीदार को तुरन्त बुलाया। पूछने पर उसे मालूम हुआ कि कैदी भाग गया

है। यह सुन कर स्टेझी बहुत हँसी। उसने सब के सामने कह दिया कि मेरा प्रेमिक स्वयं मुक्त हो गया है। इसलिए जो शर्त मैंने जोरिस से की थी उसे पूरा करने के लिए मै बाध्य नहीं। अब उस इकरानामे को रद समझना चाहिये।

ड्यूक ने जाकर सारा हाल राजा से कहा। राजा ने कन्या को महल में बुलाया और उसकी सगाई की तैयारी की। जिस दिन मँगनी होने वाली थी उसके एक दिन पहले शाम को स्टेझी की दाई ने उसे एक पत्र दिया। यह पत्र दाई को पाल का एक मित्र दे गया था। उसमे लिखा था कि मै अपने घर पहुँच गया हूँ, परन्तु चोट लग जाने के कारण जख्मी पड़ा हूँ।

सवेरे, जब सब लोग मँगनी की तैयारी मे लगे हुये थे, स्टेझी, मौका पाकर, अपने प्रेमी से मिलने के लिये खिसक गई। राजकन्या की खोज होने लगी। जोरिस ने चारों ओर अपने आदमी भेजे। थोड़े से फौजी सिपाही लेकर आप भी एक ओर को चल पड़ा। दैवयोग से उसके कुछ गुप्तचर भी उसे मिले। उन्होंने उसे राजकन्या का हाल बताया। वे बोले कि वह अभी-अभी एक मकान के अन्दर गई है। जोरिस वहाँ गया। उसने राजकन्या और पाल को वहाँ पाया। पाल ने राजकुमारी को एक कोठरी मे बन्द कर दिया और आप तलवार लेकर द्वार पर खड़ा हो गया। जोरिस की आज्ञा पाते ही उसके कई सिपाही पाल पर टूट पड़े। परन्तु उस वीर ने उन सब का काम तमाम कर दिया। जोरिस पर भी वह वार करना ही चाहता था कि जोरिस बोल उठा कि मै एक राज-घराने का मनुष्य हूँ। मै बाजारू आदमी से लड़ कर अपने हाथ न गन्दे करूँगा। पाल समझ गया कि यह दुष्ट इस बहाने बचना चाहता है। उसने कहा कि आपका कहना ठीक है। यद्यपि बेरोनी आप की जोड़ का नहीं, तथापि लुकेनिया का राजकुमार तो आपकी जोड़ का है। आइये, राजकुमार से तो दो-दो हाथ खेलिये। अब जोरिस के लिये कोई बहाना न रहा। उसे मजबूरन लड़ना पड़ा। उधर राजकन्या भी अपनी कोठरी से निकल कर यह द्वन्द्व-युद्ध देखने लगी। क्योंकि उसमे उसके प्रेमी की जान की बाजी लगी हुई थी।

तलवार चलाने में एक से एक बढ़ कर था। दोनों का उद्देश्य स्टेफ़नी को प्राप्त करना था। इस लिये दोनों ही जी तोड़ कर लड़ते रहे। अन्त में पाल की जीत हुई और जोरिस धड़ाम से नीचे गिरा।

उधर राजा को भी सब बातों की खबर लग गई थी। इस लिये वे भी वहीं पहुँचे। परन्तु उन्होंने वहाँ पहुँच कर देखा कि जोरिस मरा पड़ा है। यह देख कर उसके होश उड़ गये। अपने सरक्षकों की सहायता से वे भीतर पहुँचे और हुक्म दिया कि पाल को पकड़ लो। लेकिन ठीक उसी समय पाल का सच्चा मित्र रोडन, जो सदा उसकी मदद करता रहा था, आ गया। उसने सारा हाल कह सुनाया। जब राजा को यह मालूम हुआ तब वह पाल से अपनी कन्या का तुरन्त विवाह करने को राजी हो गया।

बड़ी धूमधाम से उन दोनों का विवाह हुआ। सब लोग बड़े प्रसन्न हुये कि राज्यकन्या को योग्य वर मिला और राजकुमार को योग्य वधू। उधर राजकुमार इस लिये प्रसन्न था कि मैंने ऐसी पत्नी पाई जो मुझ पर राजकुमार होने के कारण नहीं, किन्तु केवल प्रेम के कारण प्रेम करती थी।

मेरा शत्रु

ज्यों ही मै नदी के पास पहुँचा, मैने देखा कि एक लडका कुण्ड में तैर रहा है। वह बिल्कुल नगा था। सिर्फ एक कोपीन उसके गुप्त अगो को ढके थी। वह सीने के बल धीरे-धीरे तैर रहा था और पानी को चीरता जाता था। उसके बालों पर पानी की बूँदे थीं जो कभी-कभी उसके मुँह पर टपक पड़ती थी। वह तैर कर मेरी ही ओर आ रहा था और जिस ओर पानी छिछला था, उसी ओर उसकी दृष्टि लगी थी। किनारे के पास पहुँचते ही वह सीधा हो गया। किनारे पर एक ऊँचा कगार था, अतः उसने ऊपर की ओर देखा। वह तो 'मावर्ट' था। मैने और उसने दोनों ने एक-दूसरे को साथ-ही-साथ देखा। मैने उसे और उसने मुझे पहचान लिया। उसने एक गहरी साँस ली और कगार पकड़ने के लिये अपना हाथ बढाया।

जब वह कगार के सहारे ऊपर चढने का प्रयत्न कर रहा था, मै जल्दी-जल्दी ककड़ जमा कर रहा था। एक-दो सेकेण्ड में मेरे हाथ मे चार ककड़ आ गये। उन्हे मैने अपने बाँये हाथ मे लिया और दाहिने हाथ मे एक और ककड़ उठाया, जो एक मूल्यवान धातु की तरह काफी भारी था। उसे मैंने कस कर पकड़ लिया। अपना हाथ पीछे की तरफ तान कर मैने उससे चिल्लाकर कहा—क्योंकि वह अभी तक चिकनी कगार के ऊपर चढने का प्रयत्न कर ही रहा था, 'जहाँ पर हो वहीं पर रुक जाओ।'

एक सरसरी दृष्टि से उसने अपनी अवस्था पर विचार किया। एक तो नगा और दूसरे चिकने कगार पर तनिक से सहारे से सधा हुआ, वह अपनी रक्षा किसी प्रकार भी नही कर सकता था। उसने इधर-उधर देखा और कहीं भी कोई मार्ग न सूझा। मैने अपना हाथ झुकाया और उसके सिर को ताक

कर दाहिने हाथ वाला कंकड मारा। वह जानता था कि मेरा निशाना अचूक होता है। बस वह पुन पानी मे कूद पडा और मेरी ओर देखते हुये पीठ के बल तैरने लगा।

वह 'मावर्ट' था, मेरा शत्रु। मै क्रोध से कॉपने लगा और ऐसे मौके से उसे पाकर मै अपने मन में खुश भी था। मेरी नाड़ियों का रक्त बड़ी तेजी से प्रवाहित होने लगा, क्योंकि मेरे हाथ में कंकड थे और उसे मै ऐसी निस्सहाय अवस्था में पा गया।

वह तो बिल्कुल श्रीहीन दिखलाई देता था क्योंकि उसके एक ओर तो गहरा पानी था और दूसरी ओर वह चिकनी कगार से घिरा हुआ था। उसकी ऑखों मे ऑसू भर आये, परन्तु वे गडी हुई थी मेरी ही ओर। मुझे उस पर तनिक भी दया नहीं आई। हमारी बचपन की घृणा बहुत पुरानी थी। बीसों बार हम एक दूसरे से लड चुके थे किन्तु कभी भी एक ने दूसरे पर विजय नहीं प्राप्त की थी। मुझे उस रात की घटना याद आ गई जब वह अपने दो साथियों के साथ मुझ पर टूट पडा था।

जब मुझ पर आक्रमण हुआ था, तब रात अँधेरी और गली सुनसान थी। मुकाम था पुल के पास। मै मजे मे चला जा रहा था और मुझे किसी बात की तनिक भी शका न थी। मैने एकदम से सुना कि किसी ने मेरा नाम लिया 'शासो' और एकाएक लकड़ी की चोटें पड़ने लगीं। मै मारे चोटो के चौंधिया गया किन्तु तो भी मैंने हाथ पैर चलाये। किसी के घूँसा जमाया तो किसी के लात जड दी और जो बहुत पास आ गया उसके दाँत से काट खाया। यह सब करते हुये मै पीछे हटता जाता था जैसे कुत्तो से घिर जाने पर एक क्रोधित बिल्ली करती है। दूसरो से मुझे सरोकार न था। मेरी सारी घृणा 'मावर्ट' पर केन्द्रित थी। जब हम दोनों के स्कूलो में, मसलन शनिश्चर को नीम के नीचे लड़ाई होती थी, तो मैं सदा मावर्ट' पर ही अपने निशाने लगाता था। हम ईंट फेंकते जाते थे और अपने शत्रुओं को गालियाँ देते जाते थे।

इन लड़ाइयों मे 'मावर्ट' भी यही करता था और वह सदा मुझी पर निशाना ताक-ताक कर ईंटें मारता था। इन मुठभेड़ों मे ऐसा ही जोश-खरोश रहता था जैसा एक फौज दूसरी फौज पर आक्रमण करने मे दिखाती है।

मैं किनारे पर बैठ गया। वह मेरे बिल्कुल सामने था। किन्तु यदि वह धार मे बहने का प्रयत्न करता था, तो मै अपना हाथ उठा कर उसे डरा देता था। वह पुनः अपने हाथों से तैर कर बिल्कुल नम्र भाव से, और मेरे कंकड़ों से बिना दृष्टि हटाये हुये, अपनी पुरानी जगह पर आ जाता था।

मै अपनी सम्पूर्ण क्रोध भरी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था, मानों मै अपनी दृष्टि से भी उसे चोट पहुँचा सकता हूँ। प्रतिक्षण मेरा गुस्सा बढ़ता जाता था। वह मेरा सबसे बड़ा शत्रु था। हम दोनों एक ही स्कूल मे कभी नहीं पढ़ते थे। हमारे माता-पिता नहीं चाहते थे कि हम एक दूसरे को जानें। मेरे माता-पिता कहते थे कि 'यह लोग ऐसे है, जिनका तनिक भी विश्वास नही किया जा सकता' और उनकी इस घृणा को मै बिना चीं-चपड़ के स्वीकार कर लेता था। हम दोनों की लाग-डाट हमारे दादाओं के समय से चली आती थी। छः वर्ष की उम्र में हम दोनों भी एक-दूसरे से घृणा करने लगे थे। जो कुछ उसके कुटुम्ब का था वह मुझे भयानक मालूम देता था। सड़क के किनारे उनका एक बाग था, मुझे वह बड़ा ही बुरा और बीहड़ दिखलाई देता था, मानों वह एक अस्वाथ्यकर और कीड़े-मकोड़ों से भरा हुआ स्थान था। जहाँ वे रहते थे, मै उस सड़क से होकर कभी निकलता ही न था। उसके पिता की जीविका को भी मै घृणा और सन्देह की दृष्टि स देखता था। वे लोग भी सदा ऐसी ही बातें सोचा करते थे और उनका एक ही लक्ष्य था कि जैसे भी हो हम लोगो को हानि पहुँचायें। हम अपनी घृणा को न्याय्य समझते थे क्योंकि हम जानते थे कि हम पिछले अन्यायों को क्षमा करने और भूल जाने को तैयार थे। किन्तु तो भी हम दोनो कुटुम्बों की घृणा उस समय और भी बढ़ जाती थी जब घर मे कोई नया बालक उत्पन्न होता था और आठ-सात वर्ष की आयु प्राप्त करने पर वे बालक एक-दूसरे से सदा लड़ते रहते थे। दोनों

ओर से सहायक भी मिल जाते थे और उन सहायको मे एक दूसरे से घृणा करने वाले लोग हुआ करते थे ।

मै उसे मौके से पा गया । वह अच्छा तैराक था, किन्तु इस समय वह थकावट के चिह्न प्रकट कर रहा था । कभी-कभी वह पानी के भीतर गोता लगा लेता था और फिर बाहर निकल आता और जो एक आध घूँट पानी उसके मुँह में चला जाता उसे कुल्ला करके निकाल देता था । मैंने उसे क्रोध भरी दृष्टि से देखा, इतने पास से तो मैने उसे कभी देखा ही नहीं था । यथार्थ बात यह है कि मैं ठीक तरह से जानता ही न था कि वह कैसा है । वह मेरी तरह चौदह वर्ष का था । देखने मे उसे सुन्दर तो नही कहा जा सकता था, क्योंकि उसकी शक्ल कुछ ऐसी ही थी, बाल उलझे हुये थे , होंठ लड़कियों जैसे थे और कुछ मोटे भी थे । कद छोटा और रङ्ग भी कुछ मटीला-सा था । उसको ध्यान से देखते ही मेरे शरीर मे घृणा की एक लहर दौड़ गई ।

मैंने उसे ताका और मेरा ईंटा भी तैयार था । मान लो, यदि वह मुझे ऐसे मौके से फँसा हुआ पा जाता, तो बहुत पहले ही मुझ पर ईंट का प्रहार हो चुका होता । उसकी चचल आँखों से मैंने उसके विचार जान लिये । किन्तु उसे प्रयत्न करने दूँ और धार मे बहने दूँ । यदि मै निशाना लगाऊँगा, तो उसके सिर का । यही उसके लिये घातक होगा । और अगर मैंने उसे मार डाला ? अरे, पत्थरों से कोई मरता नहीं है । पानी से बाहर वह निकल ही जायेगा, चाहे उसका सिर फट ही क्यों न जाय । उस दिन रात को उन लोगों ने मेरी ख़ूब मरम्मत की थी, जब मै अकेला था और वे तीन थे ।

'जहाँ पर तुम हो, वहीं पर तुरन्त रुक जाओ' मैंने उससे कह दिया .. 'बस अब अगर तुमने धार मे बहने की हिम्मत की, तो तुम्हारी खैर नहीं है ।'

मैं अपना हाथ तान कर खड़ा हो गया । वह फिर पीठ के बल तैरने लगा । और अधिक पास आ गया वह जाड़े के मारे ठिठुर गया था और ठढक से उसके दाँत खिलौने की तरह कट-कटा रहे थे । मै फिर बैठ गया । और एक बार पुनः उसके चेहरे की ओर देखने लगा । 'सुअर कहीं का । यदि मैं फँस

जाता तो वह मुझे अब तक कभी न छोड़ता। किन्तु इस बार तो मेरी बन आई है। देखूँगा कि बच्चा कैसे बचते है।'

सूरज डूब चला, कुण्ड पर अँधेरा छा गया, पानी स्याही की तरह काला हो गया। 'मावर्ट' अब भी पानी के घूँट कभी-कभी अपने मुँह से कुल्ला करके निकाल देता था। किन्तु अब मैं उसे बिना घृणा के देख रहा था और सोच रहा था कि यह भी एक विचित्र बात है कि मैंने उसे यहाँ घेर लिया है। वह तो मेरी ही तरह तैरता है। वह इस कुण्ड को जानता है। कदाचित् वह यहाँ संयोग ही से आ फँसा हो। उसे कैसे हिम्मत हुई कि वह उसी कुण्ड में तैरने आया जहाँ मैं तैरा करता हूँ? अरे, अगर वह कहीं मुझे घेर लेता, तब तो मेरी ख़ैर न थी।

अब तो ठण्ढक के मारे वह ऐंठा जा रहा था! ठण्ढ के दिनों में बहुत देर तक पानी में रहने से आदमी मर भी सकता है। वह मुझे ताकता ही रहा और ऐसा मालूम देता था कि वह राह देख रहा था कि कोई घटना हो जाय। 'अच्छा, तुम इन्तज़ार कर रहे हो? ख़ूब! मैं तुम्हारी खबर लेता हूँ। इस पत्थर से तुम्हारे सिर या हाथ या शरीर के किसी अंग की मरम्मत किये देता हूँ और तुम्हें पानी के भीतर भेजे देता हूँ।'

मैं खड़ा था और अपने हाथ में पत्थर को घुमा रहा था ताकि उसे ज़ोर से पकड़ लूँ। मै जानता था कि उसे ठीक निशाने पर मारने के लिये कैसे फेंकना चाहिये। पत्थर बहुत अच्छा था, पानी मे पड़े रहने से चिकना हो गया था। इससे तो मै ३० फीट दूर की चिड़िया मार सकता था। सन्न से वह मेरे हाथ से निकला नहीं कि उसकी खोपड़ी भक्क से बोली। ऐसे लोगों को तो साँप की तरह कुचल देना चाहिये और उन्हें चोट करने का अवसर ही न देना चाहिये। उसमें तो मुक़ाबिला करने का साहस भी नहीं है। वह तो भय के मारे सुन्न हो गया है। अगर उसकी जगह पर मैं होता, तो मैं ग़ोता लगा कर और तैर कर कुण्ड के उस किनारे पर पहुँच जाता। उस किनारे पर पहुँच कर मैं भी बहुत से कंकड़-पत्थर इकट्ठे कर लेता...। किन्तु वह तो कुछ करने की बात सोच ही

नहीं रहा है। वह यही कर रहा है कि अपने लड़कियों के से मुखारबिन्द से मेरी ओर देख रहा है। अब मै समझा कि उसका मुँह देख कर मुझे किसका स्मरण हो रहा है। उसकी बहन का, जो उससे बड़ी और सत्रह वर्ष की है। दोनों के ओंठ एक से है।

'मावर्ट' अब बिल्कुल हिलडुल नहीं रहा था, और इस इन्तजार में था कि मै उसे मारूँ। अपने हाथों को तनिक-सा हिलाकर वह पानी पर उतरा रहा था! उसे देखने से तो ऐसा मालूम देता था कि मैंने उसकी कनपटी में ऐसा पत्थर मारा है कि वह बेहोश हो गया है और चित्त पड़ा है। एक क्षण भर तो मै उसे ऐसे ही देखता रहा मानो वह मर गया है, और एक दम सें मैंने अपने बायें हाथ का पत्थर दाहिने में ले लिया और उसके सिर के ऊपर से कुण्ड के दूसरे किनारे पर फेंक दिया और कहा कि 'पानी से बाहर निकलो और यहाँ आओ।'

मेरी बात पूरी भी न हो पाई थी कि वह किनारे पर आ गया। ठण्ढ के मारे वह काँप रहा था और उसके दाँत कटकटा रहे थे। वह कगार के ऊपर चढ कर आया, अपने गुप्त अग दोनों हाथों से ढक लिये और उस झाड़ी की ओर लपका जहाँ वह अपने कपड़े छोड़ गया था। जब तक वह कपड़े पहनता रहा मै कुण्ड की ओर देखता रहा। कुछ क्षणों के पश्चात् मैंने घूम कर देखा और उसे अपनी ओर धीरे-धीरे आने हुये पाया। चलते-चलते वह अपनी पेटी बाँधता जाता था। मालूम देता था कि वह कुछ सोच रहा है। मैं फिर पानी की ओर देखने लगा और मन में सोचता जाता था कि 'बस अब वह मेरे सिर पर पत्थर फेंक कर मारने ही वाला है। वह उसी स्थान पर है, जहाँ पत्थर पड़े हैं। मेरी अपेक्षा उसके आस-पास अधिक ककड़-पत्थर हैं।

जब मैंने घूम कर देखने का निश्चय किया, तो देखा कि वह बहुत ही पास आ गया है। अब उसे थोड़ा-थोड़ा होश-सा आ चला था और उसके चेहरे पर पुनः चमक भी आने लग गई थी। मैंने कहा 'अब तो तुम्हें ठण्ढ नहीं लग रही है।'

'सौभाग्य से मेरे पास फलालैन की कमीज़ है।'

उस घृणा की एक नवीन लहर, जो केवल, 'मावर्ट' ही जाग्रत कर सकता था, मुझमें व्याप्त हो गई। फलालैन की उस कमीज के विचार ही से मुझे कय-सी मालूम देने लगी। उसके सारे कुटुम्बी सदा फलालैन ही पहनते हैं।

वह मेरे पास बैठ गया। मै तनिक पसर गया और उसकी ओर मुखातिब हुआ —

'तुम यहाँ क्यों आये ? तुमको इस कुण्ड मे आने की आज्ञा किसने दी ?'

'मुझे आज्ञा किसने दी ? मै यहाँ बहुधा आता हूँ। यह तो मेरा खास कुण्ड है।'

'तुम्हारा ?'

मै सँभल कर बैठ गया। मैने सोचा, 'उसका खास कुंड ? अभी हम देखेगे !'—तब अकस्मात् मैने कहा —

'तुम्हारा खास कुण्ड ? मुझे यहाँ आते पूरा एक साल हो गया। मुझे इसका पता एक दिन पिछली मई मे लगा था।'

मैने देखा कि अकस्मात् उसकी आँखों से मेरे प्रति घृणा चमकने लगी। मेरी ओर देख कर उसने दाँत किटकिटाये। किन्तु हम दोनों का बराबर जोड़ था। जिस कारण से मैने उछल कर उसका टेटवा नहीं दबाया उसी कारण वह भी रुका रहा। हम एक-दूसरे से डरते नही थे, यह तो एक-दूसरे की प्रतिष्ठा थी। उसने कहा —

'मैने भी इसे पिछले साल खोज निकाला था, मै यहाँ बहुधा आता हूँ। मै इसे अन्य कुण्डों से अधिक पसन्द करता हूँ।'

'इसमे ऊपर से कूदने का कोई अच्छा स्थान नहीं। अन्यथा आस-पास के सब कुण्डों से यह उत्तम होता। इसमे एक चट्टान है, अगर उससे सर टकरा जाय तो खोपड़ी फट जाय।'

मावर्ट मुस्कराया। उसे भी उस छिपी हुई चट्टान का पता था। वह कहने लगा—'हाँ, कूदने का कोई स्थान नहीं है......पर इससे क्या होता है, यह कुण्ड है बहुत अच्छा। इसका पानी भी अच्छा है।'

अतः मावर्ट तालावों और उनके पानी का अन्तर समझता था और उनसे प्रेम करता था।

उसने मेरी ओर सन्देह की दृष्टि से देखा। मै भी उसके रहस्य को समझ गया। हम दोनों चुप हो गये और कुण्ड की ओर देखने लगे। हमारे सिर के ऊपर हवा मे बादल मँडरा रहे थे। अकस्मात् मावर्ट ने पूछा—'तुमने कंकड़ मारा क्यों नहीं ?'

'तुम अकेले और निहत्थे थे।'

'तुम समझते हो कि मैं तुमसे डरता हूँ ?'

'और तुम मेरे बारे में क्या समझते हो ?—मै तुम ऐसे तीन का मुकाबिला कर सकता हूँ।'

वह कुछ थोड़ा सा झेंपा। मैं टस से मस नहीं हुआ, यद्यपि मै उछलने को तैयार था। मैं सोच रहा था—'यदि वह तनिक भी हिला-डुला, तो मैं उस पर टूट पड़ूँगा।' किन्तु वह हिला-डुला नहीं। अन्त में उसने कहा—'तुम मुझसे घृणा क्यों करते हो ?'

'वह तो तुम्हीं हो.... '—मारे क्रोध के मैं आगे बोल न सका। किन्तु तुरन्त ही मैंने कहना शुरू किया '. ...वह तुम हो, जो सब से बुरे . किसने कब ऐसा किया.. . ?'

मानों वह कोई अप्रत्यक्ष-सत्य प्रकट कर रहा हो, उसने सरलता से कहा—'
'तुम्हीं लोगो ने '

'हम लोगों ने ?

'तुम लोग वैसे नहीं हो जैसे हम लोग हैं।' फिर मुझ पर घृणा का आक्रमण हुआ। मावर्ट, उसके मोटे-मोटे होंठ, उसके बाल और उसकी फलालैन की कमीज़ से मैं घृणा करता था। जिस वस्तु से उसका सम्बन्ध था, वही मुझे महा नीच मालूम देती थी। अब वह डर रहा था। यह बात मुझे भलीभाँति दिखलाई दे रही थी। वह कुछ थोड़ा-सा उचका। वह यह भी जानता था कि मैं उससे बलिष्ठ था।

'मैने तुमको इसलिए नहीं मारा कि मै तुमको एक सबक सिखा दूँ। यदि मै चाहता तो तुम्हारे चिथड़े उड़ा देता, समझे। किन्तु मै कुछ बात करना चाहता हूँ। इस तरह से तुम समझ जाओगे कि तुम्हें किससे व्यवहार करना है। हम वैसे नहीं हैं जैसे कि तुम और यह भी सौभाग्य की बात है। हम लोग तुम्हारी तरह पशु या झूठे नहीं है। हम अपने स्कूल में तुमसे ज़्यादा पढ़ते है। मैं तुमसे ऐसे प्रश्न कर सकता हूँ जो मेरी बात को प्रमाणित कर देंगे। उदाहरण के लिये भारत का इतिहास ले लो। बतलाओ चन्द्रगुप्त के पश्चात् हिन्दुस्तान का राज्य किसने किया? हाँ-हाँ, अपना दिमाग खुर्चो, किन्तु इससे तुम्हें सहायता नहीं मिलेगी।'

मावर्ट नहीं जानता था। ऐसा मालूम दिया कि वह रोने वाला है। किन्तु अकस्मात्, उसे कुछ याद-सी आ गई और वह बोला—'बतलाओ ३७५ को २५ से कै बार भाग दे सकते है। जबानी बतलाओ, उँगलियों पर गिन कर नहीं। तुम नहीं बतला सकते, बस।'

अपनी जान की कसम, मैं उत्तर नहीं निकाल सका। अङ्क मेरी आँखों के सामने नाचने लगे। ज़बानी सवाल बताना मेरा मज़बूत विषय नही था।

हम एक-दूसरे को नीचा दिखलाने मे असमर्थ हुये। किन्तु बढने के बजाय इससे हमारी घृणा कमजोर हो गई। मैने बादल की ओर अपना सिर उठाया और जिस ओर से हवा आ रही थी उधर देख कर कहा—यह हवा तो समुद्र की ओर से आरही है। इसका यह अर्थ है कि कल पानी बरसेगा। इतनी बात-चीत के बाद मुझे उससे कुछ-कुछ प्रेम होने लगा। पहली बार वह मुझे एक भला और सच्चा आदमी मालूम हुआ। सचमुच वह मेरे अन्य साथियों—'जीन' या 'मारिस'—की तरह तो नहीं था, तो भी मेरे हृदय में यह विचार उठा कि क्या ही अच्छा होता जो मैं एक बार उसके साथ सैर को जाता और यदि आवश्यकता होती तो हम दोनों एक ही बर्तन से पानी पीते, एक ही थाली में खाते और एक ही कम्बल पर सोते। वह कहने लगा—

'मैं जानता हूँ कि तुम अक्सर पहाड़ों पर सैर को जाते हो। मेरी बहन सदा कहती है कि 'वह बुड्ढा आदमी पहाड़ों का हाल क्या जाने ?'

अकस्मात् मेरा मुँह तमतमा उठा। उछल कर मार्बर्ट का गला पकड़ने की इच्छा को मैंने रोक लिया था। किन्तु मैं यह इच्छा करना कैसे पसन्द कर सकता था कि उसकी बड़ी बहन पर, जो उससे बहुत कुछ मिलती-जुलती थी, टूट पड़ूँ।

'मालूम देता है कि वह तो पहाड़ों के विषय में बड़ी भारी पंडिता है। क्या वह कभी पहाड़ पर चढ़ी भी है ?'

'हाँ, हाँ क्यों नहीं वह मेरे साथ बहुधा जाती है। ज़रा सुनो, मैं अभी साबित कर दूँगा। एक बार जब हम 'लुजेटी' पहाड़ी पर थे, तो हमने तुमको 'कोस्टी' के टीले पर चढ़ते देखा। तुम 'जीन' और 'मारिस' के साथ थे। मेरी बहन ने कहा—'आओ हम लोग उस झाड़ी में छिप रहें, वहाँ कई सूखे पेड़ पड़े हैं' और वहीं से हमने तुमको जाते हुए देखा। मेरी बहन ने कहा—'ये बुलड्डे लोग तो बड़े अच्छे चलने वाले हैं। अरे, ज़रा उनका गाना तो सुनो।' उसका मतलब खास तुमसे था।'

मेरा सारा विचार जाता रहा कि हम शत्रु थे या नहीं। ऐसा मालूम देता था कि हम साथ-साथ पहाड़ों पर घूमे थे और अब उनका स्मरण कर रहे थे।

'हाँ, ठीक है, उस दिन हम 'ऐगोल' की ओर जा रहे थे। सवेरे ही का समय था न ? क्या तुम उसी समय आये थे...?' तुम अपनी बहन से कह सकते हो कि जब कभी भी वह 'कोस्टी' के टीले पर चढ़ना चाहे तो मैं उसे एक घण्टे की छूट देकर भी पकड़ सकता हूँ। उस समय हमें तुरन्त मालूम हो जायगा कि पहाड़ों की सैर कौन कर सकता है......मेरी बात मान लो कि कोई लड़की नहीं कर सकती।'

मार्बर्ट मुझसे सहमत हो गया। उसने मेरे साथ अनुभव किया कि हमारे गाँव के आसपास की कोई भी लड़की—उसकी बहन भी नहीं—हम

लोगों का मुकाबिला नहीं कर सकती है। पुरुषों की दृढता की एक लहर ने हम दोनों को लड़कियों के मुकाबिले में एक कर दिया।

'मैं चाहता हूँ कि एक बार तुम लोगों के साथ चलूँ···तुम देखोगे कि यदि मैं बराबर न चल सकूँ तो···किन्तु पिता जी मुझे आज्ञा नहीं देंगे'

'क्यों? क्या वह तुम्हें हम लोगों से बात भी न करने देंगे?'

करीब-करीब बिना चेतना ही के मावर्ट ने मूड़ हिला दिया। देखने से ऐसा मालूम देता था कि इस रोक से उसे झेंप लग रही थी। अपनी बात को ठीक प्रमाणित करने के लिये वह बोला। 'वह कहते है कि तुम लोगों से कोई भलाई नहीं हो सकती·' फिर चुपके से बोला। 'क्योंकि तुम्हारा कोई धर्म नहीं है।'

'और स्वय तुम्हारे पिता में क्या कमी है जो उनसे कभी कोई भलाई होती ही नहीं?'

मावर्ट ने कहा—'हम लोग इस स्थान के निवासी हैं। हम लोग बड़े मालदार नहीं है। किन्तु मेरे पिता की बेइज्जती करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

अच्छा, वह क्यों··? मै जानता हूँ कि हम लोग यहाँ के निवासी नहीं हैं, पर इससे क्या होता है? क्या हम बड़े मालदार हैं? और यह तुम कैसे जानते हो कि हमारा कोई धर्म ही नहीं है'

'वह सच्चा धर्म नहीं है··'

'तुम खूब जानते हो कि वह सच्चा है कि नहीं। तुम कहते हो कि सुधारकों के गले काले होते हैं और उनके कान उनके सिर में चिपके रहते है···'अच्छा, देखो, तनिक ध्यान से देखो। अरे···मेरी गर्दन काली है, क्या वह काली नहीं है? और स्वयं तुम्हारे कानों का क्या हाल है, वे बड़े सुन्दर हैं, क्यों है न? अच्छा जरा अपने कानों का हाल तो बतलाओ।'

बस हम लोग फिर पुरानी घृणाओं के बीच में आ गये। किन्तु इस प्रकार आपस में बात करते रहने से उन घृणाओं को बनाये रखना असम्भव था। यही तो मावर्ट के विषय में रहस्य था जिसके कारण मैं उसको शत्रु

समझने लगा था। यद्यपि हम दोनों पड़ोसी थे और एक गाँव मे रहते थे; किन्तु हम एक-दूसरे से घृणा करते थे क्योंकि हम एक-दूसरे को जानते न थे।

कुछ थोड़ी-सी और बातचीत होने के पश्चात् मावर्ट खड़ा हो गया। मैं वैसे ही बैठा रहा। मुझे विश्वास था कि वह मुझ पर आक्रमण नहीं करेगा। मेरी ओर न देखकर वह पहाड़ी की ओर ताकने लगा और अन्त मे बोला — 'कहो, साथ-साथ पहाड़ पर चलने के सम्बन्ध में क्या कहते हो? वह जो चोटी दिखाई देती है, उस पर चढना है। मेरे ख्याल में अब तक तो उस पर कोई गया नहीं। क्या उसे देखकर तुम्हे मालूम देता है? क्या उस पर चढ़ने की तुम्हारी हिम्मत नहीं है?'

किंतु इसी बीच मे मैं खड़ा हो गया था। मैंने अपना सिर घुमाकर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और सारी पहाड़ी का नकशा अपने मन में उतार लिया :—

'तुम उस पर नहीं चढ सकते। वह बड़ी ढालू है। इस पर तो एक बकरी का चढ़ना भी कठिन है। यह देखो, उस घास की ओर से चलना होगा और फिर घूम कर दाहिने हाथ की तरफ आना होगा।'

अन्त में हम दोनों को एक-दूसरे को आज़माने का अवसर मिल गया। मैंने पहाड़ी पर चढना आरम्भ कर दिया। मेरे पीछे मावर्ट भी अपना पतलून सँभालता और पेटी कसता हुआ चल पड़ा। मैं सोच रहा था कि—'शीघ्र ही वह मेरी सहायता माँगेगा..... पूरी मंजिल तय करना उसके लिए असम्भव है। मैं तो जीन के साथ दर्जनों बार जा चुका हूँ। किन्तु जब हम बिलकुल चोटी के पास पहुँचे हैं तभी हमारी हिम्मत हार गई है। किन्तु इस बार मै कसम खाता हूँ कि अब की तो चोटी पर पहुँच ही जाऊँगा। और उसे कुछ नीचे ही रुकना पड़ेगा, शायद ५० फीट नीचे......पहली बार हम लोग भी बड़ी मुश्किल से वहाँ तक पहुँचे थे। किन्तु अब मैं समझ गया हूँ कि कैसे चढा जाता है?'

अब हमारी चढाई भी तनिक कठिन हो चली। अब तक का रास्ता आसान था। मैं बढ़ता ही गया। मेरे मन में मावर्ट के विषय में कोई चिन्ता

न थी। हाँ, इतना ध्यान अवश्य था कि जो कंकड़ फिसल रहे हैं, वे उसके मार्ग में अधिक कठिनाई न उपस्थित कर दें, क्योंकि मैं चाहता था कि वह चोटी से ५० फीट नीचे वाली मंजिल तक अवश्य पहुँच जाय। यहीं से मेरी और उसकी परीक्षा शुरू होगी।

मैं तो कङ्करीले, टेढ़े-मेढे और तङ्ग रास्तों को पार करता जाता था, किन्तु मावर्ट की चाल से ऐसा प्रत्यक्ष दिखलाई देता था कि वह उस स्थान से परिचय नहीं रखता था। जब कोई सकरा रास्ता आता था, तो वह इधर-उधर देखने लगता था। कहीं पर अधिक ढाल देख कर वह भयभीत भी हो जाता था और मेरी ओर देखने लगता था। उसकी नाक और मोटे होठों के बीच में पसीना आने लगा, किन्तु उसकी मुद्रा देखकर यह मालूम देता था कि उसका निश्चय दृढ़ है।

एक चौड़े स्थान पर पहुँच कर जहाँ से आगे का रास्ता बहुत संकीर्ण था, उसने मुझसे कहा, 'कहो, थक गये क्या? मुझे तो अब ऊपर चोटी पर पहुँचा ही समझो।'

बस, वह चारों हाथ-पैरों से रेंगने लगा। मैं भी चल पड़ा और उसके पास पहुँच कर उससे बोला कि 'ज़रा एक तरफ हो जाओ और मुझे आगे बढ़ने दो। ५० फ़ीट नीचे वाली मंजिल से काम नहीं चलेगा। हमें तो पहाड़ की चोटी पर पहुँचना है।'

'क्या तुम पागल हो गये हो?' अब हम दोनों उस मंजिल पर पहुँच गये। आगे एक बड़ा भारी दरार था और मार्ग बड़ा तङ्ग तथा फिसलना था। आस-पास हाथ से पकड़ने के लिये घास भी नहीं थी। मावर्ट मुझसे कहने लगा—'आगे जाना असम्भव है...हम दोनों साथ-साथ यहाँ तक आ गये।'

'अच्छा, अब बतलाओ कि तुम्हारी बहन तुम्हारी क्या सहायता कर सकती है?'

दरार का खयाल किये बिना ही मैं आगे बढ़ चला। तनिक-सा मेरे पैर लड़खड़ाये, मैंने अपने हाथ पसार दिये और बैलेन्स करके अपना क़दम

बढाना शुरू किया। एक बार जरा मुड़ कर देखा तो मावर्ट को खड़े हुये पाया। मालूम दिया कि अब वह भी दरारे से भय नहीं खा रहा है। वह मेरी ओर ताक रहा था और जो चीख उसके मुँह से निकलने वाली थी उसे रोके हुए था। मैं अपने कदम को सँभाले हुये और अपनी साँस रोके हुये आगे बढता जाता था और कुछ ही चौड़ी जगह पर पहुँच कर, जहाँ मैं सीधा खड़ा हो सकता था, मैंने एक गहरी साँस ली और चिल्लाकर बोला। 'मैं तुम्हारी बाट जोह रहा हूँ, ओ पहाड़ पर चढने वाले बहादुर।'

मैंने मन मे सोचा कि यहाँ तक मावर्ट नहीं आ सकता और यह सोच कर ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा।

इतने ही मे अकस्मात् मैंने देखा कि एक हाथ हवा मे दिखाई दे रहा है, मेरा शत्रु रेंग कर आ रहा था। आगे उस हाथ को कोई वस्तु सहारे की नही मिल रही थी। मैं पास पहुँचा और बोला,—'मावर्ट! तुम नहीं आ सकते। तुम उधर ही रुक जाओ। आगे तुम्हारे बस का मामला नहीं है।' किन्तु मेरे इतना कहने पर भी वह हाथ इधर-उधर टटोलता ही रहा। तब तो मैंने अपना हाथ बढा दिया और सहारा पाते ही उसकी बाईं टाँग आगे बढ़ी और एक दम से वह मेरी बगल में आकर खड़ा हो गया।

वह बोला—'यह देखो मैं आ गया।'

'आगे इससे भी कठिन रास्ता आने वाला है।'

अब हम ५० फीट नीचे वाली मजिल पर पहुँच कर एक साथ हो गये। आगे का मार्ग बड़ा बीहड़ और भयानक था। नीचे खरक, ऊपर पहाड़ और रास्ता तग।

मावर्ट ने कहा, 'तुम तो पहले यहाँ हो गये हो। पर इससे क्या होता है। ऐसे भी स्थान हैं जहाँ मै पहले हो आया हूँ···।'

'हाँ, यह ठीक है, यहीं तक मैं पहले आया था। मुझे उतना ही पता है जितना कि अब तुम जान गये। इससे आगे मै कभी नहीं जा सका हूँ। जरा ऊपर देखो, वहाँ तक हमें पहुँचना है। मैं कसमियाँ कहता हूँ कि वहाँ तक मैं कभी नहीं गया।'

'अगर अब तक कभी भी तुम इससे आगे नहीं जा सके हो, तो आज भी नही जा सकोगे ! आओ नीचे लौट चले ।'

किन्तु मै तो आगे चल पड़ा । 'जीन' के साथ यदि मैंने बिलकुल चोटी तक पहुँचने का विचार छोड़ दिया था, तो कोई हर्ज नहीं था, किन्तु अब यदि मै अपना विचार छोड़े देता हूँ, तो मावर्ट के सामने मेरी बात हेठी होती है ।

अतः मैंने सरकना शुरू किया । मै सँभल-सँभल कर कदम रखता था किन्तु मार्ग इतना भयानक था कि कही-कहीं पर तो ऐसा मालूम देता था कि बस अगला कदम उठाया कि खदक में गिरा ।

मावर्ट भी पीछे-पीछे आ रहा था । वह मेरे हर कदम को ध्यान से देखता जाता था और ठीक उसी स्थान पर अपना पैर जमा देता था । मैं समझता था वह भी लौटने की अपेक्षा नीचे वाले गड्ढे में गिरना पसन्द करेगा । अब मैं पेट के बल लेटकर खिसक रहा था और वैसे ही पड़े-पड़े मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह भी आ रहा था ।

'चले आओ मावर्ट ! तुम बिलकुल ठीक आ रहे हो ।'

मेरे बहुत ही पास आकर वह एक ऐसे स्थान में फँस गया कि जहाँ से उसका आगे बढना असम्भव-सा हो गया । मैंने उसकी ओर अपने हाथ बढा कर उसको दोनों हाथों से पकड़ लिया । फिर क्या था, वह मेरी बगल में आ पहुँचा । किन्तु वह मुर्दे की तरह पीला पड गया था और उसका सिर चकरा रहा था ।

उस समय मैंने कहा—'मैं जीत गया, मै जीत गया ।'

अब हम खन्दक के पार निकल आये । मुझे बड़ी खुशी हुई । अगर 'जीन' मेरे साथ होता तो हम कभी भी यहाँ तक न पहुँच पाते । मैंने जो ज़ोर मारा, वह इस लिये कि मेरा शत्रु 'मावर्ट' मेरे साथ लगा था । मावर्ट से यह कहने की अपेक्षा कि 'बस अब आगे नहीं जा सकते, मै मर जाना अधिक पसन्द करता था ।'

मावर्ट भी बगैर मेरे यहाँ तक आये हरगिज़ न आता। हमने अपना बाल्यकालीन कौशल और साहस सीमा के बाहर दिखला दिया। हमारे सारे जीवन मे यही हाल रहेगा। मै सदा आगे ही रहूँगा। मै अपने शत्रु मावर्ट से पीछे नहीं रह सकता।

परन्तु अब हम एक प्रकार से मित्र हो गये थे। क्योंकि हम दोनों के रोचक विषय एक ही तरह के थे, जिस बात मे उसे मजा आता था उसी में मुझे भी आनन्द मिलता था। हम दोनों गाँव की एक ही प्रकार की भाषा बोलते थे, एक ही तरह पहाड़ों की सैर करते थे, और एक ही तरह पहाड़ियों पर चढने का साहस करते थे। आज पहाड़ की इस चोटी पर चढ कर हम ऐसे बातें कर रहे थे जैसे कि बचपन में साथ-साथ पले हुये दो मित्रों के लिए ही सम्भव है।

यहाँ पर बैठे हुये हम दोनों कभी अपने बगीचों की बात करते, तो कभी अगूर की बेल का जिक्र करने लगते।

इस प्रकार वस्तुओं और मनुष्यों के विषय मे हम थोड़ी देर तक गप-शप करते रहे। एक-दूसरे की ओर देखकर हम यह समझते थे कि हम दोनों की नसों मे एक ही तरह का ख़ून दौड़ रहा है। मावर्ट, जो मुझसे कद में छोटा था, बड़ा गठीला था और उसके कन्धे चौडे थे। उसका सिर गोल और आँखे नीली थीं। उसकी शक्ल मेरी माँ के बाबा से मिलती थी, क्योंकि मेरे परनाना की तस्वीर अब भी हमारे यहाँ थी। इसके विपरीत मै दुबला और लम्बा था, मेरी ठुड्डी निकली हुई और चेहरा पतला था। मै अपनी आकृति मे अपने पड़ोस के गड़रियों से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

अब क्या बात थी जो हमे एक-दूसरे का शत्रु बनाये रखती। अब हमारे भेद एक-दूसरे से छिपे नही थे। जो वस्तु हमे प्रिय थी, वह हम दोनो साथ-साथ रख सकते थे। अब कोई कारण नही था कि हम एक-दूसरे से दूर-दूर रहें।

इतने ही मे सन्ध्या की शीतल वायु चलने लगी। अतः अब लौटने की बात सोचने का समय आ गया। बस फिर क्या था, हम दोनों सहमत

हो गये और चल खड़े हुये। लौटने में उतनी कठिनाई नहीं मालूम हुई क्योंकि जाते समय हम लोग उस स्थान की हर बात से परिचित हो गये थे।

जब मैदान में आ गये तो हमको दो लड़के रास्ते में अपने खेत से लौटते हुए मिले। वे दोनों हम लोगों को एक साथ देखकर कुछ अचम्भित-से हुए। आगे बढकर एक बुड्ढा मेंड़ पर बैठा हुआ दिखाई दिया। वह तो हमारी ओर ऐसे घूर रहा था, मानो बड़े तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा है। हम दोनों को साथ-साथ चलने में कुछ परेशानी मालूम देने लगी और हमारी चाल भी कुछ धीमी पड़ गई।

बग़ैर मेरी ओर देखे हुए ही मावर्ट ने कहा—'देखो गाँव में पहुँचने के पहले ही तुम मुझसे अलग हो जाओ।'

'अच्छा, क्या मेरे साथ देखे जाने के कारण तुमको शर्म लगती है? अगर तुम पसन्द करते हो, तो मैं हर एक आदमी से कह दूँगा कि हम दोनों एक साथ नहीं हैं।'

जरा-सी हठ के साथ मावर्ट ने कहा कि 'मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ।' इतना कह कर वह तेजी से आगे बढ गया और लगभग १०० कदम मुझसे आगे पहुँच कर फिर अपनी मामूली चाल से चलने लगा। चलते समय वह इधर-उधर ऐसे देखता जाता था, मानों अकेला ही टहलता हुआ चला जा रहा है।

मैं भी पीछे-पीछे चला आ रहा था और उसकी मुझे तनिक भी चिन्ता न थी, और साथ ही मुझे इस बात की भी फ़िक्र न थी, कि मेरे और उसके बीच में जो फासला है, वह बना रहे। अनजान में ही मैं उसके कुछ पास पहुँच गया। इस पर कई बार पीछे देख कर मावर्ट एक बार बिल्कुल घूम गया और मैंने देखा कि मेरी ओर चिल्लाकर वह कुछ कह रहा है। मैंने उसके शब्द तो नहीं सुने किन्तु उसका चेहरा क्रोध-पूर्ण मालूम देता था। मैंने कङ्कड़-पत्थर उठाना शुरू किया और दौड़ कर उसके अधिक पास जाने का प्रयत्न किया—

'अरे तुम आगे जाना चाहते हो, क्यों जी? देखो; इससे तुम्हें सहायता मिलेगी.....।'

मावर्ट भागा। और भागते-भागते उसने दो ईंटें मुझ पर कस कर मारे जो सन्न से मेरे सिर के पास से होकर निकल गये। दाहिने-बायें कूद कर मै बच गया और तनिक रुक कर मैंने भी दो तीन पत्थर फेंक कर मारे। पत्थर फेकते समय मै बिल्कुल कमान बन गया, और मेरे ईंटे के उस ओर पहुँचने के पहले ही मैंने उसे बड़े जोर से चिल्ला कर डॉट बताई। मेरी उस डाँट में थोड़ा-सा पश्चात्ताप का भी पुट था—

'मैं तुम्हें समझूँगा...किसी दिन फिर मिलोगे, तब देखूँगा।'

अन्तिम भेंट

(१)

भूलिहु चूक जो होय कछू,
तेहि चूक की हूक न जात हिये ते।

जेठ-बैसाख की गर्मी है। सूर्यनारायण धीरे धीरे अस्ताचल की ओर जा रहे है। प्रभातचन्द्र की स्त्री कुसुमकुमारी अपने सुनसान महल के सगमरमर के फ़र्श पर बैठी हुई पिछले दिनो की याद कर रही है। वह मन ही मन सोचती थी, "क्या मैं उस समय अधिक सुखी न थी, जब मेरे स्वामी वकीलों की फौज मे केवल रंगरूट थे और हम दोनों एक छोटे से कसबे मे रहते थे। उन दिनों हम लोग अमीर तो न थे, पर साथ ही किसी चीज के लिये हमे किसी का मुँह भी नही ताकना पड़ता था।" उस समय प्रभात की शादी हुये थोड़े ही दिन हुए थे और नवीन दम्पति को प्रेममय आनन्द के अनुभव करने का पूरा अवकाश भी मिलता था। बात यह थी, कि प्रभात कचहरी से बहुधा जल्दी चले आते थे क्योंकि शुरू-शुरू में उन्हें बहुत काम न रहता था। बिरला ही कोई मुवक्किल उनके पास आता था। उन दिनों प्रभात अपनी स्त्री से बड़ा प्रेम करते थे। वे अक्सर कहा करते थे—"यद्यपि हम ग़रीब है पर मुझे इसका कुछ भी दुःख नहीं, क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरे पास एक अनमोल रत्न है।" स्त्री-पुरुष दोनों बड़ी हँसी-खुशी से रहते थे।

उस समय प्रभात की मुख्य अभिलाषा यह थी कि उन्हे इतना धन मिल जाया करे कि उनको किसी बात की कमी न रहे। पर वकालत की बढती के साथ-साथ उनकी अभिलाषाएँ भी बढने लगीं। भाग्य ने सहायता की। पहले जिन अभिलाषाओं का पूरा होना वे असम्भव समझते थे, वे सब

धीरे धीरे पूर्ण होने लगीं। पर उनसे दूनी नित्य नई उत्पन्न भी होने लगीं। शुरू में उनकी यही इच्छा थी कि वे अपने छोटे-से कस्बे मे सबसे बड़े वकील हो जायें। यह भी हो गया, पर इससे उन्हें कुछ सन्तोष न मिला, क्योंकि वहाँ उनको विजय प्राप्त करने का अवकाश न मिलता था। हाईकोर्ट मे वकालत करने की इच्छा से वे राजधानी में जा बसे। मनुष्य के जीवन मे सफलता की लहर एक न एक बार अवश्य आती है। प्रभात का भाग्य अब उदय हुआ। शीघ्र ही प्रभात एक बड़े आदमी हो गये। वे समाज के एक आभूषण और वकीलों के सरदार गिने जाने लगे। दिन भर काम से उनको छुट्टी न मिलती थी। सवेरा होते ही उनके दरवाजे पर मुवक्किलों की भीड़ लग जाती थी। सुबह तो इन्हीं से बातें करने में निकल जाता था। उसके बाद कचहरी और कचहरी के बाद सभा, सोसाइटियों का काम और यार-दोस्तो से मिलना-जुलना रहता था। शाम को घर लौटते लौटते वे बिलकुल थक जाते थे, पर तब भी उन्हें आराम करने का मौका न मिलता था। एक तो वे मुकद्दमे तैयार करते और समय मिलने पर ला-रिपोर्ट और कानूनी किताबें देखते-भालते थे। बहुधा ऐसा होता था कि उन्हें आधी रात तक काम करना पड़ता था। उनका भाग्य तो जग उठा, यश और धन भी यथेच्छ उन्हें मिले, पर उन्हें आराम करने का समय अब न मिलने लगा।

(२)

कुसुम को लोग भाग्यशाली पुरुष की भाग्यवती स्त्री कहते थे। उसे भी ऐसा प्रतीत होने लगा। लेकिन कभी-कभी उसे यह देखकर दुःख होता था कि काम के बढ जाने से दिन बदिन उसके स्वामी उससे दूर होते जाते है। इसीसे वह सोचती थी कि क्या हम उन दिनों अधिक प्रसन्न न थे जब मेरे स्वामी को, एक छोटे से कस्बे में रहकर जीविका के लिये अधिक परिश्रम न करना पड़ता था। वह इसी विचार रूपी समुद्र मे गोते खा रही थी, कि उसका एक छोटा बालक जिसकी उम्र सात साल से ज्यादा न थी, कमरे में दौड़ा हुआ आया और कहने लगा कि "माँ, ललित बाबू आये है।" कुसुम ने चौंक कर पूछा, "क्या ललित आ गया?" ललित उसका दामाद था।

उसकी एकलौती बेटी निर्मला इन्हीं को ब्याही थी। इनके पिता बहुत ही धनवान् थे। वे क्रोधित बहुत जल्दी हो जाते थे। उन्हे अपने पद का बड़ा खयाल रहता था। अभिमानी प्रभात को बहुधा उनके आगे गर्दन नीची करनी पड़ती थी। रईस पिता अपने पुत्र को सम्बन्धियो के निमंत्रण को स्वीकार करने की आज्ञा बहुत कम देता था। परन्तु आज क्या कारण है कि ललित बिना बुलाये ही अचानक आ उपस्थित हुये। कुसुम बहुत प्रसन्न हुई। पर उसकी ख़ुशी बिजली की तरह चमक कर तुरन्त ही विलीन हो गई। ज्योंही उसे अपनी वर्त्तमान अवस्था की याद आई, त्योंही उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने लम्बी ठडी सास भरी। फिर कुछ सम्हल कर उसने अपने बेटे से ललित बाबू को कमरे मे ले आने के लिए कहा। कुसुम दामाद के आने की बात सुनते ही क्यों चौकी और फिर वह क्यों सूख गई ?

(३)

जवानी के दिनों में प्रभातचन्द्र की सबसे बड़ी अभिलाषा यह थी कि सिविल सर्विस या बैरिस्टरी की परीक्षा में शामिल होने के लिए एक बार वे इङ्गलैंड जरूर जायँ। लेकिन ग़रीबी के कारण लोग दुनियाँ मे बहुत सी इच्छाओं को पूरा नही कर सकते है। इसी दरिद्रता के कारण प्रभात विलायत-यात्रा न कर सके। गये या न गये, पर उनको विलायती रहन-सहन का ढङ्ग और विलायती रस्म-रिवाज बहुत पसन्द थे। उनके लड़के अङ्गरेजी लिबास में रहते थे, और उन्होंने अगरेजों के बालकों के साथ अगरेजी स्कूलो मे शिक्षा पाई थी, यहाँ तक कि निर्मला भी एक ऐसे ही स्कूल मे पढाई गई थी और उसके सब आचार-विचार अंगरेजी तर्ज के थे।

प्रभात बाबू बाल-विवाह के दोषों को अच्छी तरह समझते थे। इसीलिए जहाँ तक हो सका वहाँ तक वे अपनी कन्या के विवाह के सम्बन्ध मे अपनी स्त्री का बराबर विरोध करते रहे, आखिर चौदहवे साल निर्मला का विवाह हो ही गया।

प्रभात के जीवन की यह सबसे बड़ी भूल थी, जिसके लिए उन्हें जन्मभर दुःख रहा। पर बात यह थी कि जब उन्होंने देखा कि कन्या का विवाह एक

धनवान् और प्रसिद्ध घराने के लड़के के साथ होता है तब उनसे न रहा गया और चट से उन्होंने ललित के साथ उसका विवाह कर दिया। यह उन्होंने न सोचा कि मेरी लड़की को कैसी शिक्षा मिली है? प्रभात जितने अंगरेजी चाल-ढाल के ग़ुलाम थे, उतने ही कट्टर हिन्दू ललित के पिता थे। ये समाज के प्रसिद्ध आदमियों में थे और इनकी बड़ी इच्छा थी कि वे किसी तरह रईस बन जायँ। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए इन्होंने ऐसे कामों में रुपया खर्च करना शुरू किया, जिनमे सरकारी अफसरों का हाथ था। इन्हें रायबहादुरी इनाम मे मिली, और थोड़े ही दिन बाद राजा की उपाधि प्राप्त हुई। अपने पड़ोसियों को ये बहुत नीच समझते थे। इसीलिए इन्होंने अपना घर सबसे ऊँचा बनवाया था। और प्रभात के घर मे यह कहला भेजा कि निर्मला इनकी आज्ञा बिना कहीं किसी के घर नेवते में न भेजी जाय।

इसी आज्ञा का उलङ्घन आज कुसुम ने किया था। निर्मला को उसने प्रभात के एक दोस्त के घर निमत्रण मे भेज दिया और इसका जिक्र अपने पति से न किया। वह समझती थी कि एक-दो घटे में वह लौट आवेगी। पर कौन जानता था कि उसी समय एक ऐसी अनहोनी बात हो जायगी, जो सदा के लिए कुसुम के जीवन मे रग का भग कर देगी? कौन जानता था कि उसी दिन ललित भी उसी जगह निमन्त्रण मे जायगा? इसीलिए जब उसने सुना कि दामाद आया है तब उसका मुख पीला पड़ गया।

अब भी कुसुम को वास्तविक अवस्था का ज्ञान न था। उसी निमन्त्रण में ललित भी बुलाया गया था, जिसमे उसने निर्मला को भेजा था। ज्योंही उसने अपनी स्त्री को एक गाड़ी से उतर कर जनानखाने मे जाते देखा, त्योंही वह अपने श्वसुर के घर गया, जिसमे उसे अपनी बात का पूर्ण विश्वास हो जाय। ललित प्रभात के घर पहुँच कर देर तक नहीं ठहरा और बहुत शीघ्र ही वहाँ से चल दिया। उसे विश्वास हो गया कि निर्मला घर मे नहीं है। क्योंकि यदि वह घर मे होती तो दोनो मे भेंट अवश्य ही होती, और जब वह घर से बाहर निकलने लगा तब उसने अपने छोटे साले से पूछा कि तुम्हारी बहिन कहाँ है? उस भोले लड़के के जवाब ने उसके विश्वास को पक्का कर दिया।

(४)

झट से गाड़ी में बैठकर, ललित ने गाड़ीवान को आज्ञा दी "घर ले चलो"। कुसुम अपने दामाद की चाल-ढाल को एक खिड़की से देख रही थी। उसने छोटे पुत्र का उत्तर भी सुन लिया था। अब वह अपने अनुचित कार्य का परिणाम सोचने लगी। उसका सिर घूमने लगा। यदि पहाड़ों पर सफ़र करते हुए एक पथिक को अँधेरी रात मे, बिजली की चमक से, यह मालूम हो जाय कि वह एक बड़े गहरे गढ़े के ऊपर एक चट्टान के बिलकुल किनारे पर खड़ा है तो जिस तरह से वह पथिक अपना विकट सकट अनुभव करता है, वही अवस्था आज कुसुम की है।

ललित अपने घर आया और कपड़े बदल कर अपनी माता के पास गया। उससे सब वृत्तान्त कहा। उस दिन उसके पिता, राजाबहादुर को तीसरे पहर एक बड़े अफ़सर से मिलने के लिए जाना था। इस कारण उन्होंने गाड़ीवान को आज्ञा दे दी थी कि "ज्योंही ललित लौटे, तुरन्त मुझे खबर कर देना क्योंकि मै उसी गाड़ी मे सवार होकर जाऊँगा।" जहाँ ललित गया था वह घर बहुत दूर न था। परन्तु गाड़ीवान ने आकर कहा कि घोड़े बहुत थक गये है इससे उन्हें अब धूप मे अधिक तग करना ठीक नहीं। यह सुनकर राजा बहादुर को बड़ा आश्चर्य हुआ और पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि ललित अपनी ससुराल गया था। गाड़ीवान को आज्ञा दी कि "अच्छा, दूसरी जोड़ी जोतो" और अपने ख़िदमतगार से कहा कि मेरे पुत्र को यहाँ बुला लाओ। नौकर ने आकर खबर दी कि ललित अपनी माता के समीप गये है। यह सुन कर राजा-बहादुर भी वहीं चले गये।

ललित की माता ने सब वृत्तान्त सुनकर कहा "हाँ ··है।" इस वार्ता के समाप्त होते ही राजाबहादुर ने कमरे मे प्रवेश किया और अपने पुत्र से पूछा कि "तुम बिना बुलाये अपने श्वसुर के यहाँ क्यों गये थे?" ललित की माता ने अपने पति से सारा वृत्तान्त कह सुनाया और बधू के माता-पिता के अनुचित कार्य्य पर कड़ी टीका भी कर दी।

राजाबहादुर बहुत दिनों से देख रहे थे कि मेरे पुत्र को अपने उच्चपद का बिलकुल ज्ञान नहीं परन्तु आज उनको बहुत हर्ष हुआ कि उनका पुत्र अपने पद के महत्व से अनभिज्ञ नहीं है, बल्कि उसे अपने पद का बहुत ध्यान है, और उन्हें आशा होने लगी कि यदि पुत्र उनके ही मार्ग पर चला गया तो वह अपने कुल की प्रतिष्ठा और भी अधिक चमका देगा। उसने प्रभातचन्द्र को एक पत्र लिखा और तत्पश्चात् एक अंग्रेजी अधिकारी को सलाम करने के लिए गया और रास्ते में अपने एक मात्र पुत्र की भावी कीर्ति का विचार करने लगा।

(५)

कुसुम डरती थी कि कहीं उसका पति उससे अप्रसन्न न हो जाय। परन्तु अप्रसन्नता ऐसी जगह से उत्पन्न हुई, जहाँ उसकी कुछ भी सम्भावना न थी। जब प्रभातचन्द्र कचहरी से आये तब उन्होंने राजाबहादुर का पत्र अपनी मेज पर पाया। उस पत्र का आशय यह था कि राजाबहादुर को प्रभात के व्यवहार से बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्होंने प्रभात को कई दफा मना कर दिया था कि वह राजा की पुत्रवधू को राजा की आज्ञा बिना किसी के निमन्त्रण में न भेजें। उन्होंने बहुत जोर देकर लिखा था कि प्रभात की कन्या का पद राजा के पुत्र के साथ विवाह होने के कारण, बहुत बढ़ गया था, और उसने समाज में इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी, जो उसके माता-पिता के लिए प्राप्त करना असम्भव था। पत्र के अन्त में उन्होंने प्रभात से पूछा था कि "तुमने जो यह अनुचित कार्य किया है उसका क्या जवाब देते हो?" उसने अपनी पुत्रवधू के पिता को यह भी लिखा कि "यह उचित होगा कि मैं अपने पुत्र के ससुराल से सम्बन्ध तोड़ दूँ।"

प्रभातचन्द्र ने पत्र पढ़कर अपनी बड़ी मानहानि समझी। क्रोध के मारे उस की हालत एक आक्रमण किये गये गैंडे के समान हो गई। यदि ऐसा अपमानजनक पत्र न मिला होता तो शायद वह अपनी स्त्री के अपराध को एक साधारण भूल समझ कर उसकी ओर कुछ ध्यान भी न देता। परन्तु अब तो

बात का बतगड़ हो गया। उसने सारा अपराध राजाबहादुर के मत्थे मढ दिया, और उनके पत्र का उत्तर इस प्रकार लिखा :—

प्रियवर राजाबहादुर !

"मैंने आपका सभ्यता से भरा हुआ पत्र पाया। मैं इस बात को अनावश्यक समझता हूँ कि मैं अपने व्यवहार का आपको कारण बताऊँ। मैंने ऐसी किसी शर्त पर अपनी पुत्री का विवाह नहीं किया था। मैने अपनी पुत्री को अपने मित्र के यहाँ निमन्त्रण मे भेजा था। वे आपसे किसी तरह प्रतिष्ठा में कम नही हैं, और कोई सज्ञान मनुष्य उन्हें आपसे कम न समझेगा। आपको अपने धन और उपाधियों का घमण्ड है। जितना धन आपने इन उपाधियों के प्राप्त करने मे खर्च कर दिया है, मै भी उतना ही धन किसी शुभ कार्य में खर्च कर सकता हूँ। परन्तु यह मै अपने गौरव की अप्रतिष्ठा समझता हूँ कि हर एक सरकारी कर्मचारी की हजूर बरदारी करूँ और उनकी कृपा का काङ्क्षी बनूँ। आपने अपने पत्र मे लिखा है कि आप अपने उन सब सम्बन्धियों से सम्बन्ध तोड़ देंगे। इसके जवाब मे मै आपको यह उत्तर देता हूँ कि मैं आपकी उन उपाधियों पर लात मारता हूँ, जिनके पाने के लिए आपने अपना वह अधिकार नष्ट कर दिया है, जो हर मनुष्य को प्राप्त है। आप डराते हैं कि आप मुझसे कोई सम्बन्ध न रक्खेगे। मुझे कोई कारण नहीं प्रतीत होता है कि मै इसके लिए कुछ शोक करूँ। एक सभ्य मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी ऐसी असभ्यता के लिये, जैसी आप के पत्र में मौजूद है, क्षमा मॉगे। यदि बहुत शीघ्र आप क्षमा-पत्र नहीं भेजेगे तो मुझे मजबूर होना पड़ेगा कि भविष्य में मै आपसे कोई पत्र-व्यवहार न करूँ।"

जब राजाबहादुर ने अपने पत्र के उत्तर मे यह पत्र पाया तब तो उनके क्रोध की सीमा न रही, और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मै अपनी पुत्र-वधू को कभी नहीं बुलाऊँगा। उन्हें पूर्ण आशा थी कि प्रभातचन्द्र अपनी पुत्री के लिए अवश्य मेरे पैरों पड़कर क्षमा-प्रार्थी होगा। उधर प्रभातचन्द्र ने सोचा कि मेरी पुत्री मुझे कुछ भारू नहीं है। मैं कदापि राजाबहादुर से यह प्रार्थना नही करूँगा कि आप उसे बुला लीजिए। यह बात केवल मेरे ही

लिए नहीं, किन्तु मेरी प्यारी पुत्री के लिए भी बहुत अपमानजनक है। कौन कह सकता है कि एक साधारण भूल, जो बिना विचारे कुसुम से हो गई थी, इतना उत्पात खड़ा कर देगी ?

(६)

एक वर्ष समाप्त हुआ। राजाबहादुर ने अपनी पुत्र-वधू को नहीं बुलाया, और इसकी भी बहुत कम सम्भावना थी कि वे भविष्य मे उसे बुलायेंगे। वे अपने पुत्र को अवश्य आज्ञा दे देते कि वह अपना दूसरा विवाह कर ले। परन्तु उन्हें यह डर था कि उनके इस कार्य से अंग्रेजी अधिकारी अप्रसन्न हो जायेंगे। उधर प्रभातचन्द्र ने भी अपनी स्त्री की प्रार्थनाओं और उसके रोने की कुछ परवाह न की। उसने पूर्ण रीति से निश्चय कर लिया था कि राजाबहादुर की ख़ुशामद करके मै कदापि अपनी और अपनी पुत्री की मान-हानि नहीं करूँगा। कुसुम यह सोचा करती थी कि 'मैं ही अपनी पुत्री के दुःख का कारण हूँ।" यह खयाल उसको हमेशा दुःख दिया करता था।

जब निर्मला निमन्त्रण से लौटी तब उसे सारा हाल मालूम हो गया। यदि अपने श्वसुर की आज्ञा मालूम होती तो वह कदापि कहीं न जाती। सबसे पहले उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि वह अपने पति को सारा हाल लिखे और अपनी निर्दोषिता साबित कर दे। परन्तु तुरन्त ही एक नवीन विचार उसके मन में उत्पन्न हुआ कि मैं अपने बचाने के लिये सारा अपराध अपनी प्रिय माता के गले कदापि नहीं मढ़ूँगी। बस उसने निश्चय कर लिया कि मै अपने पति को क्रमश: सारा हाल पत्रों द्वारा लिख दूँगी और आशा करने लगी कि मेरे स्वामी मेरे पत्रों का उत्तर अवश्य देंगे। परन्तु शोक का विषय है कि उसकी यह आशा निष्फल हुई और उसके पत्रों का कोई उत्तर नहीं आया।

ललित के मन में भी ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ कि वह अपनी पत्नी को पत्र लिखे और उससे पूँछे कि क्या तुम मेरे पिता की आज्ञा को न जानती थीं ? ललित एक युवा पुरुष था और उसके प्रेम ने स्वभावतः ही

उसके मन मे यह विचार उत्पन्न किया कि मेरी स्त्री निर्दोष है। "प्रेम आखो से नहीं देखता, परन्तु मन से।" परन्तु उसने सोचा कि मैं क्या लिखूँ और कैसे लिखूँ? फिर वह विचार करने लगा कि यदि निर्मला निर्दोष भी हो तो अपने पिता की आज्ञा के बिना न तो उससे मिल सकता हूँ और न उसे अपने घर ला सकता हूँ। तब उसे अपनी भूल मालूम हुई और उसने अपने को बहुत बुरा-भला कहा। दोनों स्त्री-पुरुष एक दूसरे से मिलने की अभिलाषा करते थे। परन्तु वे असमर्थ थे। यह दुर्भाग्य था।

जैसे एक बग़ैर खिली हुई कली गरमी के सूर्य की ज्योति बढने से कुम्हला जाती है, उसी तरह निर्मला भी दुर्बल हो गई। जब उससे पूछा जाता था कि उसे क्या दुःख है तब वह कोई विशेष कारण नहीं बतला सकती थी। डाक्टरों को भी सिवा कमजोरी के और कोई दुःख-दर्द उसके शरीर मे नहीं प्रतीत होता था, और कमजोरी के लिए वे मामूली दवा बतलाते थे। परन्तु वह दिन प्रति दिन दुबली होती गई। लेकिन जो रोग डाक्टर नहीं पहचान सके उसे कुसुम के मातृ-प्रेम ने जान लिया। उसने अपने पति से कहा कि "देखो, निर्मला कैसी सूखती जाती है। क्या अपनी प्रतिष्ठा और झूठे मान से तुम्हें उसका जीवन अधिक प्रिय नही? कृपया उसके श्वसुर के पास जाओ। और उन्हें शान्त करो।" प्रभातचन्द्र ने बहुत उदास होकर अपना सर हिलाया और कहा कि 'यह तुम्हारा भ्रम है, यदि मैं गया और उन्होंने मेरी बात न सुनी तो क्या करोगी? मै अपनी पुत्री के लिये अपनी अप्रतिष्ठा स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ। परन्तु यदि मै अपने कार्य में सफल न हुआ तो यह बात निर्मला को अत्यन्त दुःखदाई होगी। इससे समझ लो कि मेरे इस कार्य से कितनी हानि होने की सम्भावना है।" यह सुन कर कुसुम कुछ उत्तर न दे सकी। परन्तु जैसे अपनी पुत्री की बुरी दशा देख कर प्रत्येक माता का मन शोकातुर होता है वैसे ही उसका मन भी उदास हो गया।

प्रभातचन्द्र ने अब यह नियम कर लिया कि नित्यप्रति सायकाल के समय वे निर्मला को गाड़ी में बैठाकर हवा खिलाने ले जाने लगे। मार्ग में उसका दिल बहलाने को बहुत रोचक कहानियाँ कहा करते थे। परन्तु उनके

सब प्रयत्न निष्फल हुये, और निर्मला दिन प्रति दिन दुबली होती गई। अब उसके मुख पर हँसी ऐसी मालूम होती थी कि मानो बसन्त ऋतु के बरसे हुये बादलों पर बिजली चमकती हो।

दूसरा वर्ष भी समाप्त हुआ। डाक्टरों ने रोग की बहुत छान-बीन की और कहा कि रोग असाध्य हो गया है। यह जीर्ण ज्वर का अंतिम रूप है। यह समाचार सुनकर प्रभातचन्द्र को मालूम हुआ कि मानो उसके सिर पर वज्रपात हुआ।

जिस दिन राजाबहादुर के जीवन का अंतिम उद्देश्य सफल होने वाला था, अर्थात् उन्हें महाराजा की उपाधि मिलने वाली थी, उसके एक दिन पहले सायंकाल के समय वे ऐसे संसार को प्रस्थान कर गये, जहाँ इस असार संसार की उपाधियों का कुछ आदर नहीं होता। जिन अंग्रेजी अधिकारियों की सेवा करना राजा बहादुर अपना परम कर्तव्य समझते थे उनके सहानुभूति से भरे हुए पत्र ललित के पास आने लगे।

अपनी मृत्यु के कुछ काल पूर्व राजाबहादुर ने अपने सुयोग्य पुत्र को अधिकारियों और कर्मचारियों से उपाधि प्राप्त करने के रहस्य को समझाने का प्रयत्न किया था। परन्तु सफलता बहुत थोड़ी हुई थी। क्योंकि ललित बहुत उदास था कि उसी की भूल से, जहाँ फुलवारी की आशा थी वहाँ मरुभूमि हो गई। वह अपने प्रेम की प्रतिमा अर्थात् अपनी पत्नी को कभी नहीं भूल सका। "पत्थर की दीवारें भी प्रेम को नहीं रोक सकतीं।"

जब राजाबहादुर का देहांत हो गया तब ललित ने विचार किया कि अब अपने ससुर को एक पत्र लिखूँ। परन्तु साथ ही यह विचार भी उसके मन में उत्पन्न हुआ कि वर्षों के पश्चात् लिखूँ तो क्या लिखूँ। फिर उसने सोचा कि श्राद्ध के बाद ससुर से भेंट ही करना अच्छा होगा।

श्राद्ध के एक दिवस पश्चात् ललित के पास प्रभातचन्द्र का पत्र आया। यह पत्र प्रभातचन्द्र ने पहाड़ पर से लिखा था, क्योंकि इन दिनों वे अपनी पुत्री के स्वास्थ्य-रक्षार्थ वहीं पर गये थे। पत्र बहुत सूक्ष्म और शोकपूर्ण था। पहले सूक्ष्म रीति से यह लिख कर कि बीमारी कैसे पैदा हुई और कैसे बढ़ती

गई, प्रभात ने पत्र मे यह लिखा था कि "मैं तुम को एक युग के बाद पत्र इसलिए लिखता हूँ कि निर्मला की यह अन्तिम आकांक्षा है कि वह अपनी मृत्यु के पहले एक बार आपसे भेंट कर ले। वह अब बहुत थोड़े दिन जीवित रहेगी। मै उसे कलकत्ते लौटा ले जाता। परन्तु अब यह असम्भव मालूम होता है। क्योंकि मार्ग की थकावट वह सहन नहीं कर सकती। इसलिए मुझे आपसे प्रार्थना करनी पड़ती है कि आप कृपया यही बहुत शीघ्र आ जायँ। मुझे आशा है कि वर्तमान अवस्था का विचार करके आप भूतकाल की बातें भूल जायेंगे और मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर लेंगे। यदि आप अपने आगमन के समाचार से सूचित करेंगे तो मेरा आदमी आपकी सेवा में रेलवे स्टेशन पर उपस्थित हो जायगा।"

ललित ने पत्र पढ़ा और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो सूर्य की ज्योति से उसकी आँखें चौंधिया गईं। क्या अब निर्मला से क्षमा माँगना और प्राप्त करना असम्भव है? इस क्षमा की आकांक्षा उसे बरसों से थी। उसने अपने मन की आँखों के सामने एक महादुर्बल रोगी का चित्र खींचा। उस चित्र से उसे यह प्रतीत होता था कि रोगी अपने निष्ठुर प्राणप्यारे की बाट जोह रहा है, और जिस पति ने उसे अभी तक दुःख दिया है शायद कहीं वही उसकी असामयिक मृत्यु का कारण है।

यह चित्र देखकर ललित के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। दूसरे ही दिवस उसने पहाड़ की ओर प्रस्थान किया पर किसी से अपने जाने का समाचार नहीं कहा।

(७)

जिस समय ललित ने बगले में, जिसमे प्रभातचन्द्र रहते थे, प्रवेश किया उस समय भगवान भास्कर अस्ताचल की ओर जा रहे थे। पहाड़ की चोटियाँ डूबते हुए सूर्य की किरणों के पड़ने से रंग-बिरंगी प्रतीत होती थीं। बराम्दे में एक आराम कुर्सी पर निर्मला पड़ी हुई थी और उसका दुर्बल शरीर कम्बलों से ढका हुआ था। ज्योंही उसने ललित को हाते के भीतर प्रवेश करते हुये देखा त्योंही उसके उदास नेत्रों से एक ज्योति चमकने लगी और उसके मुर्झाये

हुए चेहरे पर कुछ तेज़ी सी आ गई। ललित बराम्दे में आया और कुर्सी के समीप होकर निकल गया। उसके ध्यान में यह कभी नहीं आ सकता था कि वह रोगी जिसका रूप मुर्दे के समान था और जो कपड़ों के ढेर से ढका हुआ था उसी की स्त्री है, जो किसी समय बहुत ही रूपवान और सुन्दर थी। सचमुच उसने उसे पहली दृष्टि मे नहीं पहचाना और वह यात्रियों के कमरे में चला गया।

निर्मला ने उसे जाते हुये देखा। अकस्मात् उसके दिल में दर्द होने लगा। उसने अपने दोनों हाथों से अपने दिल को दबाया। उसके नेत्र बन्द हो गये। ललित को सेवक लोग उस गोल कमरे मे ले गये जहाँ प्रभातचन्द्र उसकी राह देख रहा था। दो-चार घड़ी वार्तालाप करने के पश्चात प्रभातचन्द्र ने देखा कि उसके दामाद के नेत्र किसी वस्तु को खोज रहे हैं। वह तुरन्त समझ गया और उठकर ललित से कहने लगा, "आओ निर्मला को देखें।" ललित अपने ससुर के पीछे चल दिया।

जहाँ निर्मला लेटी हुई थी वहीं वे दोनों पहुँचे। परन्तु वह हिली नहीं। उसके हाथ अब भी छाती पर रक्खे हुये थे। उसके नेत्र बन्द थे। उसके पीले और पतले ओठों पर दु.ख के चिन्ह थे। जिसके दर्शन के लिये वह बरसों से आशा लगाये थी उसके दर्शन हो गये। अब वह दु.ख और सुख से मुक्त हो गई। अब वह ऐसे स्थान को चली गई जहाँ से फिर न लौटेगी।

मृतक लड़की के समीप पिता और पति दोनों खड़े थे। पिता की आत्मा उसके मन को बहुत कष्ट दे रही थी और पति ने अपनी भूल को बहुत देर मे मालूम किया था। इसी सबब से वह अपनी प्रियतमा से दूर रहा। उसकी अवस्था उस मनुष्य की सी थी, जिसने रात भर अपनी आँखें फोड़ी हों और सबेरे उसे कुछ न दिखाई दिया हो।

परीक्षा की रात

हम दोनों—मैं और शूरबाला—एकही कक्षा में पढते थे। मैं उसके साथ पढता और उसी के साथ खेलता था। जब मै शूरबाला के घर जाता, तब उसकी माता मुझे बहुत लाड़-प्यार करती। वह हम दोनों को अपने पास बुला लेती थी, और अपने सामने बैठाकर कहती थी, "अहा! कैसी अच्छी जोड़ी है!" यद्यपि मै उम्र में छोटा था, तथापि मै इन बातों को समझता था। मेरे मनमें यह जॅच गई थी कि औरों की अपेक्षा शूरबाला पर मेरा विशेष अधिकार है। सारे मुहल्ले में उसकी सुन्दरता की धूम थी। परन्तु मेरी दृष्टि में उसकी सुन्दरता मे कोई विशेष बात न थी। मैं तो यही सोचे बैठा था कि शूरबाला ने मेरा अधिकार स्वीकार करने ही के लिए जन्म लिया है।

मेरे पिता चौधरी साहब के सहकारी थे। उन की इच्छा थी कि जिस समय मै योग्य हो जाऊँ उस समय वे मुझे राज्य-कार्य सिखा कर कहीं गुमाश्ता बनाये। परन्तु मेरा विचार था कि अपने गाँव के रत्नलाल की तरह भाग कर कलकत्ते चला जाऊँ, और वहाँ पढ लिख कर कलक्त्ते का नाजिर बनूँ। यदि नाजिर न बन सकूँ, तो कमसे कम जजी का हेडक्लर्क तो अवश्य बन जाऊँ। इस विचार को मैने अपने हृदय की कोठरी में छिपा रक्खा था। रत्नलाल की मिसाल देख कर मुझे बड़ा साहस हुआ, और अवसर पाकर मै कलकत्ते को चलता बना। पहले तो मै अपने गाँव के एक जानकार के पास रहा। परन्तु कुछ दिन बाद मेरे पिता ने अपनी शक्ति के अनुसार द्रव्य से मुझे सहायता देना आरम्भ कर दिया। पढना-लिखना नियमानुसार होने लगा। स्कूल मे पढने के अतिरिक्त मै सभा समाजों मे भी जाने और वहाँ काम करने लगा। मुझे इस बात में तनिक भी सन्देह न रहा कि देश के लिए जान देना बड़ा भारी काम है। परन्तु यह मेरे ध्यान में न आया कि किस प्रकार की देश-

सेवा करनी चाहिये। देश-सेवा की अभिलाषा मेरे हृदय में स्वयं उत्पन्न होगई थी। मेरे उत्साह का कुछ ठिकाना न था। हमारी सभा के सभासद व्याख्यान दिया करते थे। मै विना खाये-पिये घर-घर चन्दा माँगता फिरता था। चौराहे पर खड़ा होकर सभा के विज्ञापन बाँटा करता था। सभा-भवन में जा कर मेज कुरसी इत्यादि सजाया करता था।

घर-छोड़ कर मैं सरिश्तेदार, अथवा नाजिर बनने के लिए कलकत्ते आया था। परन्तु, यहाँ आकर मैंने मेजिनी और गेरीबाल्डी को अपना आदर्श बना लिया। उसी समय मेरे और शूरबाला के पिता हमारे विवाह के लिए प्रयत्न करने लगे। मै पन्द्रह वर्ष की उम्र में कलकत्ते आया था, अब मैं अठारह वर्ष का था। मेरे पिता समझते थे कि मेरे विवाह की अवस्था प्रति दिन व्यतीत होती जाती है। इधर मै अपने मन मे प्रण कर चुका था कि जन्म भर विवाह न करके देश-सेवा के लिए ही अपने प्राण अर्पण करूँगा। परन्तु पिताजी से मैंने यह कह दिया था कि विद्याध्ययन समाप्त किये विना विवाह न करूँगा। तीन महीने बाद यह मालुम हुआ कि शूरबाला का विवाह बाबू रामलोचन नाम के एक वकील के साथ हो गया। मै अपनी भारत भूमि के लिए चन्दा जमा करता फिर रहा था। इसलिए यह समाचार, जो साधारण अवस्था में मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर देता, योंही आया और चला गया। अब मुझे एफ० ए० की परीक्षा देनी थी। पिताजी स्वर्गधाम सिधार गये। माता और बहिनों का भार मेरे ऊपर पड़ा। इसलिए कालेज छोड़ कर जीविका की तलाश में फिरना पड़ा। बहुत प्रयत्न करने पर एक छोटे से ज़िला स्कूल की सेकिण्ड मास्टरी हाथ लगी।

मैं अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ। पर मुझे तुरन्त ही मालूम होगया कि स्कूल में भारत के भविष्य की अपेक्षा परीक्षा की अधिक परवाह की जाती है। यदि मैं अपने शिष्यों से रेखा-गणित और व्याकरण की बातें छोड़ कर देशी कामों का जिक्र करूँगा, तो हेडमास्टर साहेब नीली-पीली आँख करेंगे। दो ही मास मे मेरा सारा उत्साह उड़ गया। कहीं कोई आग न लगादे, इस भय से एक मास्टर को स्कूल में रहना पड़ता था। मैं अकेला आदमी था, इसलिए

स्कूल की रखवाली का काम मेरे ही ऊपर पड़ा। स्कूल के एक कमरे मे मै अकेला रहा करता था। स्कूल एक बड़े तालाब के समीप, बस्ती से कुछ दूर पर था। चारों तरफ़ सुपारी, नारियल के वृक्ष थे। स्कूल भवन के समीप ही इमली के दो बड़े-बड़े वृक्ष थे। चलो, अपने मन का काम मिलगया। मैं अपने उपदेश से हर एक लड़के को भावी भारत का एक सेनापति बना कर छोड़ूँगा। मै स्वयं गेरीवाल्डी और मेजिनी न बन सका, तो न सही। इस स्कूल रूपी टकसाल में से कई गेरीवाल्डी निकालूँगा। मैंने काम आरम्भ कर दिया।

थोड़ी ही दूर पर सरकारी वकील बाबू रामलोचन रहते थे। मेरी बालअवस्था की सखी, वकील महाशय की स्त्री शूरबाला भी उनके साथ थी। मै रामलोचन के यहाँ आने-जाने लगा। मुझे यह नहीं मालूम था कि रामलोचन भी इस बात को जानते है कि नहीं कि मै शूरबाला को बचपन से जानता हूँ। मैंने यह उचित भी न समझा कि थोड़े दिनों की जान पहचान पर यह भेद खोल दूँ। पुरानी बातों का जिक्र न होने के कारण अभी तक मेरे हृदय मे यह बात न आई थी कि किसी समय शूरबाला का मेरे जीवन से क्या सम्बन्ध था।

एक रोज़ छुट्टी के दिन मै बाबू रामलोचन के मकान पर गया। जाकर बैठ गया, और इधर-उधर की बाते होने लगीं। इतने ही मे पास वाले कमरे मे चूड़ियों की खनखनाहट, कपड़ों की सरसराहट और पायजेबों की झनझनाहट सुनाई पडी। खिड़की के एक छेद से दो आँख टकटकी लगाये मेरी ओर देख रही थीं। बचपन के सरल विश्वास और प्रेम से भेटे हुये इन दो बड़े-बड़े तारे या पानी से भरे हुए काले बादलो ने मेरे हृदय पर एक अद्भुत प्रभाव पैदाकर दिया। उस बालिका का स्मरण होते ही मै विकल हो उठा, और मेरा दिल धड़कने लगा।

मै घर लौट आया। परन्तु मेरे हृदय की व्यथा घटने की अपेक्षा बढने लगी। मन को बहलाने के लिए बहुत से उपाय किये परन्तु कुछ फल न हुआ। मन की पीड़ा बढती ही गई। मुझे यह प्रतीत होने लगा कि मेरा मन एक पत्थर के बोझ से दबा जा रहा है। सूर्यनारायण अस्ताचल को गये, परन्तु मन की पीड़ा न गई। मै एकान्त मे चुपचाप बैठकर विचार करने

लगा कि तेरी शूरबाला कहाँ है ? मन मुझसे पूछने लगा कि "तेरी शूरबाला कहाँ गई ?" मैंने उत्तर दिया कि "मैंने स्वय ही अपनी इच्छा से छोड़ दिया था। क्या वह जन्म भर मेरी राह देखती रहती ?" दिल से फिर आवाज आई, "जिसे तू उस समय केवल इच्छा करने ही से पा सकता था, उसका इस समय लाख सर पटकने पर भी पाना तो दूर रहा आँख भर देखना भी मुश्किल है। बचपन मे तेरे साथ खेलने वाली शूरबाला अब तेरे पास ही क्यों न रहती हो, उसकी चूड़ियों की झनकार तेरे कानों मे भले ही क्यों न पड़ती हो, तेरी सूँघने की शक्ति उसके सर के तेल की सुगन्ध से मस्त ही क्यों न हो जाती हो, परन्तु यह स्मरण रहे कि उसके और तेरे बीच में पत्थर की दीवार खड़ी हो गई है।"

मैंने उत्तर दिया कि "यदि दीवार खड़ी हो गई है, तो उसे खड़ी रहने दो। शूरबाला मेरी कौन है ?" उत्तर मिला कि "हाँ, आज शूरबाला से तेरा कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु किसी समय था। अब तक वह तेरी क्या हो गई होती ?" मैंने कहा, "हाँ यह सत्य है कि शूरबाला मेरी क्या हो गई होती ? मेरे जीवन के सुख-दुख को बाँटने वाली, मेरी प्राणेश्वरी होने वाली थी।" आज वह मुझसे इतनी दूर है कि आज उसे देखना भी पाप है, उससे बोलना दोष है, उसकी इच्छा करना महापाप है। रामलोचन हमारे बीच मे आकर खड़ा हो गया है। मै ससार में नई रीति रिवाजों का प्रचारक बन कर नहीं आया हूँ। मेरा विचार समाज के नियम तोड़ने का नहीं। मै केवल अपने हृदय की अभिलाषाओं को प्रकट कर रहा हूँ। जितने विचार मन मे उठते हैं वे सबही निरथक हैं। मैं दिल मे यह नहीं सोच रहा था कि शूरबाला जो आज रामलोचन के घर की शोभा बढा रही है, उस पर मेरा अधिकार अधिक है, या रामलोचन का। मै यह स्वीकार करता हूँ कि उसका ध्यान करना बुरा है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इस प्रकार के विचारो का मन मे आना प्रकृति-विरुद्ध है।

सध्या तक मेरा मन इन वासनाओं से हटकर और किसी कार्य मे न लग सका। दूसरे दिन दोपहर को जब मै अपने क्लास मे बैठा पढ़ा रहा था,

तब मेरे मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई। यह इच्छा किस बात की थी? कुछ पता नहीं। स्कूल में छुट्टी हुई। मुझे अकेले कमरे में रहना कठिन हो गया। सायंकाल के समय तालाब के किनारे पर नारियल और सुपारी के वृक्षों की निरर्थक आवाज को सुनकर मेरे मन में यह ख्याल पैदा हुआ कि मनुष्य का जीवन एक बड़ा भारी धोखे का जाल है। यदि मैं चाहता तो शूरबाला का पति बनकर बुढ़ापे तक सुख से जीवन व्यतीत करता। परन्तु मुझे गेरीबाल्डी बनने की अभिलाषा हुई और अन्त में बना क्या? एक छोटे से स्कूल का सेकण्ड मास्टर।

रामलोचन एक दिन किसी मुकदमे की पैरवी के लिए बाहर गये। जिस प्रकार मैं अपने स्कूल के कमरे में अकेला था, उसी प्रकार शूरबाला भी अपने घर में अकेली थी। प्रातःकाल ही से बादल आकाश में घिर आये थे। दस बजे से वर्षा होने लगी। वर्षा होने से विद्यार्थियों को कष्ट न हो इस विचार से हेडमास्टर साहब ने आज छुट्टी जल्दी कर दी थी। मेघों के काले-काले टुकड़े आकाश पर फिर रहे थे। बड़े जोर की झड़ी आरम्भ हुई। ज्यों-ज्यों रात होने लगी, त्यों त्यों वर्षा का वेग भी बढ़ने लगा। मन में विचार आया कि इस भयानक रात्रि में शूरबाला अपने घर में अकेली होगी। स्कूल भवन उसके घर की अपेक्षा अधिक सुरक्षित है। इस लिए उसे अपने कमरे में ले आऊँ या स्वयं ही उसके घर पर रात को रहूँ। धीरे-धीरे रात का डेढ़ बज गया। पानी खूब जोर से पड़ रहा था। ऐसा मालूम होता था कि समुद्र ही पृथ्वी पर उमड़ा चला आता है। मैं अपने कमरे से बाहर निकला। शूरबाला के घर की ओर मेरे पैर उठने लगे। पानी इतना बढ़ चला था कि मार्ग में घुटनों तक हो गया था। एक जगह जमीन ऊँची थी। मैं उस पर चढ़ गया। क्या देखता हूँ कि उधर से कोई मेरी ओर चला आ रहा है। उसको देखकर मेरा मन ही नहीं, किन्तु सर से पैर तक मेरा सारा शरीर भी समझ गया कि वह कौन है?

हमारे चारों ओर पानी ही पानी दिखाई पड़ता था। द्वीप की तरह उठी हुई जमीन पर हमीं दो जीव रह गये थे। वह प्रलय का समय था।

आकाश मेघों से आच्छादित था। एक भी तारा न दिखाई देता था। अंधकार के कारण रात्रि ने बड़ा भयानक रूप धारण किया था। हम दोनों में एक शब्द भी अपने मुँह से निकालने की शक्ति न थी। न मैंने और न उसने ही कोई बात कही। यहाँ तक कि हम दोनों अंधकार की ओर टकटकी लगा कर देखने लगे। आज शूरबाला दुनिया को छोड़ कर मेरे पास आ खड़ी हुई। बचपन से आज कितना समय व्यतीत हो गया। इस समय और उस समय मे कितना अंधकार-मय काल था। उस अंधकार को पार करके शूरबाला मेरे पास खड़ी है। समय का शक्तिशाली चक्र इस नवीन बालिका को मेरे समीप ले आया है। यदि पानी की एक भी लहर चढ़ आवे, तो वह हम दोनों को एक मे मिला दे।

ईश्वर करे पानी यहाँ न चढ़ सके! मैंने आज मृत्यु के मुँह मे खड़े होकर अनन्त और अपूर्व आनन्द पाया है।

वर्षा थम गई। पानी कुछ हटा। शूरबाला बिना कुछ कहे अपने घर की ओर चली, और मैं बिना कुछ बोले अपने घर की ओर।

घर आकर सोचने लगा कि मैं न तो नाजिर बन सका, न सरिश्तेदार, और न गेरीबाल्डी ही, अन्त मे बना एक छोटे से स्कूल का सेकण्ड मास्टर। सारी उम्र मे केवल एक पल भर के लिए, मेरे जीवन की न समाप्त होने वाली रात्रि मे प्रातःकाल का प्रकाश दिखलाई दिया। मेरी इतनी उम्र में वही एक अँधेरी रात्रि मेरे जीवन के सफल होने का कारण हुई।

———

खट्टे अँगूर—और मीठे

सुन्दर खेतों से बड़ी भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही थी। क्या तुमने कभी पके हुए अँगूरों से निकलने वाली सुगन्ध का अनुभव किया है? अँगूरों की सुगन्ध बड़ी मीठी होती है। ज्यों-ज्यो आप पत्तियो के नीचे छिपे हुए अँगूरों के गुच्छों के पास पहुँचते जाते हैं त्यों-त्यों उनका आकर्षण बढ़ता जाता है और आपका मन ललचने लगता है।

ऐसे ही एक पके हुए गुच्छे को 'वसीयुक' ने देखा, जो अपनी सुन्दरता के कारण चमचमा रहा था। 'वसीयुक' अँगूरों का जौहरी था। वह अपने लिए उत्तम अँगूरों को ही चुनने की चेष्टा करता था। वह जब कभी कोई गुच्छा काट लेता तो उसमें से सबसे बढ़िया अँगूर अपने लिए लेता और जो सूखे या सड़े होते उन्हें निकाल कर फेंक देता। इसके पश्चात् उस गुच्छे को वह बड़ी होशियारी से नीचे रखी हुई पत्तियों के ढेर पर छोड़ देता। जिस शहतूत के ऊपर यह अँगूर की बेल चढ़ी हुई थी, उस पर वह धीरे-धीरे चढ़ने लगा। क्योंकि उसने ठीक अपने सिर के ऊपर एक बड़ा ही सुन्दर गुच्छा देखा था। किन्तु ज़रा-सा ही आगे बढ़कर उसे रुकना पड़ा क्योंकि थोड़ा ऊपर की ओर शहतूत की दो डालियों के बीच में 'जीना, मजे में बैठी हुई अँगूरों का स्वाद ले रही थी। उस लड़की ने कहा—'आगे रास्ता बन्द है। सिगनल आपके विरुद्ध है,अब आप आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि अब इससे ऊपर मैं चढ़ नहीं सकती और मैं अपनी जगह छोड़ना नहीं चाहती।'

वसीयुक बोला—'अच्छा! क्या आपने तीन रुपये इसलिए खर्च किये हैं कि पेड़ पर बैठकर अँगूर खायें? क्या आपने अपना रेलवे-टिकट ख़रीद लिया है?'

'नहीं ! इस स्टेशन पर तो पहले से टिकट मिलता नहीं है। ऐसा तो 'सोचो' स्टेशन पर ही हो सकता है। यहाँ तो गाड़ी आने के केवल आधा घंटा पहले ही टिकट मिल सकता है।'

'जीना सुनो ! देखो, कैसी अच्छी सलाह है। तुम दो दिन और क्यों नहीं ठहर जातीं ?'

'क्या ? क्या तुम यह बात गम्भीरता से कह रहे हो ! मैं क्यों ठहरूँ ?'

'देखो दो दिन में हम लोग साथ-साथ यात्रा करेंगे। कैसा मजा रहेगा। मैं तुम्हारे ही साथ यात्रा करना चाहता हूँ। इस बीच में तुम ठहरी रहो जितने चाहो उतने अँगूर खाओ। बोलो क्या कहती हो ? ठहरोगी ?'

'ठहरने और अँगूरों से क्या सम्बन्ध है ? मुझे लौट कर अपने कारखाने जाना है।'

'अखखाह ! तुम्हारा पुराना कारखाना तो तुम्हारे बगैर बन्द ही हो जायगा ! क्यों, क्या नहीं बन्द हो जायगा ?'

'इसमे तनिक भी सन्देह नहीं है।'

'और मेरी पलटन का क्या ? मान लो मै दो दिन तक ग़ैरहाजिर रहा ... ऐसा व्योहार करना तो उचित न होगा। तुम कह सकती हो कि गाड़ी नहीं मिली ...और नहीं तो तुम कह सकती हो टिकट ही नहीं मिला ऐसी ही सैकड़ों बाते हैं जो तुम कह सकती हो।'

'मै कुछ भी नहीं कहूँगी क्योंकि मैं यहाँ बिल्कुल नहीं ठहरूँगी ... अरे ज़रा उसकी ओर तो देखो क्या वह काला नहीं है ?'

नीचे बगीचे की दीवाल के पास एक भिखमँगा चिथड़े लपेटे हुये खड़ा था, उसके बालों में तेल चमक रहा था और वह अपना काला-काला मुँह इन लोगों की तरफ किये हुये देख रहा था।

'अरे ओ कलूटे ! क्या अँगूर चाहता है ?' वसीयुक ने चिल्लाकर कहा और एक गुच्छा अँगूर का उसकी तरफ फेक दिया। हाथ बढ़ाकर लड़के ने अगूर रोक लिया और अपने थैले में डाल लिया। फिर अपना सिर उठा कर एक भिखमँगे की तरह गिड़गिड़ाने लगा—

'बप्पा, ओ बप्पा, मुझे एक इकन्नी दे दो।'

शहतूत की डाल पकड़कर वसीयुक ने उत्तर में कहा—'जो ऐसी बात करेगा तो एक मिनट मे तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ जायेगी। जल्दी से भाग जाओ, नही तो मैं तुम्हें पकड़ कर ठीक कर दूँगा।'

बिल्ली की तरह छलाँग मार कर वह पेड़ के उसी दुबाधे पर पहुँच गया जहाँ जीना बैठी थी और उसी से सट कर बैठ गया। उसकी जाँघ पर हाथ मार कर बोला—

'कुछ भी हो मेरे बग़ैर तुम्हारा चला जाना एक घिस्सेबाजी है। यह तो दोस्ती का बर्ताव नहीं है। हम लोग साथ-साथ गेंद खेले हैं, साथ-साथ चाँदनी में नहाये है और दिन मे भी ..क्या तुम तनिक ठहरोगी नहीं?'

जीना ने तेजी से उसका हाथ हटा कर कहा—'हम साथ-साथ चाँदनी मे नहीं नहाये है। यह तो तुमने 'एना' के साथ टिकटघर से चल कर किया था।'

'वाह! वह तो बुढिया है।'

'वसीयुक, तुम्हे लज्जा आनी चाहिए। तुम निरे पशु हो। उसके कुछ बाल चाहे सफ़ेद हो गये हों किन्तु उसका चेहरा बड़ा भोला है।'

'यह हो सकता है। तो भी वह मुझसे दस वर्ष बडी है।'

'इससे क्या होता है, क्या तुम उसके साथ रहे नहीं हो? सारा विश्रामगृह जानता है कि तुम उसके साथ रहे। और अकस्मात् वह बुड्ढी औरत बन गई! ऐसे ही विषधर शैतान तुम हो।'

'ऍं......चाहे हम साथ-साथ रहे या न रहे यह हमारा मामला है... और विश्रामगृह के किसी भी आदमी ने हमे साथ नहीं देखा। सुनो 'जीना' तुम ठहरती क्यों नहीं? मैं तुमसे कह दूँगा कि...'

'बप्पा, एक पैसा ही दे दो' नीचे से एक आवाज आई।

'पहले एक इकन्नी और अब एक पैसा...यहाँ से भाग जा नहीं तो मैं तुझे गोली मार दूँगा,' वसीयुक भिखमँगे पर गुर्रा उठा। 'अखखाह कैसा सुन्दर गुच्छा है जो तुम्हारे पीछे लटक रहा है; जीना मै क़सम खाकर कह

रहा हूँ कि यह तो खास तुम्हारे लिये उगा है। क्या इसे छोड़कर जाने का तुम्हें अफ़सोस नहीं है ? क्या मेरे लिये तुम्हें तनिक भी शोक नहीं है ? क्या कोई ऐसा है जो मेरी तरह तुम्हारे साथ पानी में तैरता रहे ?' वसीयुक की वाणी बड़ी धीमी और मधुर हो गई। जीना ने अपने कंधे मटका दिये।

'अप्पा, ब.. प्पा।'

'ओह ! यह लड़का तो मेरी जान को आ गया किन्तु . भाग जा, 'सुनता है कि नहीं ! मैं तेरी खाल उधेड़ दूँगा ! मुझे बप्पा क्यों कहता है ? भाग यहाँ से मेरे पास पैसा नहीं है।'

बड़ी सुरीली आवाज से जीना बोली—'अरे समय हो गया अब तो मुझे जाना चाहिये।' इतना कह वह नीचे की डाल पर उतर आई। 'मुझे होटल में जाना है। वहाँ मुझे दूध के दाम देने है।'

'ठहरो ! कहाँ जा रही हो जीना ? मै सचमुच एक बहुत बढ़िया तदबीर पेश कर रहा हूँ।'

घास पर कूद कर जीना ने पूछा ! 'यह कौन—नई तदबीर है।'

'आज ही मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। हम दोनों साथ-साथ चलेगे। भाड़ में जाने दो दो-दिनों को।'

'तुम समझते हो कि मै तुम्हारी हूँ। क्यों, क्या यही सोचते हो ? तुम तो मेरे पीछे खूब लसे हो।'

वसीयुक ने कोई उत्तर नही दिया। फाटक की ओर दृष्टि करते हुये वह अपनी टोकरी में बड़ी शीघ्रता से घास ठूँसने लगा। फिर उसने टोकरी का ढक्कन बन्द किया और चुपके से उस लड़के से बोला—

'ऐ छोकरे ! टोकरी उठाओ, मै अभी एक मिनट में आता हूँ ! तुम्हारी इकन्नी की मजूरी हो जायगी।'

जीना ने पूछा—'इसका क्या मतलब है ? तो क्या तुमने ये अंगूर चुराये हैं ?'

'मैंने कुछ भी नहीं चुराया है। प्रारम्भ ही में मैने दाम दे दिये थे।

इस समय मैं तुमसे कुछ नहीं कह सकता। बाद में तुमको सब कुछ समझा दूँगा।'

फाटक के बाहर एक चौकीदार की टोपी चमकी, उसके पास ही एक और आदमी खड़ा था जिसे वह अपना व्याख्यान सुना रहा था—

'देखो माली, मै बड़ी देर से तुम्हे ताक रहा हूँ। गाव की पंचायत के प्रतिनिधि की हैसियत से ताकना मेरा कर्तव्य है। माली! जो कुछ तुम कर रहे हो वह ठीक काम नहीं है। तुम सरकारी पैसा तो देते नहीं किन्तु हर एक के हाथ माल बेचने को मजे से तैयार हो जाते हो। हम लोगों ने तुम्हें कितनी बार चेतावनी भी दी है? और तुम लोगों को अपने पेड़ों पर चढ़ने की आज्ञा दे देते हो।'

'मुझे मलेरिया है। मेरे पास कुछ खाने को नहीं है'—माली ने गुर्रा कर उत्तर दिया।

'ज्योंही सरकारी पैसा देने की बारी आती है, त्योंही तुम लोगों को मलेरिया हो जाता है। किन्तु जब किसी और के हाथ माल बेचना होता है तब मलेरिया का कोई नामोनिशान नहीं दिखाई देता है।'

जो रास्ता स्टेशन को जाता था उसके दूसरे मोड़ पर टोकरी लिये हुए वह छोकरा इन्तजार कर रहा था। यहाँ तक तो वह ज्यों-त्यों करके टोकरी ले आया था किन्तु बोझ के मारे अब और आगे ले जाना उसकी सामर्थ्य के बाहर की बात थी।

'शाबाश पट्ठे!' वसीयुक ने उसकी प्रशंसा की, 'यह लो अपनी इकन्नी। रोजगारी भिखमँगे ने चट से इकन्नी लेकर कहा—'क्या आप के पास रोटी नहीं है?'

वसीयुक ने उत्तर दिया—'रोटी मेरे पास कहाँ से आई?' फिर उसने टोकरी उठा कर उसका बोझा अन्दाजा—'यह पक्का पचास पौण्ड होगा। क्या मेरी माता इससे प्रसन्न न होगी?'

'जीना! तुम अब कहाँ जा रही हो?'

'मैं समुद्र की तरफ जा रही हूँ अन्तिम बार उससे विदा हो आऊँ।'

'इस दशा में मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा। आओ हम तुम अन्तिम बार साथ-साथ तैर लें।'

जीना जनाने घाट की तरफ गई। अपने कपड़े उतारे और अपना फटा हुआ तैरने का वस्त्र पहन कर पानी मे प्रवेश कर गई। पानी ने अपनी मूक लहरों से ,उसका स्वागत किया। समुद्री खर-पतवार लहरों के खारी फेन पर उतरा रहा था। उसकी विचार-धारा इस प्रकार थी—

'मेरे सुन्दर समुद्र ! अगली गरमी तक यह मेरी-तुम्हारी अन्तिम भेंट है .....शीघ्र ही मैं रेल पर सवार हो जाऊँगी... . वह वसीयुक भी रेल पर सवार हो जावेगा। वह तो मेरे पीछे ही लगा हुआ है ...वह कुछ ऐसा बुरा भी नहीं है... किन्तु उसने अँगूरों का उक्त व्यापार क्यों किया......?'

इसी ढङ्ग की कोई चिन्ता करती हुई करीब आधी मील के तैरती चली गई और चित तैरने लगी—वह मुँह से कुछ बोली नहीं। मन ही मन सुस्त थी। अकेले समुद्र मे तैरना कैसा सुन्दर है, जब कि जवानी, स्वास्थ्य और विस्तृत क्षेत्र प्राप्त हो।

वसीयुक अब उसके पास आ गया था उसने कहा आओ क्षितिज तक तैर चलें...क्या हम लोग चेष्टा करेंगे ? दोनों चुपचाप तैरते रहे, केवल वसीयुक कभी-कभी मुँह से फू-फू कर देता था। अब किनारा नीला मालूम देने लगा और एक रेखा मे दिखलाई पड़ने लगा। वह आकाश में मिल गया और फिर अदृश्य हो गया।

थोड़ी देर के पश्चात् वसीयुक ने अपने हाथ फैला दिये और बिना हिले-डुले उतराने लगा।

जीना ने तनिक कड़ाई से पूछा — 'क्यों जी, अँगूर का मामला क्या था ?'

वसीयुक ने अनिच्छा से कहा—'अरे चूल्हे में जायँ अँगूर। मुझे कुछ नहीं मालूम, मै अपनी माता को अँगूर देने की प्रतिज्ञा कर आया था.. जीना ?'

हाँ कहिए ?'

'क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ?'

'मैने तो अभी सोचा नही ।'

'किन्तु क्या तुम इसके बारे मे सोचोगी नही ? जरा इधर देखो । मै शीघ्र ही एक प्रमाणित इन्जीनियर बन जाऊँगा । अबकी बसंत मे मै शास्त्री हो जाऊँगा । मास्को मे मुझे एक नौकरी मिल जायेगी । मेरे पास कमरा भी होगा ! गृह-निर्माण समिति को मैं बराबर अपनी किश्तें दे रहा हूँ और मैं जानता हूँ कि तुम मुझे पसन्द भी करती हो एँ, क्यों न जीना ?'

उस लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया । दूरपर बतके चमक रही थी और गोते लगा रही थीं । एक लहर ने वसीयुक को उठा लिया और जीना की ओर पहुँचा दिया। जीना ने अपनी जाँघ पर उसके हाथ का हलका-सा, स्पर्श अनुभव किया । बिचक कर वह अपने हाथों से पानी को फटफटाने लगी ।

'धोखा ! यह तो नमकीन है ।' वसीयुक ने खाँसते हुए कहा—'बिल्कुल मेरे गले मे उतर गया । तुम पानी क्यों फटफटा रही हो ?'

'तुम अपने हाथ अलग रक्खो । मुझे ऐसे कोंच रहे हो मानो मै तुम्हारी हूँ ।'

मै तुम्हे कोंच नहीं रहा था । वह तो अकस्मात् हो गया । सुनो जीना, मैं गम्भीर हूँ । मै तुमसे प्रेम करता हूँ और तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ ।'

'अपनी 'एना' के पास जाओ, और मुझे अकेली ही छोड दो ।'

'बस क्या यही बातचीत है अच्छी बात है । आओ लौट चले ।'

वे किनारे की तरफ़ लौट पड़े, दोनों मुँह नीचा किये हुये थे और हाथ मे हाथ फँसाये हुये थे । किनारे की रेखा दिखलाई दी, पानी की स्वच्छता कम पड़ गई । एक बार पुनः पेंदे के बडे-बडे पत्थर दिखाई देने लगे ।

छुट्टियाँ समाप्त हो गईं । अब फिर काम पर जाने का समय आ गया और ज़ीना को अपनी मशीन पर काम करने की याद आ गई । अब व्यर्थ गँवाने के लिए समय नहीं रहा । आराम करने का समय व्यतीत हो गया । अब उसे फिर से अपने देश के जीवन-स्रोत मे सम्मिलित होना चाहिये ।

उपरोक्त सन्देश उसने स्टेशन पर आये हुये एंजिन की सीटी से सुना

यही बात खड़-खड़ाते हुए पहियों ने कही। उसके इर्द-गिर्द की प्रत्येक वस्तु ने उसके एक ही विचार को उत्तेजित किया।

और गाड़ी के आने के आधा घंटा पहिले ही जीना स्टेशन पर पहुँच गई। वसीयुक मय अपनी टोकरी के पहले ही से वहां पर मौजूद था और साथ में अपना कपड़ों से भरा हुआ सूटकेस भी लिये हुए था। अतः यह बात पक्की थी कि वह भी जा रहा था। उस छोटे से मुसाफिरखाने में यात्रियों की एक लैन की लैन टिकट लेने के लिए खड़ी थी परन्तु टिकटघर अभी तक खुला ही न था।

एक लम्बी-सी औरत प्लेट फार्म पर टहलती हुई आई और स्टेशन मास्टर की तरफ चली गई। उसके घने और सफेद बाल हवा में उड़ रहे थे। उसने स्टेशन मास्टर से कुछ कहा और फिर टिकटघर की तरफ चल दी। कुछ लोग ठहरे हुए इन्तजार कर रहे थे, कुछ बैचैनी से इधर उधर हिले-डुले। चारों तरफ से टिकटघर की ओर प्रथम स्थान लेने के लिए लोग लपकने लगे। विरोध, बहस और गालियाँ सुनाई देने लगीं। सारी भीड़ खिड़की की तरफ पिल पड़ी और धक्कम-धक्का होने लगा।

अकस्मात् वसीयुक बोल उठा—'हत तेरी की! कैसी भूल हुई! मैंने बीस पौंड का महसूल दिया था और जब मैंने टोकरी तुलवाई तो वह पूरे ५० पौंड की निकली। इसका अर्थ यह है कि मुझे जाकर बाकी का निपटारा करना है।'

'जीना ने कहा जाओ जल्दी से दौड़ कर मामला निपटा आओ, लैन में मैं तुम्हारी जगह घेरे रहूँगी।'

वसीयुक ने जल्दी से कहा—'यह लो मेरा रुपया और खास बौचर, मैं भी अजब भुलक्कड़ हूँ।'

टिकट लेने की जीना की बारी आ गई, किन्तु वसीयुक अभी तक नहीं लौटा। उसने अपना टिकट लिया और चल दी। तुरन्त ही वसीयुक आ गया। अब टिकट लेने वालों की लैन छोटी रह गई थी, बहुत ही थोड़े से आदमी बच रहे थे।

वसीयुक ने हाँफते हुये पूछा—'क्यों क्या तुमने मेरा टिकट ले लिया ? मैं ठीक समय से आ गया।'

जीना ने उसका रुपया और वौचर लौटाते हुये उत्तर दिया 'तुम स्वय ले लो। मै तुम्हारे लिए टिकट नहीं लेना चाहती, जरा देखो तो।'

'अरे क्यों नही लेना चाहती ?

'वसीयुक ! तुम समझते हो कि तुम बड़े चालाक हो।' एकाएक उसे कुछ याद आ गई और वह भाग खड़ी हुई—'अजी जनाब टिकटघर मे 'एन' बैठी हुई हैं जाइये और ख़ुद अपना टिकट खरीदिये और तब मैं तुम्हारा विश्वास करूँगी।'

वसीयुक ज़ीना से आँख न मिला सका और घबड़ा कर बोला 'यह तो बहुत आसान है .. ..मैं तुम्हारी ऐन से कुछ डरता थोड़े ही हूँ।'

जीना ने अपना सूटकेस उठाया और प्लेटफार्म की ओर चल दी। गाड़ी बहुत दूर पर नहीं थी। रेल की घड़-घड़ाहट सुनाई देने लगी, जो लोग टिकट लेने को खड़े थे वे फिर एक-दूसरे को धक्का देकर आगे बढने लगे।

वसीयुक को उनके आगे पहुँचने का कोई अवसर न था, उसने इधर-उधर देखा। और वही भिखमँगा लड़का उसे एक बेंच पर बैठा हुआ दिखाई दिया; वह ऊँघ रहा था।

वसीयुक ने कहा—'ए लड़के ! यहाँ आओ, तुम्हारे लिए काम है। यह लो रुपया और टिकटघर जाओ और मेरे लिये एक टिकट खरीद लाओ—एक विद्यार्थी के लिए रियायती महसूल वाला टिकट लाना। यह कागज उसे दे देना। अगर तुम जल्दी से काम कर दोगे तो तुम्हें एक चवन्नी इनाम की मिलेगी।'

'ठीक' अपनी नाक मरोड़ते हुये उस लड़के ने जवाब दिया—'इस काम को मैं ख़ूब अच्छी तरह जानता हूँ। बापा ! मै तैयार हूँ।'

अपनी बाँह से उसने अपना मुँह चार बार पोंछा......ऊपर, नीचे अगल, बगल और चारों तरफ। तेलिया चेहरा मामूली बन गया, मानों

किसी साफ-सुथरे, लड़के का मुख हो। उसने अपने हाथ भी पोंछ डाले। रुपया और खाम वौचर लेकर वह लैन मे खड़ा हो गया। अब केवल तीन आदमी बाक़ी रह गये थे।

छोटा-सा कमरा एकाएक हो-हल्ले से भर गया। वसीयुक ने जीना को तलाश करने के लिये सारे प्लेटफ़ार्म पर नजर दौड़ाई। गाड़ी आ गई उसके साथ ही साथ तेल और पक्के फलों की सुगन्ध तथा धूल और हवा भी आई। जीना बहुत आगे थी। गाड़ी के साथ आने वाली हवा से उसके चमकीले वस्त्र फड़-फड़ाने लगे।

वसीयुक, ने घूम कर देखा और सोचा कि मुझे उस गाड़ी को पहचान लेना चाहिये जिसमें वह सवार होगी। लड़का टिकटघर की खिड़की पर नहीं दिखाई देता था। टिकट वेचने वाली अब खड़ी थी और आमदनी गिन रही थी। टूटी-फूटी भाषा मे वसीयुक ने कहा—'गुडमार्निङ्ग ...एना, क्या तुमने एक भिखमँगे लड़के को देखा है? क्या उसने तुमसे कोई रियायती टिकट खरीदा था।'

टिकट क्लर्क बोली—'ओह हो, वसीयुक है। क्या तुम बिना सलाम किये ही जाना चाहते थे? तुम इतनी जल्दी क्यों भागे जा रहे हो? शायद ज़ीना के पीछे जा रहे हो, क्यो न?'

वसीयुक कड़क के बोला—'मेम साहब, मै आपसे पूँछता हूँ कि क्या किसी ने आपसे रियायती टिकट खरीदा है?'

'जनाब, मैं आपको सूचना देती हूँ कि मै इस तरह के मूर्खतापूर्ण प्रश्नों का उत्तर देने को बाध्य नहीं हूँ।' इतना कह करके टिकट क्लर्क ने खिड़की बन्द करली।

वसीयुक ने टोकरी और सूटकेस उठाया और प्लेटफार्म की ओर झपटा। वह सारी गाड़ी के किनारे-किनारे दौड़ा और सब डिब्बे झाँककर देख डाले कोई छिपा हुआ नहीं था। प्रत्येक खिड़की के दरवाजे पर एक चालक खड़ा था। अत. किसी का बिना टिकट के घुस जाना असम्भव था।

गाड़ी में बिना टिकट के जाने का कोई अवसर न था। वसीयुक तुरन्त स्थिति को समझ गया और निराश होकर गाड़ी से हट कर चलने लगा। चालक की सीटी बोली, गाड़ी ने पीछे धक्का मारा और थोड़ा-सा खड़बड़ मचा कर स्थिरता से चलना प्रारम्भ कर दिया। अन्तिम डिब्बे की हरी झण्डी बिलकुल वसीयुक की नाक के पास से निकल गई। मुँह खोले हुए वसीयुक उसकी ओर ताकता रह गया। आखिरकार वह एकदम से चल पड़ा। किन्तु चलती गाड़ी मे वह लड़का उसे दिखाई दे गया।

प्लेटफार्म के एक कमरे के द्वार पर जी० पी० यू० लिखा हुआ देखा, वह उसमें घुस गया। देखा कि एक टेबिल के सामने बैठा हुआ एक आदमी वर्दी पहने कुछ लिख रहा है।

वसीयुक क्रोध से भरा ही था उसने उस आदमी से कहा—'साथी, मै लुट गया, मैंने एक भिखमँगे लड़के को अपना रुपया और खास बौचर दिया था कि वह मेरे लिए एक टिकट ख़रीद लावे। वह दोनों चीजें लेकर चम्पत हो गया। मैने उसे गाड़ी में जाते हुये देख लिया है।'

'क्या है? क्या तुम पागल हो गये हो?...जरा सोचो तो कि तुमने ऐसी चीजे एक भिखमँगे के हाथ मे सौंप दी।' अपने टेबिल पर से सिर उठा कर रेल के पुलिस अफसर ने जोर से जवाब दिया–'तुमने ऐसी मूर्खता क्यों की?'

'मैने उसका विश्वास इसलिए किया कि···थोड़े शब्दों मे बात यह है कि वह मेरी अँगूर की टोकरी ताके रहा जो मै उसके भरोसे छोड़ गया था और वह मुझे जैसे की तैसी मिल गई। अब इसके बारे में क्या किया जाय?'

'क्या वह जानता था कि टोकरी मे केवल अँगूर ही है? तब तो मामला सरलता से समझ मे आ जाता है। इस स्थान पर चारों ओर अँगूर के बाग़ है। वह जितने चुराने चाहता पेड़ों पर से सीधे-सीधे चुरा सकता था, लेकिन रुपये का मामला दूसरा है?'

वसीयुक ने कुछ बेचैन होकर पूछा—'अच्छा तो फिर अब मैं क्या करूँ? क्या आप अगले स्टेशन को तार दे नहीं सकते कि वह लड़का रोक लिया जाय?

उस अफसर ने उत्तर दिया—'इससे कुछ फायदा नहीं होगा। यह सम्भव है कि वे लोग उसे पकड़ लें किन्तु रुपया तो ग़ायब हो गया होगा।'

वसीयुक निराश होकर और चिढ़ कर चिल्ला उठा—'किन्तु मैं अब क्या करूँ? क्या घर तक पैदल जाऊँ? यह तो असम्भव है!'

अफसर ने वसीयुक के क्रोधित-मुख की ओर देखा और अपनी कलम उठा ली। दीवार पर लगी हुई घड़ी ज़ोर-जोर से टिक-टिक करने लगी। एक बड़ी सी मक्खी खिड़की के शीशे पर भन्न-भन्न करने लगी। वसीयुक एकदम सन्नाटे में खड़ा रहा। अन्ततोगत्वा, अफसर अपनी कलम रख कर बोला—'देखो! साथी इसमे सारा दोष तुम्हारा ही है। हम लोग इन भिखमँगों की समस्या को समाप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनमें से कुछ को हम शिक्षित कर चुके है किन्तु यात्री लोग उन्हे पैसा दिया करते है और उन्हें खाना खिलाते है। अब सारे सोवियट सब मे कदाचित् पाँच सौ से अधिक नहीं रह गये हैं। और हम इस मामले को पूर्ण रूप से बन्द कर चुके होते यदि यात्री लोग गड़बड़ न करते। देखो साथी, तुम्हें समझना चाहिये कि थोड़े से थोड़ा दान जो तुम उन्हे देते हो वह उन्हें खराब करता है। और साथ ही तुम लोग कुछ इधर-उधर के काम भी कर देते हो... ऐसा नहीं करना चाहिए, साथी। तुम्हे यह समझना है कि अब चोरों को वृद्धि रोकने का समय आ गया है।'

वसीयुक बाहर निकल आया और चलते समय मारे क्रोध के दरवाजे को भड से ढकेल दिया।

अफसर ने उसके निकल जाने के बाद पुनः दरवाजा खोला और बोला, 'ऐ साथी अगर तुम अपने अँगूर बेच डालो तो ठीक होगा। इससे तुम्हे टिकट भर के लिए पर्याप्त पैसे मिल जायँगे।'

बिना उसकी ओर मुँह घुमाए हुये वसीयुक ने गुर्रा कर कहा, 'मै अपना काम खूब अच्छी तरह जानता हूँ।' वह स्टेशन की इमारत से आगे बढा और एक जगह घास पर छाँह में बैठ गया; किन्तु यथार्थ बात यह थी कि अकेले रह जाने पर सचमुच उसकी समझ ही मे न आया कि क्या करे?

बड़ी मूर्खता की परिस्थिति थी और हास्यास्पद भी। विश्रामगृह में किसी के पास रुपया न था। कई एक ने तो स्वयं उससे उधार माँगने का प्रयत्न किया था। इसके अतिरिक्त वह उन सबसे विदा हो आया था और फिर उनके पास जाना मूर्खता होगी। वे उसकी खिल्ली उड़ायेंगे और मजाक से उसका स्वागत करेंगे।

बस अब एक ही बात रह गई थी कि उक्त अफ़सर की सलाह ली जाय और अँगूरों को बेच दिया जाय। किन्तु किसके हाथ बेचें और कैसे बेचें ?

दूसरी गाड़ी जो लेनिनग्राड जाती है एक घण्टे में आयेगी।

अब भी उसे याद आ रही थी कि वह गाड़ी बहुत दूर पहुँच गई होगी जिसमें ज़ीना सवार थी। उस गाड़ी मे ज़ीना के साथ मे उसका प्रेम, वह लड़का, उसका रुपया,—और सब कुछ चला गया। इन्हीं विचारों में वसन्त ऋतु की सुगन्ध भी विलीन हो गई।

———

व्युलह

लगभग एक शताब्दी गुज़री 'लुईसियाना' शहर मे 'गाई हार्टवेल'" नामक एक डाक्टर रहते थे। आप बटे दृढ-सङ्कल्प थे। आपके पास धन अच्छा था। युवा अवस्था थी। परन्तु आपका चेहरा देखते ही यह मालूम हो जाता था कि आपके जीवन मे कोई ऐसी घटना अवश्य हुई है जिसने आपके जीवन को दु.खमय बना दिया है। इसी का यह परिणाम था कि आप मानुषिक स्वभाव पर अविश्वास करने लगे थे। यहाँ तक कि आपको ईश्वर के अस्तित्व में भी शका उत्पन्न हो गई थी। इन सब बातों का कारण यह था कि कुछ दिन पहले आपने "क्रियोला" नामक एक सुन्दर युवती से विवाह किया था, और अपनी सारी सम्पत्ति उस पर न्योछावर करने को तैयार रहते थे। परन्तु 'क्रियोला' उनसे प्रेम नहीं करती थी। उसका प्रेम एक दूसरे नवयुवक से था। एक रोज डाक्टर साहब ने अपनी स्त्री और इस नवयुवक का गुप्त प्रेम जान लिया। आप अपना तमचा लेकर चले किन्तु अपनी स्त्री के स्वभाव को जानकर तमचा फेंक दिया। परन्तु पति-पत्नी मे खूब कहा सुनी हो गई। 'क्रियोला' ने डाक्टर साहब से साफ-साफ़ कह दिया कि मै उस युवक से प्रेम करती हूँ और आप से तो मैंने आपके धन के कारण विवाह कर लिया था। इसी बात से डाक्टर साहब ससार से विरक्त हो गये थे और स्त्रियों से तो चिढ से गये थे।

थोडे दिनों के बाद 'क्रियोला' का देहान्त हो गया और डाक्टर साहब की विधवा बहन "मिसेज चिल्टन" और उसकी एकलौती पुत्री "पालाइन" उनके साथ रहने लगीं। उसकी बहन चाहती थी कि डाक्टर साहब की सारी सम्पत्ति पालाइन को मिले। इसी उद्देश से वह डाक्टर साहब ही के घर आकर रहने लगी थी।

उसी शहर मे एक अनाथालय था जिसमें बहुत से लड़के और लडकियाँ रहती थीं। लडकियों में 'ब्युलह' और उसकी छोटी बहन 'लिलियन' नामक दो लडकियाँ थीं। ब्युलह बहुत सुन्दर थी परन्तु उसका चेहरा उदास रहता था। वह बडे धार्मिक विचार की थी और अपनी छोटी बहन को बड़ी जिम्मेदारी की चीज समझती थी। अनाथालय मे एक लड़का 'ग्रेहम' था। ब्युलह उससे प्रेम करती थी। किसी अमीर आदमी ने ग्रेहम को गोद ले लिया और उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भेज दिया। किन्तु जाते समय 'ग्रेहम' 'ब्युलह' से कह गया कि मै तुझे कभी नही भूलूँगा और लौट कर तुझसे विवाह करूँगा। कुछ दिनो के पश्चात् एक दूसरे अमीर घराने ने 'लिलियन' को भी गोद ले लिया। इससे ब्युलह को बहुत दुःख हुआ। जिस समय दोनों बहने एक दूसरे से प्रथक होने लगीं उस समय ब्युलह ने बड़ा विलाप किया और अन्त मे कहा कि 'वह मेरी है। तुम्हें उसको मुझसे प्रथक करने का कोई अधिकार नहीं है।" परन्तु तो भी दोनों बहनों को अलग होना पड़ा।

अनाथालय कमेटी की ओर से मुख्याधिष्ठात्री के नाम यह नोटिस आया कि धन का अभाव है, इसलिए बड़ी लडकियों को कुछ काम करना चाहिए। ब्युलह के लिए एक टहलनी की जगह ढूँढ ली गई। दुखी और अकेली ब्युलह अपनी बहन से मिलने की इच्छा करती थी। परन्तु जिन लोगों ने उसकी बहन को गोद लिया था वे उसे मिलने की आज्ञा नहीं देते थे। दुर्भाग्यवश वह छोटी सी बच्ची बीमार होगई डाक्टर हार्टवेल ने उसका बहुत कुछ इलाज किया परन्तु वह न बची। जिस समय ब्युलह ने द्वार पर काला चिन्ह देखा तो वह जबरदस्ती घर मे घुस गई और जाकर उसने अपनी बहन को मरा हुआ पाया। उसे बड़ाही क्रोध आया और वह रोने लगी। अन्त मे उसने घर की मालकिन से कहा कि तुमने मेरी बहन को मार डाला है। इसी स्थान पर डाक्टर हार्टवेल और ब्युलह की पहले पहल भेंट हुई। उसको दुखी देख कर डाक्टर साहब को बड़ा तरस आया। परन्तु थोड़ी देर सोचने के बाद वे कहने लगे कि "यह भी एक स्त्री है और अन्य स्त्रियों की तरह यदि इसके साथ भलाई की जाय तो यह भी भलाई का बदला बुराई से देगी।" किन्तु थोडी देर के बाद

उनके उच्च भावों ने डाक्टर साहब पर अधिकार कर लिया और वे ब्युलह की ओर बढ़े और नम्रता से उससे कहने लगे कि अब रोने धोने और क्रोध करने से कोई लाभ नहीं। आओ तुम मेरे साथ मेरे घर चलो, मैं हर प्रकार से तुम्हारा दुःख दूर करने का प्रयत्न करूँगा। जब वे घर पहुँचे तब उन्होंने अपनी बहन से कहा कि मैं इस लड़की को अपने घर रखना चाहता हूँ। इसे किसी प्रकार का दुःख न हो। उनकी स्वार्थी बहन ने सोचा कि यदि यह लड़की इस घर मे टिक गई तो जो सम्पत्ति मेरी पुत्री को और मुझे मिलने वाली है शायद वह इसे मिल जाय। परन्तु उसने कोई बात प्रकट नहीं की।

एक रोज ब्युलह को बड़े जोर का बुखार आया और सन्निपाति की दशा में उसने देखा कि उसकी बहिन देवी का रूप धारण किये हुए उसके सन्मुख खड़ी है। डाक्टर साहब उस के मनोरंजनार्थ बाजा बजाने लगे, बाजा सुनकर वह कहने लगी कि इस प्रकार का उत्तम बाजा सुनकर मुझे विश्वास होता है कि ईश्वर बहुत ही समीप हैं। उसने डाक्टर साहब से बड़ी नम्रता के साथ पूछा कि आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं या नहीं? डाक्टर साहब मुस्करा दिये।

ब्युलह अच्छी हो गई। परन्तु उसे अपने नवीन निवासस्थान मे आनन्द नहीं मिलता था। इस दुखी बालिका के दुख ने डाक्टर साहब की स्वाभाविक दया को फिर से जगा दिया। यद्यपि वे अब भी किसी स्त्री पर विश्वास नहीं करते थे तो भी वे ब्युलह को इज्जत से देखते थे और उसका हर तरह से खयाल रखते थे। उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने और उसका जीवन शान्त और सुखमय बनाने मे वे कोई भी कसर नहीं उठा रखते थे। ये सब बातें देख कर मिसेज चिल्टन और भी अधिक चिढ़ती थी और उससे डाह करती थी। मौके बे-मौके वह अपने मित्रों से निःसकोच कहा करती थी कि ब्युलह तो गली-गली भीख माँगने वाली अनाथ बालिका है। यह तो मेरे भाई के टुकड़ों पर पड़ी हुई है। मेरा भाई जब चाहे तब उसे निकाल बाहर करदे।

मिसेज़ चिल्टन का इस प्रकार का व्यवहार देख कर ब्युलह को वहाँ

रहना असह्य हो गया और उसने अन्त में यह तै किया कि मैं फिर अनाथालय भाग जाऊँ। किन्तु अपने चरित्र की उच्चता के कारण उसने जाते वक्त मिसेज चिल्टन से कह दिया कि मैं डाक्टर साहब से अपने भाग जाने का कारण न बतलाऊँगी। जिस रोज़ उसकी यह बातचीत मिसेज चिल्टन से हुई थी वह सब डाक्टर साहब के 'हेरियट' नामक एक हवशी नौकर ने सुन ली थी। उसने जाकर सारा हाल डाक्टर साहब से कह दिया। तुरन्त ही डाक्टर साहब अनाथालय गये और फिर ब्युलह को लौट आने पर राज़ी कर लिया। आकर उन्होंने अपनी बहन को खूब डाँटा और कहा कि यदि ब्युलह तुम्हारे लिए प्रार्थना न करती तो आज ही मैं तुम्हें निकाल बाहर करता। किन्तु अब मैं तुम्हे एक मकान मोल लिये देता हूँ उसी मे तुम और तुम्हारी पुत्री रहा करे। अब आपका यहाँ रहना नहीं हो सकता।

इसी प्रकार तीन वर्ष व्यतीत हो गये। ब्युलह की "क्लेरा सानडर्स" नामक एक अध्यापिका से बड़ी घनिष्ठ मित्रता हो गई। दोनों बड़े आनन्द से रहने लगीं। अब ग्रेहम के विदेश से लौटने की खबर आई। उसने ब्युलह को लिखा कि बिना तुम्हारे देखे मुझे रास्ते का समय बड़ी कठिनता से व्यतीत करना पड़ता है। मै आते ही तुमसे विवाह कर लूँगा। ग्रेहम के आने पर उसकी एक जगह दावत हुई। उस दावत मे उसकी "प्रेज" नामक एक युवती से भेंट हुई। यह प्रेज डाक्टर हार्टवेल की स्त्री की भतीजी थी। इस में भी डाक्टर साहब की स्त्री ही के-से लक्षण थे। ग्रेहम साहब प्रेज पर मोहित हो गये और ब्युलह को छोड़ कर उससे विवाह करने के लिए तैयार हो गये। डाक्टर हार्टवेल को इस बात का पता लग गया। उन्होंने ग्रेहम को आगाह किया कि वह प्रेज से विवाह न करे क्योंकि वह बड़ी दुष्टा है, नहीं तो उसे भी डाक्टर साहब की तरह पछताना पड़ेगा।

परन्तु ग्रेहम ने डाक्टर की एक न सुनी। और प्रेज से विवाह कर लिया। इससे ब्युलह को बड़ा दुख हुआ।

उस समय यह मालूम हुआ कि डाक्टर साहब स्वयं ब्युलह से प्रेम करते है। ब्युलह डाक्टर साहब की बड़ी कृतज्ञ हुई। परन्तु उसने कहा कि मैं

आपसे विवाह नहीं कर सकती। इसलिए मुझसे विवाह के लिए मत कहिये। अब मैं अध्यापिका होकर अपना जीवन व्यतीत करूँगी और जो रुपया आपने मेरी शिक्षा के लिए खर्च किया है वह मैं आपको चुका दूँगी।

डाक्टर साहब बड़े ही सज्जन थे। उन्होंने सारी व्यवस्था समझ ली और यह निश्चय कर लिया कि वे उत्तर की ओर कहीं चले जायेंगे ताकि उनकी उपस्थिति से ब्युलह को कष्ट न हो और वह स्वतन्त्र होकर रहे। जाते समय वे ब्युलह को एक पत्र लिख गये कि "जब कभी तुम्हें किसी बात की जरूरत हो तो तुम निःसकोच होकर अपने सरक्षक से भेंट कर सकती हो।"

विवाह होने के कुछ ही दिन बाद ग्रेहम को डाक्टर हार्टवेल की बात की सत्यता पूर्ण रूप से प्रतीत हो गई। परन्तु अब पछताने से क्या होता था। अपने दुख को भुलाने के लिए उसने शराब पीना आरम्भ कर दिया। उन दोनों में खूब झगड़े होते थे और उन दोनों का जीवन बड़ा ही दुखदाई था। एक रोज डाक्टर "आसबरी" जो डाक्टर हार्टवेल की जगह काम करते थे, ब्युलह और उसकी मित्रा सानर्डस के पास आये।

'सानडर्स' डाक्टर हार्टवेल से प्रेम करती थी। यद्यपि उसे यह आशा न थी कि डाक्टर भी उससे कभी प्रेम करेंगे। डाक्टर आसबरी ने आकर उन दोनों से कहा कि शहर में बड़ा ही भयकर प्लेग है। इसलिए तुम अपना स्कूल बन्द कर के उत्तर की ओर चली जाओ। लोगों की दुर्दशा देख कर ब्युलह ने यह निश्चय किया कि मै यहीं रह कर रोगियों की सेवा करूँगी। अपना सारा दुख भूल कर वह बीमारों की सेवा करने लगी।

शहर की पीड़ा का वृत्तान्त सुनकर डाक्टर हार्टवेल भी लौट आये और वे तथा ब्युलह दोनों उस भयकर रोग के रोगियों के दुख निवारण में लग गये। वायु साफ करने के लिए स्थान-स्थान पर आग जलाई गई। ग्रेहम भी इस रोग का शिकार हो गया। एक रोज ब्युलह ने पानी बरसाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई और पानी बरसा। इसका प्रभाव डाक्टर साहब पर यह हुआ कि अब वे फिर ईश्वर और मनुष्य पर विश्वास करने लगे। अन्त में ब्युलह ने डाक्टर साहब से विवाह कर लिया और दोनों आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे।

सच है दुख के पश्चात् ही शान्ति और सच्चा सुख मिलता है।

एक सच्चा लड़का

किसी शहर मे एक दुकान के सामने दो भले आदमी खड़े हुए बात-चीत कर रहे थे। इतने में एक बहुत दुबला-पतला लड़का उनके पास आया। वह लड़का बिलकुल फटा हुआ कोट पहने था और मारे जाड़े के कॉप रहा था। उसने इन भले आदमियों से कहा कि क्या आप दियासलाई खरीदेंगे? उनमे से एक ने कहा कि "हमे दियासलाई की कोई आवश्यकता नहीं"। उस गरीब लड़के ने कहा कि "जनाब एक पैसे का एक बक्स मिलता है आप फिर भी नही खरीदते?" तब उस भले आदमी ने कहा कि "हॉ भाई जो तुम कहते हो वह ठीक है परन्तु हमे दियासलाई की कोई ज़रूरत ही नहीं है तो हम लेकर क्या करे?" फिर उस लड़के ने कहा कि "अच्छा! यदि आप पैसे का एक बक्स नही लेते, तो मै आपको पैसे के दो बक्स दे दूँगा?" वे दोनो भले आदमी आपस में बातचीत करने लगे और अन्त मे उन्होंने यह निश्चय किया कि किसी न किसी तरह इस लड़के से पीछा छुड़ाना चाहिये। इसलिए उनमे से एक ने उससे एक पैसे की दियासलाई खरीद ली। परन्तु जब जेब मे हाथ डाला तब उसमे एक अठन्नी निकली। पैसा एक भी न निकला। दूसरे भले आदमी के पास भी पैसा न था। फिर उस भले आदमी ने कहा कि "भाई, आज हमारे पास पैसा नहीं है, रेजगारी है। हम कल तुम्हारी दियासलाई खरीद लेंगे?" लड़का बोला, "महाराज! आज ही ले लीजिये। मै अभी दौड़कर आपकी अठन्नी भुनाये लाता हूँ। मैं बार-बार आपसे इस लिये कहता हूँ, क्योकि मै बड़ा भूखा हूँ।' उस लड़के की बातचीत सुनकर उस भले आदमी ने अठन्नी निकाल कर उसको दी और वह तुरन्त ही उसे भुनाने दौड़ा। थोड़ी देर तक तो वे दोनों भले आदमी उसका रास्ता देखते रहे परन्तु जब वह न लौटा तब वे समझ गये कि लड़के ने चालाकी की और अठन्नी लेकर चम्पत हो गया। परन्तु जिस भले आदमी ने अठन्नी दी थी, वह अपने साथी से बोला कि "भाई! मुझे लड़के के चेहरे से भलमनसाहत मालूम देती थी। यद्यपि वह मेरी अठन्नी ले गया है तथापि मैं उसे बेईमान

खयाल करना अनुचित समझता हूँ ; खैर, जो कुछ हो।" यह बातचीत करके वे दोनों अपने-अपने घर चल दिये।

उसी रोज शाम को, जिस भले आदमी ने अठन्नी दी थी उसके नौकर ने आकर कहा कि हुजूर आपसे एक लड़का मिलने आया है। मालिक ने आज्ञा दी कि उसे भीतर ले आओ। जब वह लड़का भीतर आया और उससे उस भले आदमी ने बातचीत की तब उसे मालूम हो गया कि जो लड़का अठन्नी ले गया था, उसका यह छोटा भाई है। यह लड़का भी बहुत दुबला था और अपने भाई से भी ज्यादा फटे कपड़े पहने था। थोड़ी देर तक वह कमरे मे खड़ा रहा और अपने कपड़ों में कुछ टटोलता रहा, जिससे यह प्रतीत होता था कि वह कुछ ढूँढ रहा है। फिर वह बोला कि 'क्या आप ही ने मेरे भाई अनन्तू से दियासलाई खरीदी थी।" उस भले आदमी ने कहा कि "हाँ मैंने ही खरीदी थी। कहो क्या कहते हो ?"

तब उस लड़के ने कहा, "आपकी अठन्नी में से एक चौअन्नी बची है, उसे लीजिए। अनन्तू आ नही सकता वह बहुत बीमार है। वह एक गाड़ी से टक्कर खाकर गिर पड़ा और गाड़ी उसके ऊपर से निकल गई। उसकी टोपी और दियासलाई के बंडलों का कुछ पता नहीं है। आपकी अठन्नी में से पौने चार आने पैसे भी खो गये। उसकी दोनों टाँगे टूट गई हैं और डाक्टर साहब कहते है कि वह मर जायेगा।"

लड़के की सूरत देखकर वह भला आदमी समझ गया कि यह भूखा है। पहले उसने लड़के को भोजन कराया और फिर अनन्तू को देखने के लिए उसके साथ हो लिया। वहाँ जाकर उसे मालूम हुआ कि दोनों लड़के अकेले रहते थे, उनके माता-पिता का देहान्त हो चुका था। बिचारा अनन्तू थोड़े से फूस पर पड़ा हुआ था। ज्योंही उस भले आदमी ने कमरे में प्रवेश किया, त्योंही वह बोल उठा 'महाशय, मैं आपकी अठन्नी भुना लाया था। परन्तु एक घोड़े ने मुझे गिरा दिया और मेरी दोनों टाँगें टूट गई। अरे प्यारे सन्तू! मेरे प्यारे सन्तू! मुझे विश्वास है कि अब मै मर जाऊँगा। परन्तु हाय! जब मैं मर जाऊँगा तब कौन तुम्हारी रक्षा करेगा। प्यारे सन्तू तुम क्या करोगे ?'

अनन्तू की यह बात सुनकर उस भले आदमी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा "मैं सदैव तुम्हारे छोटे भाई सन्तू की खबरदारी करूँगा, तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो।" अनन्तू उसकी बातों का मतलब समझ गया। अपनी आँखें खोलकर एक बार उसने उस भले आदमी की ओर देखा, मानों वह उसे हृदय से धन्यवाद दे रहा था,, और फिर उसने अपनी आँखें सदा के लिए बन्द कर लीं।

रहस्यहीना

एक दिन तीसरे पहर, मै पेरिस के एक विख्यात काफे के बाहर बैठा हुआ यहाँ के चमकीले और भड़कीले जीवन पर विचार कर रहा था, इतने मे किसी ने मेरा नाम लेकर मुझे पुकारा। मैने मुँह फेर कर देखा, सामने लॉर्ड मुरसीशन खड़ा था। हम लोगों को कॉलेज छोड़े दस वर्ष बीत गये थे और इन दस वर्षों के अरसे में, यह हमारी पहली मुलाकात थी। दोनो बड़े प्रेमोल्लास से मिले। ऑक्सफोर्ड मे हम दोनों अभिन्न मित्र थे। मैं उसे बहुत प्यार करता था। वह सुन्दर, तेजस्वी और मिलनसार था। उसने अपनी स्पष्टवादिता से हम लोगों के बीच में एक आदरणीय स्थान प्राप्त कर लिया था। और अब—अब तो मैने उसमें परिवर्तन का एक कठोर इतिहास पढा। वह बहुत दुःखित, घबराया हुआ, सन्दिग्ध-चित्त सा दीखता था। मुझे मालूम हुआ कि ईश्वर के प्रति उसका यह अश्रद्धा का भाव नहीं था, क्योंकि मैं जानता था कि वह पक्का आस्तिक पुरुष है।

आखिर मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इस बीच में कोई 'स्त्री' है।

मैने पूछा—क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?

"नहीं, मैं स्त्रियों को अब तक नही समझ सका हूँ।'

'मेरे प्यारे जेरल्ड !"—मैने कहा—"स्त्रियाँ प्यार करने के लिए बनाई गई हैं, समझने के लिए नहीं।"

उसने कहा—जहाँ मुझे विश्वास नहीं है, वहाँ मै प्रेम कैसे कर सकता हूँ ?

"जेरल्ड, तुम्हारे जीवन में कोई रहस्य है, मुझे अपना सारा हाल सुनाओ।" —मैने आग्रह किया।

"चलो, कहीं सैर की जाय"—उसने कहा—"यहाँ बहुत ज्यादा भीड़ है। देखो, वह पीली गाड़ी, नहीं, वह तो और किसी रङ्ग की है। हाँ, वह हरे रङ्ग की है।"

मैने उसकी अन्तिम बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया और कुछ देर बाद

हम लोग मैडेलीन की ओर जा रहे थे—"हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"—मैंने एकाएक पूछा।

"जहाँ कहीं भी तुम्हारी इच्छा हो" - उसने कहा—"कोई कै रेस्टराँ में चलो, वहीं हम लोग खायेंगे और अपने विषय में तुम मुझे सारी बाते बताना।"

"लेकिन, मै तो पहले तुम्हारी कहानी सुनूँगा"—मैंने कहा-- 'तुम मुझे अपना वह रहस्य बताओ।"

लॉर्ड मुरसीशन ने अपनी जेब से एक सुन्दर डिबिया निकाली और मेरे हाथ पर धर दी। मैंने उसे खोला, उसके भीतर एक स्त्री की तस्वीर थी। वह बड़ी-बड़ी चञ्चल आँखों वाली, आलुलायित-कुन्तला, मनोहर मुख वाली रमणी थी। वह रहस्यमयी की तरह दीखती थी—और फरों आवरण मे परिवेष्ठित थी।

"इस मुख पर तुम्हारी क्या धारणा है ?"—मुरसीशन ने प्रश्न किया—"क्या यह विश्वसनीय है ?"

मै बड़ी सावधानी के साथ उसकी परीक्षा करने लगा। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इस मुख पर कोई रहस्य आच्छन्न है। और वह रहस्य अच्छा है या बुरा, मैं नहीं कह सकता। उसकी सुन्दरता अनेक रहस्यों के कारण सङ्कुचित ज्ञात हो रही थी। और उसके होठों पर खेलती हुई धीमी-धीमी मुसकान मे कुटिलता की यथेष्ट मात्रा थी।

मुरसीशन ने अधीर होकर फिर पूछा—तुम्हारा क्या विचार है ?

"यह बहुत कुत्सित मालूम पड़ती है।"—मैंने उत्तर दिया—"अच्छा, इसके सम्बन्ध की सारी बातें मुझे बताओ ?"

'अभी नहीं,"—उसने कहा—"खाना खाने के बाद सारी बातें सुनाऊँगा।"

इसके बाद हम लोग दूसरी-दूसरी बाते करने लगे। भोजन के पश्चात् जब खानसामा ने हम लोगों को काफी और सिगरेट दी, तो मैंने जेरल्ड को उस औरत की कहानी कहने के लिए कहा।

वह अपनी जगह से उठा और कमरे मे तेजी से, इधर से उधर दो-तीन बार टहल कर, एक आराम-कुर्सी पर बैठ गया। मैंने भी अपनी कुर्सी उसके

आस ही खींच ली। वह कहने लगा :—

एक दिन शाम को प्रायः पाँच बजे मैं बौन्ड स्ट्रीट की ओर टहलता हुआ चला जा रहा था। गाड़ियों की बेइन्तहा भीड़ थी। रास्ता दुश्वार हो उठा था। अकस्मात् फुटपाथ के निकट एक पीली गाड़ी ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। जब मैं उस जगह से जाने लगा, तो उस गाड़ी से एक सुन्दर चेहरा बाहर झाँकता हुआ दिखाई पड़ा। उस चेहरे ने मुझे तुरन्त ही विमोहित कर लिया।

उस रात को और उसके बाद कई दिनों तक, मैं सदैव उसी चेहरे के विषय में सोचता रहा। मैं बराबर उधर जाता। प्रत्येक पीली गाड़ी को गौर से देखता। परन्तु उसे न पा सका। वह मुझे एक स्वप्न की तरह मालूम हुई, जिसका कोई अस्तित्व नहीं होता। एक हफ्ते के बाद, एक दिन मैं मैडम दी रैस्तेल के यहाँ निमन्त्रित होकर गया था। आठ बजे का न्योता था, पर साढ़े आठ बज जाने पर भी हम लोग बैठक में किसी का इन्तजार कर रहे थे। सहसा नौकर ने किवाड़ खोल दिये और लेडी आलराय के आने की सूचना दी। यह वही स्त्री थी, जिसकी मैं खोज कर रहा था। वह धीरे-धीरे, धूमिल जाली में चन्द्र-ज्योत्स्ना की तरह, भीतर आई। मुझे उसको भोजनालय में ले जाने के लिए कहा गया। मैं एक अनिर्वचनीय आनन्द से पुलकित हो उठा। जब हम लोग बैठ गये तो मैंने बिल्कुल साफ दिल से लेडी आलराय से पूछा—लेडी आलराय, कुछ दिन हुए मैंने आपको शायद बौण्ड स्ट्रीट में देखा था।

वह एकदम पीली पड़ गई और बहुत धीमे स्वर में बोली—कृपया इतने जोर से न बोलें, कोई सुन लेगा।

मैं अपने इस तरह के असङ्गत कथन से स्वयं ही लज्जित हो उठा था, अतः प्रसङ्ग बदलने के लिए मैंने फ्रेञ्च-नाटकों के विषय में बातें शुरू कर दीं। उसने बहुत थोड़ी बातें की, धीमी-धीमी एक सुरीले स्वर में मानों उसकी आवाज कोई सुन न ले। मैं एक मूर्ख की तरह आदेशित हो, उसके प्रेम में फँस गया। उसके रहस्यमय वातावरण से आन्दोलित हो, मैं औत्सुक्य की चरम सीमा पर पहुँच गया। जब वह खाने के बाद, तुरन्त ही जाने के लिए तैयार होगई तो मैंने सङ्कोचपूर्वक पूछा—क्या मैं आपके मकान पर आप से मिल सकता हूँ?

वह हिचकिचाई, और यह देख कर कि कोई हमारे पास नहीं है, बोली—हाँ, कल पौने पाँच बजे आप आ सकते हैं।

मैने मैडम रैस्तेल से लेडी आलराय का परिचय पूछा। परन्तु मैं जो कुछ जान सका, यह इतना ही था कि वह विधवा है और पार्क लेन के एक सुन्दर बङ्गले मे रहती है। उस विधवा स्त्री के प्रति अनेक तरह की धारणाएँ बनाता हुआ, मै घर को वापस आया।

[२]

दूसरे दिन ठीक समय पर पार्क लेन पहुँचा। परन्तु दरबान ने कहा— लेडी आलराय अभी अभी बाहर गई है।

मै दुःखित और निराश भाव से अपने क्लब मे चला आया। वहाँ आकर बहुत कुछ सोचने के बाद मैंने उसे एक पत्र लिखा। और अन्त में लिखा—क्या किसी दूसरी सन्ध्या को आपसे मुलाकात हो सकती है?

कई दिनो तक कोई उत्तर न आया। आखिर एक छोटा सा पत्र पाया। उसमे लिखा था—"आप रविवार को चार बजे मेरे मकान पर आइये। मै उस समय रहूँगी। कृपया फिर मुझे यहाँ के पते से पत्र न लिखें। मिलने पर, सारी बाते कहूँगी।

—लेडी आलराय"

रविवार को मैं गया। वह बहुत सुन्दर दीख रही थी। जब मै आने लगा तो वह बोली—कभी आपको कुछ लिखने को आवश्यकता हो, तो मिसेज नॉक्स, ह्वीटटेकरस लाईब्रेरी, ग्रीन स्ट्रीट के पते से लिखे। मैं अपने पत्र अपने मकान पर ही क्यों नहीं लेती हूँ, इसके कई कारण हैं।

मैने उसे बहुत बार देखा और प्रत्येक बार वह मुझे एक रहस्यमयी रमणी प्रतीत हुई। कभी-कभी मैं सोचता कि यह स्त्री किसी पुरुष के वश मे है, किन्तु वह ऐसा रहस्यमयो मालूम पड़ती थी कि उस पर मुझे विश्वास न होता था। वह एक ऐसी स्फटिक पत्थर की तरह थी, जिसे लोग अजायब-घर मे देखते हैं और जो कभी स्वच्छ रहती है कभी कुत्सित। आखिर मैंने उससे विवाह का प्रस्ताव करना निश्चित किया।

लेडी आलराय ने मेरी मुलाकातों और पत्रों पर जो सकुचित रहस्य आरोपित किया था, उससे मैं मानों एक बार ही विकम्पित हो उठा। मैंने उसे आगामी सोमवार को छ: बजे मिलने के लिए एक पत्र लिखा। वह

राज़ी हो गई और मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। मै एक बावला की तरह उसके रहस्य को जानता हुआ भी उसके प्रति भयकर रूप से आकर्षित हो गया था। लेडी आलराय के रहस्य ने मुझे एक पागल सा बना डाला था। सोचता हूँ, दैव ने क्यों उसके रहस्य को मेरे पथ मे दीवाल की तरह खड़ा कर दिया था।

"तो क्या तुमने उसके रहस्य का पता लगा लिया ?"—मैने टोका।

"तुम स्वय ही सोच सकते हो"—वह फिर कहता गया—"जब सोमवार आया, तो मैं अपने चाचा के यहाँ भोजन करने गया। मेरे चाचा रीजेन्ट पार्क मे रहते है—यह तो तुम जानते ही हो। भोजन करके मै पिका-डली जाना चाहता था, इसलिए एक गली की राह पकड़ी। मैं पतली-पतली गन्दी गलियों से जा रहा था कि सहसा लेडी आलराय चेहरे पर आवरण डाले सामने से आती हुई दिखाई पड़ी। गली के अन्तिम मकान पर पहुँच कर वह सीढियों से ऊपर चढ गई और किवाड खोल कर भीतर प्रविष्ट हुई। यही सारे रहस्यों का केन्द्र है, मैने सोचा और उस घर की ओर लपका। उस घर की मैने अच्छी तरह देख-भाल की। वह किराये का मालूम हुआ। द्वार पर लेडी आलराय का रूमाल पड़ा हुआ था। मैंने उसे उठा कर जेब मे रख लिया। उसके बाद मैं सोचने लगा कि मुझे क्या करना चाहिये। अन्त मे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी के सम्बन्ध मे जासूसी करने का मुझे क्या हक है, और क्लब को लौट आया। छः बजे मैं लेडी आलराय के यहाँ पहुँचा। वह एक सोफे पर अलसाई हुई पड़ी थी, मानों रूप-राशि बिखरी हुई थी।

"अहोभाग्य जो आप आये"—उसने कहा—"आज दिन भर यहीं रही।"

मै इस सफेद झूट पर अवाक् रह गया। मैंने अपनी जेब से रूमाल निकाल कर आगे बढा दिया और बोला—"लेडी आलराय, आपने आज तीसरे पहर इसे कमनर स्ट्रीट में गिरा दिया था।"—मैने गम्भीरता के साथ कहा।

उसने भयभीत हो मेरी ओर देखा, परन्तु उसने रूमाल लेने की कुछ भी चेष्टा न की।

"आप वहाँ क्या कर रही थीं ?" -मैने जिज्ञासा भाव से पूछा ।

"मुझसे ऐसा प्रश्न करने का आपको क्या अधिकार है ?"—उसने अपने स्वर को कुछ तीव्र बना कर कहा—"एक ऐसे मनुष्य की हैसियत से, जो आपको प्यार करता है ?"

मैंने कहा—मैं आपको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ ।

अकस्मात् उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढँक लिया और उद्दाम वेग से रो पड़ी ।

"आप मुझसे सभी बातें कहें ।"—मैंने फिर कहा ।

सहसा वह खड़ी हो गई और मेरी ओर अपलक दृष्टि से देखती हुई बोली—लॉर्ड मुरसीशन, आपसे बताने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है ।

"आप वहाँ किसी से मिलने गई थीं ?"—मैंने प्रकम्पित होकर कहा—क्या आपका यही रहस्य है ?

वह भयकर रूप से सफेद पड़ गई । उसने काँपते हुये कहा—मैं वहाँ किसी से भी मिलने नही गई थी ।

"क्या आप सच्ची बाते नहीं कह सकतीं ?"—मैंने आवेश मे आकर पूछा ।

'मैंने सच्ची बाते ही आपसे कही हैं"—वह बोली ।

इस उत्तर से मै एक बार ही पागल हो उठा । मैं नहीं जानता कि मैंने उससे क्या-क्या कहा । परन्तु जो कुछ भी कहा, वह कठोर जरूर था । मै वहाँ से जल्द ही बाहर निकल गया । दूसरे दिन लेडी आलराय ने मुझे एक पत्र लिखा, पर मैंने उसे बिना पढे ही लौटा दिया । मैं फिर नॉरवे चला गया । एक महीने के बाद वापस आया और "मॉर्निङ्ग पोस्ट" मे मैंने पहली खबर लेडी आलराय की मृत्यु की देखी । ऑपेरा मे उसे सर्दी लग गई थी । फेफड़े में रक्त जमा हो जाने के कारण पाँच रोज के बाद वह चल बसी । उस दिन मै दिन भर बाहर न निकला । मै उसे बहुत ज्यादा प्यार करता था, सचमुच बहुत ज्यादा । ओह परमेश्वर ! मैंने उस औरत को कितना प्यार किया था ।

"तो तुम कमनर स्ट्रीट वाले उस मकान मे गये थे ?"—मैंने पूछा ।

"हाँ"—उसने कहा—"एक दिन मैं कमनर स्ट्रीट गया । मै सन्देह की जड़िमा से जकड़ा हुआ था । मैंने वहाँ जाकर दरवाजे को खटखटाया ।

एक बूढ़ी औरत ने किवाड़ खोल दिये। मैंने उससे पूछा "क्या किराये के लिए कमरे खाली है ?"

"महाशय जी"—वह बोली—"ड्राइङ्ग रूम खाली पड़े हुये हैं। उसे एक स्त्री किराये पर लिये हुए थी। आज तीन महीने से वह फिर यहाँ नहीं आई है। आप उसका उपयोग कर सकते हैं।"

"क्या वह यही औरत है ?" मैंने उसे लेडी आलराय की फोटो दिखाते हुये पूछा।

"हाँ यही है' —वह बोली—"वह कब वापस आ रही है ?"

"वह तो मर गईं। '— मैंने कहा।

"ओह ! मुझे ऐसी आशा न थी।"—वह चकित होकर बोली—"वह मुझे बहुत किराया देती थीं। एक सप्ताह में तीन गिन्नियाँ देती थीं।"

"क्या वह यहाँ किसी से मिला करतीं थीं ?"—मैंने पूछा।

वह बोली—जी नहीं, वह यहाँ किसी से नहीं मिला करती थीं।

"तब वह यहाँ क्या करती थीं ?"—मैंने आवेगमयी विह्वलता से पूछा।

"वह यहाँ कभी किताबे पढ़तीं और कभी चाय पीतीं।"—उस औरत ने कहा।

मैं उसके बाद और क्या पूछता ? एक पौंड का नोट देकर लौट आया। अब तुम्हारी इस विषय में क्या राय है ? क्या वह औरत ठीक कह रही थी ?

"मै विश्वास करता हूँ।"—मैंने कहा।

"तब लेडी आलराय वहाँ क्यों जाया करती थी ?"

"मेरे दोस्त"— मैंने कहा—"लेडी आलराय को रहस्यमयी बनने की एक सनक सवार हो गई थी। वह उन कमरों को इसलिए किराये पर लिये हुए थी कि वह चेहरे पर आवरण डाल कर वहाँ जाया करे। वह रहस्यों के लिये उतावली सी थी। लेकिन सच तो यह है कि वह स्वयं ही रहस्यहीना थी।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा सोचते हो ?"—मुरसीशन ने पूछा।

"मै तो ऐसा ही सोचता हूँ।"—मैंने कहा।

उसने वह डिबिया निकाली, उसे खोला। फोटो को बड़े ग़ौर से देखा— "मुझे आश्चर्य है।"—वह अन्त मे बोला।